बौकी

बौकी

रामेश्वर प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

BAUKEE (बौकी)
A Maithili Novel by Shri Rameshwar Prasad Mandal

ISBN: 978-93-93135-56-8
दाम: 250/- (भा.रु.)
सत्त्वाधिकार: © लेखक (श्री रामेश्वर प्रसाद मण्डल)
पहिल संस्करण: 2024

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: +91 62006 35563; +91 99316 54742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। सत्त्वाधिकारी अथवा प्रकाशक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

समर्पण

जे बेकती काठक इंजीनियर बनि आजीवन
लोकक उजड़ल घर बनबैत रहलखिन आ अपना घरक चिन्ता
नइ केलैन, ‘ईऽ ईऽऽ उऽ उऽऽ, अरै पाय रै पायऽऽ’ कहएवाली बौकी आ
लाचार बेकतीकेँ स्टीलक प्लेटमे खुआ अपना सन्तानकेँ सदाचारक पाठ
सिखौलैन, ओइ महान पिता- स्व. सुन्दर लाल ‘मुंशी’क प्रति, दरबज्जापर
आएल ‘ऐऽ ऐऽऽ ऐऽऽऽ जकाँ निरर्थक ध्वनि बजैबला पागलकेँ सदाव्रत
बाँटएवाली समाज-सेवी आ हमर प्यारी सखी पदमावती देवीकेँ प्रति..
मैथिली शिल्पी आ मिथिला-विकास पुरुष पंगुक पएर, मूककेँ बोली,
मुरझाएल गाछकेँ हरियरी देबएबला आ लाचारपर अहर्निश
विचार करएबला वरेण्य साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद
मण्डलजीकेँ प्रति.. ई बौकी उपन्यास
समर्पित अछि।

- रामेश्वर प्रसाद

प्राक्कथन

श्री रामेश्वर प्रसाद मण्डलजी एकटा शिक्षाविद छैथ। हिनक मुख्य पेशा शिक्षण कार्य छैन, किएक तँ छात्र-जीवनसँ लऽ कऽ शिक्षक पदसँ सेवा निवृत्तिक पछातियो, माने अखनो धरि चटियासभकेँ पढ़ौनी बड़े मनोयोगसँ करैत रहला अछि।

रामेश्वर बाबू एकटा साहित्यिक लोक छैथ। आदरणीय श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पोथी 'पंगु' (उपन्यास) मैथिली जाहि पोथीपर श्री जगदीश बाबूकेँ वर्ष 2021क साहित्य अकादेमी मैथिली भाषाक लेल मूल पुरस्कारसँ सम्मानित कएल गेल छेलैन ताहि 'पंगु' नामक पोथीकेँ श्री रामेश्वर बाबू हिन्दी भाषामे अनुवाद करिकऽ अप्पन विद्वताक परिचय देने छैथ। संगे 'जगदीश प्रसाद मण्डल एक बायोग्राफी' नामक पोथी जेकर रचनाकार आदरणीय श्री गजेन्द्र ठाकुर छैथ, ताहू पोथीकेँ हिन्दी अनुवाद कऽ चुकल छैथ। मैथिली भाषामे 'बगवार' नामक पद्य उपन्यास केर रचना कऽ आ प्रकाशित कराए अप्पन साहित्यिक परिचय देलैथ। ऐ तरहेँ मैथिली भाषाक प्रति जे हिनक अनुराग छैन सेहो स्पष्ट भेल अछि।

'बौकी' नामक प्रस्तुत उपन्यास एकटा सामाजिक एवं नारी प्रधान उपन्यास अछि। ऐ उपन्यासक मादे रचनाकार श्री मण्डलजी समाजमे व्याप्त कुरीति, अन्धविश्वास एवं विकलांगक प्रति घृणापर करारा व्यंग्य केने छैथ। खासकए बौकी लड़कीक प्रति ने दया आ ने प्रेम आ ने कोनो सहानुभूति देखि उलटे समाजक लेल अभिशाप मानब, ऐसँ रचनाकारक

दिल छलनी भेल अछि आ तेकरे परिणाम ई 'बौकी' उपन्यास छी। कहल गेल अछि जे साहित्य समाजक दर्पण छी, तँए श्री मण्डलजी 'बौकी' उपन्यास जकाँ एकटा काज सुन्दर पोथी लिखि समाजकेँ ऐना देखेबाक प्रयास केलैन अछि।

प्रस्तुत उपन्यासमे रमेसर गुरुजी आ हुनक पत्नी पदमा देवीक उदारता एवं मनुक्खताक चित्रण अछि। केना एकटा अनाथ आ बौक लड़कीकेँ अप्पन पुतोहु बना, पढ़ा-लिखा कऽ दरोगा बनौलैन, तेकर विशद चित्रण ऐ पोथीमे अछि। बौकी जेकर माए-बापक देल नाओं 'रूपा' छल मुदा गुरुआइन पदमा देवी विद्या कुमारी जकाँ नीक नाओं देलखिन। चूकि 'बौकी' पढ़ैमे बड़ चन्सगर छेली, तँए पदमा देवी हुनकर नाओं विद्या कुमारी रखलैन।

ऐ उपन्यासमे नारी सशक्तिकरण सेहो देखौल गेल अछि। केना एकटा बौकी समाजसँ उपेक्षित भेली आ एकलव्य जकाँ संघर्ष करैत निखरैत गेली। कर्तव्यकेँ धनुष बना आ काजकेँ तीर बना निशाना साधैत रहली, जइसँ सफलताक ऊँच शिखरपर चमकए लगली आ इजोतगर होइत गेली। रचनाकार ओहिना नहि ने कहै छैथ जे ढेपासँ 'भारत-रत्न' भेली। वएह छी ऐ पोथीक नायिका 'विद्या कुमारी'।

ऐ 'बौकी' उपन्यासमे कर्तव्यनिष्ठ आ इमानदार पुलिसक भूमिकाक सेहो चित्रण अछि। पुलिस विभागमे कार्यरत सिपाहीलोकनिकेँ ई पोथी पढ़ि कऽ प्रेरणा तँ भेटबे करतैन जे एक अनमोल कृतिक भान सेहो हेतैन।

ऐ उपन्यासकेँ पढ़िते प्रत्येक पाठकक हृदयसँ एक आवाज उठतैन, मन मानि जेतैन कोनो व्यक्तिकेँ जँ माहौल देल जाए, पढ़ै-लिखैक सुविधा देल जाए तँ ओ पढ़ि-लिखि सकैए, पढ़ि-लिखिकऽ बहुत आगाँ जा सकैए।

ऐ तरहक उपन्यास लेल हम उपन्यासकार- रामेश्वर प्रसाद मण्डलजीकेँ हृदयसँ नमन करै छिऐन आ शुभकामना व्यक्त करैत आशा करै छी जे हिनक ऐगला कृति सेहो अहिना जल्दीए हमरा सबहक सोझा आबए।

- नन्द विलास राय

भपटियाही

11 मार्च 2024

सम्पर्क नं.: 9931909671

पोथीक मादे

जीवन बड़ कठिन होइत अछि आ तहूसँ कठिन जीवनक निर्माण भेल। जीवन सुख आ दुखक रौद-छाँहक खेल छी। काबिलियत ई अछि जे अहाँ केकरा बढ़बै छिऐ, रौदकेँ आकि छाँहकेँ- जइमे सुखक छाहैर आ दुखकेँ रौदसँ तुलना कएल जाइत अछि। देखै नइ छिऐ, चाँद जीव-संसारक लेल कोहिलिका सन अमृत वरसाबैए अछि तँ सुरुज जखन आगि वरसाबए लगैत अछि तँ खढ़, घास, खेतक बीआ आ धार-धुरक पानि सुखि जाइत अछि आ तैसंग जीव-जन्तुसभ सेहो तबाह भऽ जाइत अछि, तेकरे ने रौद-रौदी वा अकाल कहल जाइत अछि। ऐठाम सिर्फ रौदसँ मलब रखू, सुरुजसँ नइ, किएक तँ सुरुज ऊर्जाक स्रोत छी, प्राय: सभ जीव-जन्तुक संरक्षक आ जीवन दाता छी। दिनमे उगि सात घोड़ासँ सुसज्जित रथपर सवार भऽ कऽ भरि दिन पार्थिव प्राणीक देख-भाल करैत अछि तँए हमसभ हुनका 'दिनानाथ' कहै छिऐन।

जीवनमे उत्थान आ पतन होइत रहैत अछि। उत्थानक कियारीमे उन्नति-प्रगति आ विकासक फूल फुलाइत अछि तँ पतनक कियारीमे अवन्नति आ नाशक काँट फड़ैत अछि। अधिकांश लोकक ई सोभव होइए जे उत्थान वा उन्नतिक घड़ीमे मनोरंजन करए लगैत अछि, विश्राम करए लगैत अछि आ जीतपर जश्नमे डुमिकऽ यार-दोस्तकेँ भरि हीछ खुआबए-पीयाबए लगैत अछि, बाँकी सभ किछु बिसैर जाइत अछि, मुदा जखन दुखक घड़ी अबैत अछि तँ बिपैतमे देव-पितरक सुमिरन करए लगैत अछि, कखनो बाप-बाप सेहो करए लगैत अछि आ सोझहामे जेहो कोइ रहैत अछि तँ 'एक-दू-

तीन’ भइये टा जाइत अछि। की यएह भेल जीवन-निर्माण? नइ ने भेल। इतिहास उत्थान आ पतन कथा लऽ कऽ उपस्थित होइत अछि। गवाहक रूपमे कहैत अछि जे तराइनक प्रथम युद्ध 1191 इस्वीमे शूरवीर पृथ्वीराज चौहान आ मुहम्मद गोरीक बीच भेल रहैन जइमे गोरीक हारि भेल रहैन आ बंदी भेल रहैन, जे भारत पुन: नइ अबैक किरिया खेने छल। ऐ जीतक खुशीमे वीर यौद्धा पृथ्वीराज चौहान जश्नमे डुमि गेला आ निफिकीर बनि गेला। दोसर दिस मुहम्मद गोरी कुचलल नाग साँप जकाँ भऽ गेल रहैथ आ बदला सठबैले आगिमे जरैत रहैथ, सक्रिय भऽ कऽ सैन्य संगठनमे लागल रहैथ, तँए मजगूत होइते ऐगला साल अर्थात् 1192 इस्वीमे पुन: दिल्लीपर आक्रमण कऽ देलैन, निफिकीरसँ सुतल पृथ्वीराज चौहान जे शक्तिहीन बनल छला, गोरीसँ लऱैत हारि गेल छला आ बन्दी बनौल गेला। ऐ तरहेँ एहेन शूरवीरक सेहो पतन भऽ गेल। सन्तक अमृतवाणी अछि-

“दुख में सुमिरन सब करे
सुख में करे ने कोय
जो सुख में सुमरन करे
दुख काहे को होय।”

जीवन तँ सरिताक धारा छी आ झरनाक अविरल बहाव छी ओ जँ रूकत तँ टुटि जाएत। सदैत सक्रिय रहब जीवनक मूलमंत्र छी, तँए अप्पन कर्म ओ कर्तव्यसँ जुड़ल रहैक चाही। अंगरेजीमे कहावत अछि-

“Active is life enactive is death.”

जीवन तँ वएह ने भेल जेकर मूल्यांकन होइत अछि, नीक चर्चा होइत अछि, जेना संतक आ सदाचारीक चर्चा होइत अछि तैसंग कहब पूज्य बापूक, जे सत्य आ अहिंसाक पुजारी छला, डॉ. अम्बेदकर बाबाक, जे भारतीय संविधानक महान शिल्पी छला, माता सावित्री ज्योतिबा फूलेक, जे बालिका शिक्षाक बीजारोपण केलैथ आ प्रथम महिला शिक्षिकाक रूपमे

चर्चित भेलैथ। तहिना वैज्ञानिक, वैद्य-डॉक्टर आ वरेण्य साहित्यकार आदिक जीवनक।

गाम-समाजमे एहेन बेकती नइ होइत अछि, सेहो 'नइ' नहि कहि सकै छी, किएक तँ एहेन बेकती जँ नइ हएत तँ समाज केना चलैत रहत आ चलैत अछि।

जीवन-निर्माणमे स्वार्थक नइ नि:स्वार्थक भाव बेसी रहैत अछि। जीवन तँ 'जीव' आओर 'न' सँ बनल अछि अर्थात् निष्प्राण जीव, मरणशील, जँ ऐ बातकेँ बुझबैए तँ स्वत: गर्व आ स्वार्थक तम दूर भऽ जाएत आ प्रेम-सिनेहक इजोत बरि जाएत, जइ इजोतमे आ आभामण्डलमे अहाँ देवतुल्य जीवनक संग परिलक्षित होएब। कहू, दधीचि मुनि अप्पन हड्डी केना दान केलैथ? आ राजाजनक केना वैदेह भेला?

सती सावित्री अप्पन जीवनक निर्माण केना केने रहथिन जे अप्पन पतिक प्राण यमराजसँ घुमाकऽ आनि लौलखिन? की हम मिथिलाक बेटी माता सीताकेँ बिसैर सकै छी, जे जन-कल्याण आ प्रजा-हितक लेल बेर-बेर अग्नि परीक्षा देने छैली? ओहिना नइ ने गीत बजैए- 'प्रेमकी गंगा बहाते चलो, राह में आए जो दीन-दुखी, सबको गले से लगाते चलो'। तँए कहब जे कि-

"लिक-लिक अहूँ चलू
लिकसँ उतरे ने कोय
सिनेह-सहानुभूति लुटबैत चलू
जे आपत्तिमे होय।"

की कहब? की गाएब आ गाबि कऽ केकरा सुनाएब? के सुनत आ के देखत?

सामाजिक स्थिति आ परिवेश आइ एना भऽ गेल अछि जे हेरनेसँ, नजैर दौड़ेनेसँ, आँखि नोरा जाइत अछि। केतबो वरेण्य साहित्यकार

आदरणीय जगदीश प्रसाद मण्डलजी सन लोक कहता आ लिखता जे जीवन-निर्माण करू, आदर्श समाज-निर्माण करू, इंसानियतक फुलवारी लगाउ, मानवताक आमक गाछी लगाउ जे मीठगर फल देत। यएह जीवन-निर्माणक कड़ी छी तँ कि हुनकर बात केतेक लोक बुझता-मानता आ करता?

समाजमे जखन शिक्षा-संस्कार नइ रहत तँ दूधकेँ अमृत मानत ने मानत, मुदा दारू-शराब जकाँ जहरीला पेय पदार्थेकेँ अमृत मानिये लेत। हमरा गाममे मध्य विद्यालय नइ अछि जइक लेल ओहिना नइ ने लड़ैत रहल छी? किएक तँ शिक्षा भाषकर छी।

समाजसँ जेना सहानुभूति आ मदैतिक शब्द अथवा शिष्टाचारे लुप्त भऽ गेल अछि। ईहो सुनने रही जे एकटा सियान जुवतीकेँ टिकटक लोभ दऽ कऽ एगो मंत्री लऽ कऽ भागि गेल। समाज बोतल-कचरासँ भरल अछि, लोहा जकाँ जंग लागि गेल अछि, केना साफ आ स्वच्छ होएत? हम तँ दूर भागि रहल छी आ जन्मभूमिकेँ बिसैर रहल छी, केना कहल गेल छै- 'जननी जन्मभूमि स्वार्गादपि गरीयसि..'। तखन जीवन-निर्माण बेइमानीए ने होएत।

जेतए सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आ शैक्षनिक स्थिति सही नइ अछि आ तैपर सँ लूट, अपहरण, बलात्कार, डकैती, गुण्डागर्दी आ जुलुमक बाजार गर्म सेहो अछि- 'दिलमे दर्द नइ आँखिमे शर्म नइ' छुआछूत पहिनौं रहए आ अखनो अछिए। की भेद-भाव मेटा गेल? ऐ बौकी उपन्यासक एगो पात्र विनाश पण्डित अछि जे अप्पन बौकी भगिनीयेकेँ रेलवे टिशनपर छोड़ि परा गेल। सम्बन्धोमे दरार तँए दरकल समाज। 'दिन बनल अछि जालीम आ राति बनल अछि कातिलाना हाय रे जमाना'।

ऊपर वर्णित तथ्यक आधारपर सामाजिक चेतना आ बैक्तीक जागृति लेल ई 'बौकी' उपन्यास हमर एगो छोट-छीन प्रयास अछि। ऐ पोथीक माध्यमसँ समाजमे उपेक्षित आ शोषित एकटा 'बौकी'क चरित्रकेँ

जीवन्त कएल गेल अछि। समाज 'बौकी' जकाँ इंसानकेँ केना अभिशाप बुझि ओकरा वहिष्कार करैत अछि, आ हैवान-दरिन्दाक आगाँ नोचैले फेक दैत अछि। समाजक दूरंगी नीति फिदरत छी- लड़का-लड़कीमे भेद करब। बेटाक जन्मपर ढोल-पिपही आ बेटीक जन्मपर आँखि किरकिरी, तँए भ्रूण-हत्याक पाप करत..!

परमप्रिय पाठकगण, ई विचारणीय प्रश्न अछि, जखन नीक-नीक समांग लड़कीक संग एहेन दुर्बेवहार होइत अछि तँ बौकी बेटीक संग अर्थात् बौक, विकलांग, मूक, बहीर लड़कीक संग केहेन हएत, सोचि सकै छी। ओ बौकी की-की जुलुम सहल..।

दोसर दिस अनाथनी बनल बौकीक साहसिक डेगक चित्रण सेहो अछि। अपनाकेँ सावित केनाइ एगो बौकीमे निहित इंसान आ काविलियतकेँ सबहक सोझामे लौनाइ जइसँ ओ बौकी अर्श-सँ-फर्शपर गेली आ भारत-रत्न बनली, आदि-आदि ऐ 'बौकी' उपन्यासमे पढ़ब।

हाय रे निस्सहाय बौकी, लाचर बेटी। एकबेर घोघरहीहा रोडपर पाँचटा लड़का एगो जुआन बौकीकेँ घेरने रहए, बड़ रौद रहइ, रोड बीरान रहइ, हमहूँ काजसँ धड़फराएल ओही बाटे अबैत रही, हमरा देखि लड़कासभ भागि गेल, हम ओइ बौकीकेँ झाँपि अप्पन एगो मित्र लग अनलौं आ हुनका सोंपि कहलयैन- 'ऐ बौकीपर अब्बस धियान देबै, किएक तँ ईहो समाजक अंग छी'। वहए दिलक पौधा पल्लवित-पुष्पित होइत-होइत आइ पुस्तक रूपमे अर्थात् 'बौकी उपन्यास'क फूल बनल अछि।

'बौकी' उपन्यास रूपी भावनाक फूल बनल, जे हम श्रीमान् सभकेँ समर्पित करैत सुखद आनन्दक एहसास करैत छी। आशान्वित छी जे अहाँ श्रीमानलोकनि ऐ 'बौकी' उपन्यासकेँ पढ़ि मार्मिक तथ्यकेँ अबस्स खोजब आ समाजिक परिवेशकेँ मजगूती प्रदान करब। ऐ लेल बौकी उपन्यासक नायिका विद्या कुमारी जकाँ जीबठगर बनि समाजक आ देशक सेवामे

लगल रहब, अप्पन छविदार सुरतिदार आ मूल्यवान जीवन-निर्माण दिस अग्रसर रहब, एना नइ जे कि एगो परिवार एहेन छल जे अपना धिया-पुता दिस यानी ओकर भविष्य दिस धियान नहि दैत छल, ने शिक्षापर आ ने पढ़ाइपर, जखन कि ओकर धिया-पुता पढ़ए-लिखए चाहैत रहइ। ओकर एगो बेटा कहुना-कहुनाकऽ मैट्रिक पास केल आ परिवार दिससँ सपोर्ट नइ भेटलासँ घरसँ भागिकऽ प्राइवेट ट्यूशन करिकऽ बी.एस-सी. केलक। तेकर वावजूदो माए-बाबूक सपोर्ट नइ भेटल, जेना हुनकर बेटे ने होइन। सौतेला बाप आ सौतेली माए जकाँ बेवहार करै छला। बेटाकेँ कहै छेलखिन जे कोदारि ले, खुरपी ले, हर ले आ खेत जोत, मुदा ओ शिक्षित बेटा बुझैए जे कि ई काज नइ हमरा दिमागपर हथौड़ीक चोट छी, तँए बेटा घर त्यागि देलक आ बाहरमे ट्यूशन पढ़ाकऽ एम.एस-सी. केलक। बेटाक नाम तेज नारायण रहै, मुदा लोक ओकरा तेजू कहैत। बेटा नामक अनुकूल बड़ तेज सेहो रहए, प्रतिभासम्पन्न रहए आ प्रतियोगिता परीक्षामे भाग लैत रहल। आजुक तिथिमे ओ +2 हाइस्कूलक शिक्षक भेल छैथ आ कहै छैथ जे कि जे परिवार यानी माए-बाबू हमरा नइ पढ़ौलखिन, हुनकासँ हमरा की सरोकार? आब कहू ई केहेन जीवन-निर्माण भेल, जेतए बेटा माए-बाबू लग नइ गेल?

ऐ 'बौकी' उपन्यासक पात्र आ घटना काल्पनिक छीहे, परंच यथार्थता बहुत लगमे अछि।

हमरा सदैत अहाँलोकनिसँ नैसर्गिक आसिरवाद भेटैत रहल हेन। 'पंगु' उपन्यास, हिन्दी अनूदित, 'जगदीश प्रसाद मण्डल एक जीवनी' हिन्दी अनूदित 'बगवार' पद्य उपन्यास आदि रचना लेल। अहाँ सदिखन हमर मनोबल बढ़ा हमरा लेखनीकेँ बल प्रदान करैत रहलौं, तँए ऐ 'बौकी' उपन्यासोक लेल तहिना हमरा प्यार आ आसिरवाद भेटत, पूर्ण विश्वास अछि, अपेक्षा करै छी। हम सभकेँ सादर नमन करै छी।

एतेक लिखलौं हेन, वर्ण, वर्त्तनी, वाच्य, वाक्य, भाषा आ भावक

संसारमे दौड़ लगेलौं हेन, गलती होएब तँ सोभाविके अछि। ईहो कहले जाइत अछि जे कियो बेकती पूर्ण नइ होइ छैथ, तँए याचना अछि जे कि गलती दिस धियान नहि दऽ कऽ हमरा क्षमा करब।

'बौकी' जकाँ निरीह आ अनाथनीकेँ बोली दइमे अहाँसभ रचनाकार आ साहित्यकारक अहम भूमिका रहल अछि। ऐ सूचीमे हम आदरसँ वरेण्य साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक, पसिद्ध रचनाकार श्री नन्द विलास रायजीक, साहित्यकारक हिमायती आ लेखक डॉ. उमेश मण्डलजीक, पल्लवी प्रकाशन, निर्मलीक समस्त परिवारक, पूर्व प्राचार्य डॉ. राम अशीष सिंह जीक, चर्चित समीक्षक लालदेव कामतजीक, पसिद्ध रचनाकार आ कवि राम विलास साहुजीक, युवा कवयित्री सुश्री पल्लवी मण्डलजीक नाम लेब आवश्यक बुझै छी। पुनश्च सभ लोकनिकेँ हृदयसँ नमन।

धन्यवाद।

सादर...

रामेश्वर प्रसाद मण्डल

निर्मली

10 मार्च 2024

सम्पर्क: +91 99735 41877

बौकी

1.

गंगपुर थानाक विशाल प्रांगणमे आमजनक भीड़ लगल छेलै, कारण ई छेलै जे कि इलाकाक सभसँ खतरनाक बिरखा गैंगक शातीर मास्टर धन्नूकेँ 'बौकी ऑपरेशन' द्वारा पकैड़ कऽ गंगपुर थानामे लौने रहइ। ओना तँ पाँच थानाक ई सम्मिलित ऑपरेशन रहै परंच बेसी भूमिका एस.पी. तेजस्वी साहबक, डी.एस.पी. विद्या कुमारी आ इन्स्पेक्टर आरती कुमारीक रहैन। ओहोमे सभसँ जिबठगर आ अप्पन जानक परवाह नै करैवाली वीर अर्जुन जकाँ चिड़ैक सिर्फ आँखिक पुतली सदृश अप्पन केवल टारगेट देखएवाली, अथवा अप्पन ऑपरेशन देखएवाली डी.एस.पी. विद्या कुमारीक रहैन, जिनका बाँहिमे गोली लगल रहैन, मुदा पाछू नइ हटली आ वीर अभिमन्यु जकाँ डकैतक चक्रव्यूहमे घुसि गैंगकेँ अधिकांश डकैत आ ओकर चक्रव्यूहकेँ तहस-नहँस केलैन। कमला पुलपर खसल सरदार छड़पटाइत रहए। पछाइत एस.पी. साहेब, इन्स्पेक्टर आरती कुमारी आ अन्य दरोगाक सहयोगसँ गैंगक सरदारकेँ पकड़ैमे कामयावी हाँसिल केलैन। डी.एस.पी. विद्या कुमारी घायल रहैथ, तँए हुनका एम्बुलेंससँ इलाजक लेल लऽ जाइत रहैन। एम्बुलेंसक पाछूसँ नारा लगैत रहए- 'डी.एस.पी. विद्या कुमारी की जय', 'बौकी ऑपरेशन जिन्दावाद'।

भीड़क किछु पीड़ित बेकती जे बिरखा गैंगक भुक्त भोगी छल आ ओकर जुल्मक कथा सुनैत आबि रहल छल, ओ सभ आइ बड़ खुश छल आ सुक्रिया मनबैत छल जे कि आतंक फैलाबैबला शेर आइ पिजड़ामे बन्न भऽ गेल। इलाकामे अमन-चैन फेर बहाल हएत,

मुदा ई असम्भव काज जेकरासँ सम्भव भेल तेकरो तँ चर्चा हेबाक चाही ने आकि नै हेबाक चाही? तँए भीड़क लोक सांचक पता लगौलैन तँ विद्या कुमारीक असली चेहरा आ हुनकर अद्भुत कारनामा सोझहामे आएल। आब विद्या कुमारी, डी.एस.पी.क जीवनीपर लोकक धियान गेल जे सोभाविके छल। ❑

2.

मदना गाममे एकटा कुम्हार परिवारमे एकटा सुन्नर कन्या जन्म लेलक। रूप लावण्यसँ जेना चानक टुकड़ी होइ, तेहने मुखड़ासँ इजोत झलकैत रहइ। भान होइ छल ई जे चान अप्पन चाँदनीकेँ धरतीपर पठा देलैन अछि। एहेन रूपवती बेटी पाबि कुम्हार सपरिवार खुशीसँ झूमि उठला। ओइ कुम्हार दम्पतिक ई पहिल सन्तान रहैन तँए किछु उत्सव मनबैक विचार रहैन जे दुनू परानी मिलि सोचैत रहैथ मुदा समाजक रीति-रिवाजक अनुसार बेटीक जन्मपर कोनो उत्साह आ उत्सव मनबैक सख्त मना रहइ। तेकर वावजूदो उत्सव शुरू कऽ देलैन आकि गामक मैनजन आबि रोकि देलैन आ कहलकैन-

“रौ सोमना, बुड़िलेल, तोरा ई नइ बुझल छौ जे कि बेटेटाक जनमपर बधैया बजैत अछि आ बेटीक जनमपर माथपर हाथ राखल जाइत अछि। शान्त रह। गामक जे कोइ ई गलती करत, तेकरा सौंसे गामकेँ खुआबए पड़तै, दोसर कोनो नै विकल्प छै।”

सोमन पण्डित बाजल- “यौ मालिक, हमरा बड़ कठिनसँ आ

देवता-धरमसँ ई बेटी भेल हेन। तँए सभ सजा हम भोगैले तैयार छी, मुदा बधैया बाजए दियौ।”

मैनजन बजला- “बेस, बड़बढ़िया। नतिकऽ गौंआँ-घरूआकेँ खुआ देही।”

ई निर्णय सुनि सोमन पण्डित बड़ खुश भेला। पुन: बाजा बाजए लगल। दौड़-धूप सेहो बढ़ि गेल। किएक तँ खेनाइ आ खुऔनाइक जे बात रहइ।

मैनजन तँ मानि गेलखिन मुदा समाजोक तँ बात रहइ। समाजमे ई धारणा रहै जे कि बेटीक जन्म समाजक लेल अभिशाप छी आ बेटाक जन्म समाज लेल वरदान। तँए बेटीक जन्मपर बाप-माए अप्पन माथ ठोकि लइ छल- “ठाँइऽऽ”

सोमन पण्डित ई सुविधा पाबि गौंआँ-घरूआकेँ खूब खुऔलैन। मुदा ई विचारणीय प्रश्न अछि जे कि बेटी आकि धिया गुलाबक पंखुड़ी जकाँ कोमल आ सुमन जकाँ सुवासित होइत अछि आ कोइली जकाँ मधुर वयनी होइत अछि, जेना कि माए सरस्वतीक हाथक वीणासँ आ गीतासँ बुझि पड़ैत अछि जे लड़की लड़कासँ बेसी तेजस्वी होइत अछि, बेटीमे धनक देवी लक्ष्मीक बास सेहो आ शक्तिक देवी दुर्गोजीक बास रहैत छैन, तँए कहब जे नारीक तिरस्कार नै हेबाक चाही। आर तँ आर सृष्टिक आधार रूपमे की नारीक महत्वकेँ हम नकारि सकै छी? जँ नारी नइ तँ नरक अस्तित्व केना? तँए कहब जे बेटीकेँ अभिशाप बुझि भ्रूणहत्या करब, बेटीक अपमान करब तँ सृष्टिये ने समाप्त हएत। आजुक नारीकेँ देखै छी जे हर क्षेत्रमे अपन प्रतिभाक खुट्टा गाड़ने छैथ आ देशक सेवामे लगल छैथ। शास्त्रोमे कहल गेल अछि- ‘यत्र नारीऽस्तु पूजन्ते रमन्ते तत्र देवता’। तँए कहब आवश्यक अछि जे नारीकेँ आदर करी, मान-सम्मान दी, नारीक मनकेँ कखनो नहि दुखाबी आ ने हुनका संग

अभद्र बेवहार करी। देवीक समान पवित्र-पावन राखी।

समय ऊपर चढ़ैत गेल आ मास-बरख बितैत गेल, तहिना ओ लड़की, अर्थात् सोमन कुम्हारक बेटी दुतियाक चान जकाँ बढ़ैत गेली आ नमहर भेली। जेना-जेना बढ़ैत गेली आ नमहर होइत गेली हुनकर रूप सेहो इजोतगर होइत गेलैन। जहिना कलीसँ सुमन बहराइत अछि, तहिना। संयोग देखियौ, ओइ लड़कीक सभ किछु तँ बढ़ैत गेल मुदा बोली नइ बढ़ल, मतलब बोली साफ आ स्पष्ट नै भेलै। जेहेन सुन्दर छल तेहेन बोली सुन्दर नइ भेलैन, बोली लटपटाइत रहैन। घर-अँगना आ समाजोक लोक ओइ लड़कीकेँ बजबै तँ 'ईऽऽ ईऽऽ ईऽऽ' छोड़ि किछु शब्द नै बाजि पबइ छल। आब लिअ मर्द-औरत ओकरा 'बौकी' कहए लगल। बौकी नाम सुनि माइयो-बाबू अकच्छ भऽ दुखित रहए लगला। किएक तँ जे कियो हुनका आँगन आबैथ तँ ओइ बुच्चीकेँ बौकीए कहथिन। "गइ बौकी।"

ऐ तरहेँ भरि दिनमे हजारो बेर 'बौकी'क प्रतिध्वनि दुनू परानी सोमनक कानमे अबइ। सोमन दुनू परानी अपमानक घूँट पीब बर्दाश्त करैथ। जखन कि बच्चियाक नाओं 'रूपा' राखल गेल छल, जे सुन्दरताक प्रतीक अछि। समाजमे काबिलो लोक रहै छैथ जे बोल-भरोस दऽ कऽ काज करै छैथ आ सहानुभूतिक राहपर अपनो चलै छैथ आ दोसरोकेँ चलैमे सहयोग करै छैथ। ओहन लोक सभ दुनू परानीकेँ समझाबै-बुझाबै जे कि उमेर बढ़लासँ बोलियो बदैल जेतइ आ सभ किछु नीक भऽ जेतै, ऐ लेल घबड़ाइक कोनो बात नइ हेबाक चाही।

माए-बाबूक ई अरमान रहैन जे कि हमर रूपो आगू चलि रानीसँ कोनो कम ख्यातिवाली नै रहती, तँए दुनू परानी रानीए जकाँ

प्रेम करैत रहलखिन मुदा लोक सभ रूपाकेँ 'बौकी गे' 'हे गइ बौकी' कहैन। ओना, ओइमे लोक सभक कोनो दोख नै रहै, किएक तँ जे ठीकसँ शब्द नै बाजि पबैत अछि, बोलक उच्चारण नै कऽ पबैत अछि, जेकर बोली नै फुटै छै, तेकरे ने लोक 'बौका-बौकी' कहैए। ऐठाम हम एगो आर बात कहए चाहै छी, जँ कोनो समाज आ सामाजिक प्राणी हत्या, बलात्कार अपहरण अथवा जुलुम होइत देखि किछु नहि बजैत अछि, मुँह बन्न कऽ गुंगा बनि जाइत अछि, तेकरा की कहब? आब कहू के 'बौका' आ के बौकी?

ओइ कुम्हारक बेटी 'रूपा' बढ़िकऽ आठ-नअ बर्खक भेली, मुदा तैयो बोली नहि फुटलै, घर-अँगनाक लोक अथवा माए-बाबू बोलीक इंतजार करैत रहलखिन। समयक चिड़ै फुर्र-फुर्र उड़ैत बढ़ि गेल, आब लड़की ढेरबा सेहो भऽ गेल छल, देहमे निखार आबि गेल रहइ। मनोविज्ञानक भाषामे वय:सन्धि अवस्थामे आबि गेल रहइ। वय:सन्धि अवस्था जीवनक अवस्थाक एहेन अवस्था छी जइमे लड़का आ लड़कीक अंगमे वृद्धिक संग-संग सन्धि सेहो होइत अछि, जेना लड़काक चेहरापर मोछक पम्ह, बोलीमे भारीपन गुप्तांगपर बालकेँ उगनाइ आदि तहिना लड़कीक छातीमे उभार, कण्ठक आवाज सुरिली भेनाइ, जननांगपर बाल उगब आदि लक्षण परिलक्षित होइत अछि। ई नअ बर्खक आयुसँ चौदह बर्खक अवस्था मानल जाइत अछि। ई एहेन अवस्था छी जे बाल्यावस्थासँ किशोरावस्थाकेँ जोड़ैत अछि अथवा किशोरावस्थामे पहुँचैक पहिचान छी। ई मनोवैज्ञानिकक कहब अछि। तँए रूपा आर रूपवती लागि रहल छल। रूपाक बाबू एगो लाल दुपट्टा लाबि देने रहैन जइमे ओ अप्पन उभारकेँ आ देहकेँ झाँपने रहै छल, किएक तँ आब लाज ओकरा देहपर राज करए लागल रहइ। वय:सन्धियो आबि गेल आ उभारो आबि गेल, मुदा बोली नइ आएल। माए-बाबू

निराश आ उदास रहै छेलैथ तइ बीच ओकर मामा आब गेलैन। अपना मामाक पानि आनिकऽ बौकीए देलैन, किएक तँ बौकी आब बहुत किछु बुझह लागल रहए। मामा अप्पन भगिनीकेँ देखिकऽ आ ओकर रूप-लावण्यकेँ निहारिकऽ बहुत बेसी हरखित भेला, किएक तँ देह खूब इजोतगर आ झलकैत रहै रूपाक। मामाकेँ पहिनेसँ भगिनीक सुन्दर रूपक बात बुझल रहैन तँए पुछलखिन-

"तोहर नाम रूपा छियौ?"

ई सुनि रूपा जवाब दइक लेल मुँह खोलए चाहैत छल, मुदा बोली आ कोनो शब्द नहि निकलै, तँए सिर डोलाकऽ इशारा केलैन-

"हँऽऽ, हँऽऽ।"

मामा बुझलैन जे कि बुच्ची भरिसक लजाइत हएत, किएक तँ ऐ उमेरमे लाज भेनाइ नारी-स्वभाव छी। मामा आँगनमे बौकीकेँ छोड़ि केकरो नहि देखलैन, तँए फेर पुछलखिन-

"बड़बढ़ियाँ, माए-बाबू केतए गेल छौ?"

अशिक्षित गाम रहै मदना आ ओइठामक लड़का-लड़की असंस्कारी आ अनपढ़, मुदा रूपा सभ किछु बुझैत छल। जवाब दइक लेल कहुना कऽ मुहसँ 'ईऽऽ, ईऽऽ, उऽऽ, उऽऽऽ।' निकाललक आ हाथक इशारासँ कहलक जे माए-बाबू बाहर गेल छैथ, आकि तखनहि सोमन पण्डित आबि गेला आ रूपा लजाकऽ घर चलि गेल। आब सार आ बहनोइक बीच गप-सप्प हुअ लगल आ बौकीक माए अपना भैयाकेँ गोड़ लागि हुनकासँ आशीर्वाद लैत भनसा करए चलि गेली। गप-सप्पक क्रममे बौकियोक चर्चा चलए लगल। सोमन पण्डित उदास होइत बजला-

"यौ भाय साहैब, की कहब, धिया-पुता आ बेटा-बेटीक लेल की-की नै केलौं। देव-पितर, घरक गोसाँइ, पूजा-पाठ, तिरथ-धाम

आ ओझा-गुणी, गहबर-धामि की नै केलौं आ केतए नै गेलौं। एतबे नहि, जे-जे लोक कहलक से-से नियमे-निष्ठे केलौं। कोइ इहो कहलैन जे कि बारह मासक एक बरख होइत अछि, तँ हर मास बारह किलो मुंगबा लड्डू अपना घरक गोसाँइकेँ आ बरहम बाबाक स्थानमे चढ़बैत रहु तँ बरखक बाद बेटा हएत। यौ भाय साहेब, की कहब, हम दुनू परानी सभ किछु छोड़ि सेहो केलौं, मुदा अंकुरो नै भेल, लोकेक उपदेशपर अहाँ-बहिनक संग तीरथ-धाम गेलौं, की-की नै सहलौं, मन्दिरक पुजारियो कहलैन त्रिमूर्ति बेटा हएत, सभपर विश्वास केलौं मुदा ओतेक केलाक बादो आ सहलाक बादो एगो बेटी भेल आ सेहो बौकी अछि।”

ई सुनि सोमन पण्डितक सार झट-दे बाजि उठल-

“ले बलैया, मेहमानजी तखन अतेक केलाक पछातियो फल मधुरगर नै खट्टे भेटल, तहन लोक खर्च करिकऽ किए तीरथ-धाम करत आ जानपर खेलत। खर्च तँ बेसी भेल हएत की नहि।”

सोमन पण्डित दिल थामिकऽ बाजल-

“भाय साहैब, खर्चकेँ मारू गोली। यौ शारीरिक जे कष्ट भेल तेकर कोनो इत्ते नहि। तीरथक रस्तामे की ईंट, की पाथर आ की सूइया जकाँ चुभैबला काँट आर एतबे नहि, खूनकेँ जमबैबला बर्फ, चमड़ीकेँ जरबैबला रौद आ की देहकेँ पिघलाबैबला ओला वृष्टि आ कखनो गाछकेँ उखाड़ि फेकैबला बसात, सभक सामना करऽ पड़ै छल, कहुना-कहुना प्राण बचा कऽ छी।”

ई शूलदायक बिपैत सुनि सार पुन: बाजि उठल-

“यौ मेहमान, हम तँ केतेक सालसँ प्रदेशमे छेलौं, हम रहितौं तँ एना नै करए दइतौं। हमर बहिन तँ आरो दुख भोगने हएत। किएक तँ एकरा सभ भाए-बहिनक कोरा-काँख भेटल छै। सभसँ छोट ने

अछि।”

सोमन पण्डित बजला- “हम की कहब भाय साहैब, कहलौं तँ ठीके मुदा धिया-पुता आ बेटाक लेल चिरस्मरणीय कष्ट उठौलखिन। एक बेर तँ रस्तामे हिनका पैरमे नुकीला शीशा गरि गेलैन आ ई धाँइ-दे धरतीपर खसि पड़ली आ थालमे हिनकर तीरथक साड़ी अथवा पियरका साड़ी सनहा गेल रहैन, हम दौड़कऽ लगमे एलौं आ ओइ शीशाकेँ घीचि लेलौं। शीशा घीचिते तेना ने लेहू बहए लगलै जे हमर दिमाग बुझू चकरा गेल। मुदा अहाँक बहिन साड़ीक खूंट फाड़ि ओकरासँ पैरकेँ बान्हि बहैत खूनकेँ रोकलैन, ओइठामक थालो आ पानियोँ खूनसँ लाल भऽ गेल रहइ। एतबे नइ, हम जे हिनका सम्हारिकऽ उठेलौं तँ हमरो तीरथक धोती थालसँ सन्हाए गेल आ अपवित्र भऽ गेल। आब की कहब..।”

बहिन-बहनोइक ई बितलाहा दुखनामा सुनि सारकेँ रहल नइ गेल आ मजाकमे बाजल- “अहाँ तँ बड़ अशुभ छी, तँए अशुभ होइत गेल, मुदा एना जखन भेल तखन कियो मदैतगार नइ भेला की?”

सोमन पण्डित सारक मजाक दिस धियान नै दैत बजला- “यौ भाइ साहेब, की कहू! तीरथक रस्तामे के केकरा देखैए जे हमरा दुनू गोरेकेँ देखैत। जे देखैत से हँसिकऽ आगू बढ़ि जाइत छल। नहाइक जोगार नै भेटि रहल छल, किए तँ ओइ रस्तामे कोनो जलस्रोत्र नइ छेलै, ने पोखैर, ने इनार आ ने नदी आकि कोनो झीले रहइ। हम दुनू गोरे लाजसँ कठौत भेल रही। अहाँक बहिन तँ आगू नइ जाइक बात सेहो कहली, रूकियो जाइ छेली। मुदा पति-पत्निक नोक-झोंकमे बढ़ैत रहलौं। चलैत-चलैत आगू एगो डबरा भेटल।”

ई सुनि सार पुन: रूकि हँसी केलैन- “यौ मेहमान, ओ डबरा रहए आकि गूँह डबरा?”

सोमन पण्डित- “सुनू ने सही, औगुताउ जुनि, सुनैत रहू। ओइ डबरामे पानि देखि मन खुश भेल आ दुनू परानी नहा लेलौं। देह तँ धुआ गेल, कपड़ो धुआ गेल, मुदा मन नइ धुआएल। किएक तँ ओइ डबरामे पाँच-सातटा सुगर आ ओकर बच्चा सेहो डुमकुनियाँ दैत रहइ।”

आब सारकेँ रहल नै गेल आ झट-दे गुनगुनाएल-

“आँइ यौ दुल्हाजी, केहेन अहाँक तीरथ-धाम यौ, देहसँ निकलल घाम यौ, की हम देब इनाम यौ।”

सोमन पण्डित ई सुनि द्रवित भऽ गेला। तैबीच खाना लऽ पत्नी बजली- “दुनू गोरे खेनाइ खा लिअ।”

खेनाइ शुरू होइते अतीतक कड़ी टुटि गेल। पछाइत सार बजला- “यौ दुल्हाजी, हम सभ बात बुझि गेलौं। अहाँ सबहक बेथा-कथा आ परेशानी सभ समैझ लेलौं।”

अप्पन सारक सहानुभूति सन बात सुनि सोमन पण्डित बजला- “यौ भाय साहैब, ई सभ करैत हमरापर कर्जाक बेसी भार पड़ि गेल अछि।”

बजैत-बजैत सोमन पण्डितक आँखि डबडबा गेल। सोमन पण्डितक सार बड़ बिखाह लोक, ओकरामे मनुक्खता तँ लेसो मात्र नै रहइ, झूठक खेती केनाइ ओकर सोभावमे अछि। ओकर नाओं जे हुअ परंच लोक ओकरा विनाश पण्डित कहै छैन- “यौ विनाश पण्डित।”

आब ओ विनाश पण्डित ओइ रूपाकेँ भगबैक आ हटबैक विचार करए लगला। अप्पन गोटी सुतरैत देखि सहानुभूतिक स्वांग रचैत बाजि उठल- “दुल्हाजी, किए कनै छी। ऐ बौकीकेँ आब हम राखब आ पालब-पोसब करब। अहाँ सभ तँ दुख उठेबे केलौं, आब

हमरो उठाबए दिअ। मदैदगार बनए दिअ। ऐ सेँ अहाँ सभक बोझ हल्लुको भऽ जाएत। सभ किछु हमरापर छोड़ि दियौ।”

मामा तँ माहिल होइते अछि। बिहाने भन्ने मामा फुसला कऽ ओइ बौकीकेँ लऽ कऽ अपना घर दिस विदा भेला।

दुनू परानी बौकीकेँ जाइत देखि नोर बहौलक। रस्तामे माहिल मामा एगो जुइत सोचलैन। ओकरा बौकीसँ पिण्ड छोड़बैक जे रहै, बोली आ बेवहार तेतरि फड़ जकाँ रहै, तेतरि जे खट्टमधुर होइत अछि आ गाछमे लटकल रहैत अछि- नाम-नाम फड़। धिया-पुता तेतरि नै पसिन करैत अछि। विनाश पण्डित स्टेशन जा कऽ रेलगाड़ी पकैड़ लेलक। बौकी ट्रेनमे बैसिते ‘ईऽ ईऽऽ उऽ उऽऽ‘ करैत इशारा करैत रहए, जेकर मतलब ई रहै जे की यौ मामा हमरा केतए लऽ जाइ छी।

माहिल मामा माहिर बनि बौकीकेँ बुझौलैन- “हम तोरा अपना घर लऽ जाइ छियौ बुच्ची। तोहर मामी तोरा बजेलकौ हेन, चल किछु दिन ममहरमे रहिहेँ। नीक लगतौ।”

बौकी बुझि गेल कि ममहर मामा संग जाइ छी। ट्रेन आगू बढ़ैत गेल, रफ्तारो तेज भेलै, जेना साँइऽ-साँइऽऽ हवासँ बात करैत ट्रेन जाइत एगो टिशनपर अबैसँ पहिने सीटी छोड़लक- “कूऽ कूऽऽ कूऽऽऽ।” आ टिशनपर रूकि गेल- ‘धक्कऽऽ‘। ट्रेनकेँ रूकिते यात्री आगू दिस झुकि गेल। किएक तँ न्यूटन वैज्ञानिकक गति नियम आ जड़त्व नियमसँ एना होइते अछि तँए बौकी आगू दिस झूकि गेली। स्टेशनक नाम कमाख्या रेलवे जंक्शन छल। टिशनक नेम प्लेट पढ़ि विनाश पण्डित बड़ खुश भेला, किए तँ असम जकाँ जंगली इलाकामे आबि गेल रहैथ। हुनका मनमे दू रंगक बात चलि रहल छेलैन। पहिल ई जे कि ऐठाम बौकीकेँ छोड़ि देलासँ जंगली जानवर

मारि देतै अथवा खा लेतै आ दोसर ई जे टिशनक समीपमे कामाख्या देवीक मन्दिर अछि जेतए पूजा करैले देशी-विदेशी लोक सभ अबैत अछि, कियो उठाकऽ बौकीकेँ लऽ जाएत। ओना तँ सुन्दर आ देखनुक अछिए। कामक एहेन वातावरणमे आबि कोनो लड़का बिआह करैक नियतसँ बौकीकेँ उठा कऽ लऽ जाएत अथवा बौकी खूद कामाख्या देवीक मन्दिरपर चलि जाएत। तँए माहिल मामा बेग आ समान लऽ कऽ टिशनपर उतैर गेला आ बौकीकेँ सेहो उतारि लेलैन। मामा बौकीसँ कहलैन- "गइ बुच्ची, ऐठाम कनीकाल आराम कऽ लइ छी, लगेमे गाम अछि।"

बौकी बड़ सुशील आ सीधा सोभावक, तँए माहिल मामाक टेँढ़का चालि नै बुझैत रहए। मामा माहिल बौकीकेँ पुरी-जिलेबी आनि दैत बजला- "बुच्ची, अहाँ ई पुरी-जिलेबी खाउ आ हम टेक्सी लऽ कऽ अबै छी, हे केतउ नै जाएब। टेक्सीसँ हम अहाँकेँ गाम लऽ जाएब तँए सुविधा हएत।"

बौकी अप्पन मामाक ई बात सुनि बड़ खुश भेली आ सिर हिलाकऽ 'हँ, हँ', केलीह, मुदा मामाक गलत विचार आ नीतिकेँ बुझि नइ सकली। नतीजा ई भेलै जे कि मामा टेक्सीक बहन्ना बना कऽ छूमंतर भऽ गेला आ बौकीकेँ टिशनपर छोड़ि देलैन। यौ बुद्धिजीवी आ सज्जनवृन्द, अहूँ सभ विचारि सकै छी, की विनाश पण्डित मामा ई नीक काज केलैन? भगिनीकेँ जे लावारिस बना देलखिन। बिकाउ जे बना देलखिन, कटि-पतंग जे बना देलखिन। एतबे नहि, जंगली जानवरक शिकार आ आवारा, लुच्चा, लम्पट, हवशक शिकारीकेँ जे परोसि देलखिन, किएक तँ रातिमे इंसान कम आ हैवान रातिमे बेसी चक्कर मारैत रहैत अछि। खाएर आब हम बौकीकेँ सुनी।

बौकी साँझ धरि मामाकेँ नै अबैत देखि कानए-खीजए लगल,

हिचैक-हिचैक कऽ कानए लगल- 'पाइरे पाइऽऽ'। बौकीक बोली भिन्ने होइत अछि। बौकीक कानब सुनि एगो औरत ऐली आ समझाबए लगली- "बेटी कानू नै आर इंतजार करू।"

ई कहि ओ औरत गाड़ी पकैड़ चलि गेली। साँझ भेल, बत्ती आ बल्व जरल, जइसँ टिशन चमकए लगल। मुदा बौकीक सोझहामे तँ इजोत रहै परंच मनक भीतर अन्हार। बौकी कानि-खीजिकऽ ओही टिशनमे आ ओहीठाम सुति रहल। कामाख्या देवीक मन्दिरक वातावरण एहेन रहै जे कि ऐठाम जे अबैत ओकरा मनमे कामक भाव किछु-ने-किछु अंश तक पसि जाइत रहइ। किए तँ ओइ मन्दिरमे योनिक पूजा होइत अछि आ तंत्र-मंत्रक जाप होइत अछि। वेद-पुराणक अनुसार माता सतीक देह जखन खण्डित भऽ गिरए लगल तँ गिरैक स्थान सभ शक्ति पीठ बनि गेल। जेना आँखि जेतए गिरल, तहीठाम तारापीठ बनि गेल, मुंगेर। तहिना मानल गेल अछि आ मान्यता अछि जे कामाख्या मन्दिर जेतए स्थापित भेल अछि तैठाम माता सतीक योनि गिरल अछि, तँए योनि रूपक पूजा होइत आबि रहल अछि।

अनाथ, बेसहारा आ वेवश बौकी ओइ टिशनकेँ अप्पन आश्रय मानि ओहीठाम रहए लगल। एगो गीत बाजि उठल- 'जिसका न कोई संगी-साथी ईश्वर है रखवाला। जो निर्धन है जो निर्बल है ओ है प्रभु का प्यारा'। ई गीत सुनि आत्महत्याक विचार छोड़ि जे मनमे अबैत रहै, मीरा जकाँ भक्तिक रंगमे रंगि गेली। ऐ सँ मन-पूजा तँ होइत रहै मुदा पेट-पूजा तँ जीबैक लेल अनिवार्य अछि। एतेक भक्तियो नै जे देवी-देवता भोजन पठा दैथ, पेटक आगि अथवा भूख मिझबैबला कियो नइ भेटल। आजुक दिनमे योगी कम आ भोगी बेसी भेटैत अछि। हाय रे जमाना, दया-धर्म नै एक्कोअना। बौकी मजबूरन भिखारीन बनि गेली आ मांगि-चांगिकऽ खाए-पीबए

लगली। कहू, बौकीकेँ भिखारीन के बनौलक?

एक बेर भीख मांगैत-मांगैत शूनशान रोडपर आ जंगली इलाका दिस बौकी चलि गेली। कहबी छै 'गुदरीमे लाल नुकाएल रहैए'। भलेँ बौकी गरीब अछि, देहपर कपड़ा कम छै आ मलिन सेहो रहए, मुदा ओकर देहसँ इजोत झलकैत रहैए, किएक तँ देह सुनहरा रंगक छइ। फराकेसँ ओकर देह झलकैत देखि एगो मनचला अपना मनमे विचारलक, ई लड़की बड़ सुन्नर अछि आ नीक माल अछि। ई सोचि ओ ओकर पाछू पड़ि गेल। बौकीकेँ पकैड़ लेलक। ऐ बातक अन्देसा बौकीकेँ नइ रहइ। आब बौकी की करत, ओ मनचला ओकर इज्जत लूटए चाहैत रहए, बौकी अप्पन इज्जत बँचबैत विरोधमे लड़ए-झगड़ए लगली। लोक सभकेँ बजबैक प्रयास केलैन मुदा 'ईऽऽ ईऽऽ ईऽऽऽ उऽऽ ऊऽऽऽ अरे पा रे पाऽऽ'क शिवा आर किछु आवाज बौकीकेँ नइ फुटैत रहैन। विरोध शक्ति भरि जरूर केलैन मुदा भूखल पेट रहने देहमे तागत नै रहैन। लड़का बेसी मजगूत रहए तँए बौकीकेँ पछाड़ि देलक आ रोडपर सँ उठाकऽ जंगल-झाड़मे लऽ कऽ चलि गेल।

बौकी कानि-खीजि विरोध करैत-करैत तबाह भऽ गेली।

लड़का करैए चीरहरण, बौकी कृष्णकेँ करैए सुमिरन। चीरक अर्थ ओना तँ साड़ी होइत अछि, जेना महाभारतमे देखै छी मुदा बौकी तँ कुमारि अछि तँ साड़ीक बात केना सही रहत, तँए चीरक अर्थ वस्त्र मानल जाए। लड़का बौकीकेँ पटैक देलकै, बौकी करजोड़ि विनती करए लगली। मुदा ओइ लड़कापर तेकर कोनो असर नइ भेल। लड़का अप्पन जीतक खुशीमे हनहनाइत बाजल-

"गइ छौड़ी, तूँ बड़ सुन्दर आ लाल टरेस छी, ई छियौ बीरान जंगल, ऐठाम के छौ तोहर तँए हम अप्पन वासनाक भूख मिझेबौ, आब नौथनी उतारबौ तोहर, गइ।"

बौकीक देहमे आब तागत नै रहि गेल छल, ओकरा लगलै जे कि हमरा कोनो मजगूत भेड़िया पकैड़ लेने अछि आ खाइक जोगारमे अछि। एगो कमजोर बकरीकेँ सियार जहिना धऽ लइए तहिना। तेकर वावजूदो बौकी अप्पन हाथ-पएर चलबैत रहली। दुनू आँखिमे आँसूक धार आ देहमे न जान-परान सन स्थिति बौकीक संग भऽ गेल रहइ। दोसर दिस ओ मनचला ई अनमोल शिकार पाबि आ निर्जन स्थान देखि बेसी हरखित रहए, किएक तँ ओकर मुराद जे पूरा होइत रहइ। आब छौड़ा इज्जत आ अस्मत लूटैक लेल तैयार भऽ गेल। निर्मल गुलाबक फूल जकाँ कायावाली सुकुमारि आ निर्दोष-अनाथनी ओइ बौकीक देहपर चढ़ैक प्रयास केलक आ झुकल कि एगो चमत्कार भऽ गेल। एगो बड़का बानर ओइ लड़काक देहपर कूदि पड़लै आ ओकरा नोचए-नाचए लगलै। लड़का बाप-बाप किल्लोल करए लगल। मुदा बानर तेतेक क्रोधमे रहए कि ओकरा छोड़ैत नइ रहए। लहुलुहान कऽ देलक। लड़का कहुना-कहुनाकऽ अप्पन जान बचा कऽ ओतएसँ भागल।

बौकी आ बौकीक इज्जत-लाज बँचि गेल। ओ दिव्य बानर बौकीक आँखिक नोर पोछए लगल आ अपना शब्दमे बौकीकेँ जेना किछु कहए लगल, मुदा बानरोकेँ तँ बोलीमे शब्दक कोनो निखार नै होइत अछि, तँए सिर्फ चीऽ चीऽऽ चीऽऽऽ करिकऽ अप्पन बातकेँ बुझबैक प्रयास करैत रहल। तहिना बौकी अप्पन हाथ जोड़ि आ किछु अपना शब्दमे किछु बाजि ओइ दिव्य बानरकेँ धन्यवाद दैक संकेत करैत रहली, मुदा ईऽ ईऽऽ ईऽऽऽ उऽ उऽऽ उऽऽऽ केर सिवा ने कोनो अक्षर आ ने शब्द निकलैत रहइ। बौकीकेँ ई एहसास भेलै जे कि बिपैतमे ई बानर नहि, हमर खूद बापे आबि हमर नोर पोछि रहल छैथ। बात सएह बुझियौ, किएक तँ बानर हमर पूर्वज छैथ।

समय लगधक बारह बजे दुपहरियाक रहइ। गरमीक मौसम

रहइ, रौद बड़ तीख छल आ गरम हवा चलैत रहइ, तँए सड़कपर एक्कोटा राहगीर नै देखा पड़ि रहल छल। संयोगसँ एगो अधेर बेकती ओइ सड़कपर आ ओइ घटना दिस अबैत रहैथ। यौ सुधि पाठकगण जखन बेकतीकेँ आवश्यक काज उपस्थित भऽ जाइए तँ कि रौद कि पानि आ कि अन्हर-बिहाड़ि काज करए पड़ैत अछि। जंगल ओइ रोडसँ सटले रहइ। बौकी मदैतिक आशमे ठाढ़ भेल छेली जे कि कोनो नीक लोकक सहानुभूति भेट जाइन। ओइ बेकतीकेँ जंगलमे छाँह जकाँ किछु बुझि पड़लै किए तँ बौकीक संग-संग ओ वीर बानरो तँ रहइ। आब ओ बेकती विहंगम दृष्टिसँ सभ किछु निहारल लगलै आकि एगो लड़की आ बानरकेँ देखि ओ बेकती अचरजमे पड़ि गेला। हुनका मनमे थोड़बे कालक लेल ई भेलै कि ई बानर नहि, केशरी छी आ अंजलीक संग ऐ निर्जन बोनमे विचरण कऽ रहल छैथ। अचरज चीज सएह भेल। दोसर दिस बौकीए ओइ अधबेसू बेकतीकेँ देखि लैत छैन मुदा मुँहमे बोली तँ रहबे नइ करै छैन जे कि मदैतिक लेल बजा सकै छेलैन तँए ईऽ इऽ ईऽ, उऽ उऽ उऽ बाजि इशारा करै छेली आ तइ संग ओ वीर बानर कुदैत-फानैत रहए। किछुकाल धरि ई तमाशा देखि ओइ अधेर बेकतीकेँ बुझैमे आबि गेलै जे कि कोनो लड़की बिपैतमे फँसि गेल अछि आ मदैत चाहि रहल अछि। ई सोचि ओ अधबेसू बेकती ओइठाम गेला आ लड़कीकेँ उघार देखि अप्पन गमछा फेकि पहिने तन ढकबौलैन। दोसर दिस लड़कीक मदैतगार देखि ओ वीर बानर एगो गाछपर चढ़ि गेल। ओ बेकती बड़ पैघ इंसान छला। ओ लड़कीकेँ झट लऽ कऽ रोडपर एला। ओ बेकती बेसी उपकारी स्वभावक छैथ, तँए किछु-किछु पूछए लगलखिन, मुदा लड़की सिर्फ ईऽऽ ईऽऽ उऽऽ उऽऽ आ अरे पाइ, रे पायऽऽ करैत आरो हाथक इशारा सेहो करै छैली। तँए ओ इंसान अथवा अधबेसू बेकती बुझि गेलैन जे कि ई लड़की बौक

अछि, मुँहमे बोली नै अछि आ एकरा मदैतिक खगता अछि। शायद ई अप्पन बेथा-कथा आ घटनाकेँ बतबैले प्रयास करैत छल मुदा एगो बौकी केना अप्पन मुँहमे शब्दक रचना कऽ सकैत अछि, तँए ओ अधेर बेकती किछु जनैले पुछलखिन-

"बुच्ची, जंगलमे केना चलि गेल रही?"

बौकी कानए लगली आ ईऽऽ ईऽऽ ईऽऽ, उऽऽ उऽऽ उऽऽ करैत अप्पन घटनाकेँ सुनबैक प्रयासमे संकेत आ प्रतीक बनबए लगल। अप्पन दुनू हाथ ऊपरका ठोर लग लऽ गेली आ मोछक प्रतीक हाथक अंगुरीसँ बतबैत हाथकेँ चमकाबैत ओइ बेकतीक बाँहि पकैड़ जबरदस्ती करैक संकेत बतौलैन, संगे छाती-देह दिस इशारा करैत अप्पन फटल कपड़ा देखौलैन फेर बानरक प्रतीक आ पैघ नाङरिक प्रतीक बनाकऽ ओकरा प्रणाम केलैन। ई सभ प्रतीक आ संकेत बौकी ऐ ढंगसँ बनौलैन कि ओइ अधेर बेकतीकेँ आब सभ किछु बुझैमे अबए लगलैन। ओ बुझि गेला जे कि ऐ बौकीकेँ कोनो गुंडा गलत नियतसँ उठाकऽ जंगलमे लऽ गेल रहै आ इज्जत लूटैक प्रयास करैत रहै आकि महावीर बानर ओकरा नोचिकऽ भगौलक आ ऐ बौकीक लाज बँचा लेलकै। ओ बेकती सेहो ओइ महावीर बानरकेँ प्रणाम केलैन। आब किछु काल धरि ओ बेकती कल्पनाक सागरमे बहए लगला। बौकी आ एकर उलटा लिंग बौका होइत अछि, दुनूटा बाजि नै सकैत अछि, मुदा श्रवण शक्ति तीव्र रहलासँ सामान्यसँ निमन काज करैत अछि। ओना तँ समाज लड़का-लड़कीक संग भेद-भाव करैत आबि रहल अछि जेना लड़काकेँ स्कूल भेजैत अछि आ लड़कीसँ बकरी चरबाबैत अछि आ घास कटाबैत अछि। बिआह कालमे बेटा बेर मुँहगर आ बेटी बेरमे मुड़ी खसबैत अछि। मुदा जखन लड़को बौक होइत अछि तँ ओकरो संग भेद-भाव करए लगैत अछि। यौ सरकार, जँ बौका संग ई रवैया तँ अहीं कहू जे कि लड़की

बौकी संग केहेन रबैया होएत? तँए समाजकेँ ई उपरागे ने भेल जे कि चाँदनी नइ तँ चाँद केना? जयांग नइ तँ पुमंग केना? अर्थात लड़की नइ तँ लड़का केना सम्भव अछि? ऐ तरहेँ ओ भलेँ मनुक्ख कल्पना करैत जाइ छैथ कि एगो पैछला रील सोझामे नाचए लगैत अछि- एगो छह क्लासक लड़की तीन-चारि दिनसँ स्कूल नै अबैत रहइ। स्कूलक हेडमास्टर आइ ओइ बचियाकेँ स्कूलमे देखि, नइ अबैक कारण जानए चाहलखिन आ पुछलखिन- "तूँ स्कूल किए नै अबैत रहै छी, बुच्ची?"

ई सुनि लड़की डेरा गेल, गलतीक बोध भेलै, नाम बुधनी रहै- गाम-घरक नाम। बुधनी सिसकैत जवाब देलकै-

"सरजी यौ, हमर माए-बाबू...।"

कहैत कानए लगैत अछि।

हेडमास्टरक नाओं रमेसर रहै जे बड़ सुयोग्य कर्तव्यनिष्ठ, समयनिष्ठ आ स्वच्छ छविबला इमानदार बेकती छला। ओ छात्रसँ बेसी छात्रापर धियान रखैत छला, किएक तँ लड़की शिक्षाक स्तर जमीनपर रहै जेकरा ओ ऊपर उठाकऽ आसमान दिस लाबए चाहैत रहैथ। लड़कीकेँ डरैत आ कनैत देखि रमेसर गुरुजी कहलखिन-

"कानू नै बुच्ची, ठीक-ठीक कहू, की माए-बाबू?।"

आब बुधनी नोर पोछैत बाजल-

"माए-बाबू कहैत रहै छथिन जे इस्कूल नइ जो, किएक तँ लड़की पढ़िकऽ की करतै। छिटा-खुरपी लए आ संगमे बकरी सेहो लए आ बकरी चरा ला गऽ। घास काटि कऽ ला गऽ आ घर आबि माल-जालकेँ कुटी-सानी लगा, चुल्ही-चौकाक काज कर। सर, हम तँ अकच्छ छी। आइ हम भागिकऽ इस्कूल आएल छी, किएक तँ हमरा पढ़ैमे बड़ नीक लगैत अछि।"

शुद्धमती आ साँच-साँच बात सुनि रमेसर हेड मास्टर बड़ प्रभावित भेला आ बजला-

“बुच्ची, हम सभ बात तोहर बुझि गेलियौ। सभ घन्टीक पढ़ाइ कए ले तब जइहेँ।”

ई सुनि बुधनी सिसकैत बाजल- “नइ सर, सभ घन्टी नै करब, घर जेबै तँ हमरा माए-बाबू बड़ मारि मारत।”

रमेसर- “डर नै बुच्ची, हमहूँ तोरा संग तोरा घरपर जेबौ आ तोरा माए-बाबूकेँ समझेबौ। कान नइ।”

हेडमास्टरक ई सहानुभूति पूर्ण विचार सुनि बुधनी नोर पोछिकऽ हँसए लागल।

रमेसर गुरुजी बुधनीकेँ लऽ कऽ ओकरा घरपर एला आ बुधनीक माए-बाबूसँ पुछलैन- “अहाँ सभ बेटीकेँ पढ़ैसँ किए मना करै छिऐ?”

बुधनीक बापक नाओं बदरी छिऐन। हेडमास्टरक बात सुनि बदरी एना बजला जेना पहिनहिसँ जवाब दइक लेल तैयार होथि। कहलखिन-

“यौ हेडमास्टर साहैब, बेटी सभ पढ़िकऽ की करतै। जँ बकरी चरैतै तँ दूटा पाइ हाथमे रहतै आमदनीए-आमदनीए। पढ़तै तँ खरचे-खरचे आ चरचे-चरचे, तँ किएक पढ़ाबी।”

रमेसर गुरुजी बजला- “बदरीजी, पैसा-पैसा तँ कहलहक मुदा पैसाक पहिचान आ गिननाइ केकरासँ सम्भव अछि। शिक्षा नइ तँ संस्कारो नइ आ बेवहारो नइ हेतह, जिनगी जानवर जकाँ भऽ जेतह। बुधि नइ तँ बच्चा जहरीला साँप पकैड़ खेलतह आ सोनाक खरामकेँ प्लास्टिकक खराम कहत। सर्व शिक्षा अभियान अही कारणसँ आएल छह कि लड़कियोकेँ शिक्षा भेटैक चाही। बदरीजी, बेटी जँ

शिक्षित आ संस्कारी हेतह तँ दोसरो कुलकेँ शिक्षित आ संस्कारी बनेतह, नहि तँ गोबर उठबैत-उठबैत गोबरक चोत भऽ जेतह, की बुझलहक?”

हेडमास्टर साहैबक ई सलाह सुनि बदरी सोचमे पड़ि गेल आ बाजल- “यौ सर, समाज आ लोक लड़कीकेँ नै पढ़ाबए चाहैत अछि, कहैत अछि जे कि एनामे लड़की सभ बिगैड़ जेतइ। ऐसँ हानिक सिवा किछु फैदा नइ हेतइ।”

बदरीक बात सुनि हेड़मास्टर साहैब बजला- “हौ बदरी, समाज अन्धविश्वास आ भरममे वौआए रहल अछि। नीक चीजकेँ अधला आ अधला चीजकेँ निमन बुझि रहल अछि। सुयोग्य आ काबिल महिला ‘विजयालक्ष्मी पण्डित कहिया पढ़ि लेने रहथिन जे यू.एन.ओ.क अध्यक्ष भेल छेली, आयरन लेडी, सुयोग्य प्रतिभासम्पन्न इन्दिरा गाँधी केना आ कहिया पढ़ि लेलखिन जे भारतक प्रथम महिला प्रधानमंत्रीक कुरसीपर काविज भेल छेली, भारतक बुलबुल सरोजिनी नायडु की बिना पढ़नहियेँ भारतक प्रथम महिला राजपाल भेल छेली। कहू तँ शकुन्तला देवी कम्प्यूटरकेँ केना हरौने छेली? भारतक प्रथम महिला शिक्षिका माता सावित्री ज्योतिवा फूले किएक लड़की शिक्षापर जोर दइ छेली? की गार्गी, मैत्रेयी, लोपा, भारती आदि मनस्वनी नारी विदुषी नइ छेली? तँए लड़कीकेँ पढ़ाबू, स्कूल भेजू।”

बदरी सभ बात श्रवण लगाकऽ सुनि बाजल- “सर, अहाँक विचार हमरा उत्पलावित मनकेँ अस्थिर कऽ देलक, मुदा समाज समुद्रमे तँ बहए पड़ै छै, तँए स्कूल नै भेजै छिऐ।”

यौ समाज, ई बात किएक ने बुझैत छिऐ जे विद्याक देवी सरस्वती, धनक देवी लक्ष्मी आ शक्तिक देवी दुर्गा छथिन। तँए

लड़कीकेँ नइ पढ़ेनाइ देवी सभक अपमान छी। विद्या, धन आ शक्तिक अपमान छी।

रमेसर गुरुजी बदरीकेँ समझाबैत बजला- “यौ बदरी, बेटी तँ पराया धन होइत अछि आ बिआहक पछाइत दू कुलकेँ जोड़ैत अछि, तँए बेटी-धियाकेँ पढ़ेनाइ बेसी उचित अछि। एगो बात आओर बदरीजी, अप्पन समाज दू वर्गमे बँटल अछि- अपर समाज आ लोअर समाजमे। एकरा ऐ तरहेँ सेहो बुझियौ जे कि अपर समाज बड़का माछ आ लोअर समाज छोटका माछ भेल, जेना पानिमे बड़का माछ छोटका माछकेँ निगलि लैत अछि, अथवा खा लैत अछि, तहिना समाजमे सेहो स्थिति बनल रहैए। ई गीत नै बुझल छह- ‘बड़का लोकक ई नाटक छियौ रौ संगी रौ, टाटक छियौ रौ, संगी रौ राखउ तोरा क, ख, ग, घ सँ दूर संमतिया संगी यएह बतिया रौ?’ बदरी, सर्वशिक्षा अभियानक गंगामे तहूँ डुमकी लगाबह आ बेटीकेँ पढ़ाबह। तोहर बेटियो होनिहारि छह, पढ़ैमे तेज छह।”

हेडमास्टर साहैबक गीत सुनि बदरी बजला- “यौ सर, अहाँसभ धन्य छी जे एहेन काज करै छी, लड़की शिक्षाक बढ़ाबा लेल गली-कुची आ बस्ती-बस्तीमे सुतल लोकसभकेँ जगबै छी, समाजसँ अशिक्षाक अन्हारकेँ भगबैत रहै छी आ शिक्षाक इजोत बारै छी। यौ सर, अहाँ सबहक ई अभियानमे हमहूँ सहयोग करए चाहै छी। सर, ऐ सुन्नर अभियानमे जे काज हमरा लाइक हुअए से हमरो दिअ, हम मुफ्तेमे सम्हारैत रहब। हमहूँ रंगमंचक एगो कलाकार छी आ हरमुनियापर संगति करै छी।”

रमेसर गुरुजी बदरीक सहमति पाबि बड़ हरखित भेला आ बजला- “वाह, वाह! आइ हमरा तँ खजाने मिलि गेल, बदरी ठीके कहल गेल छै, जखन प्रभुक इच्छा होइ छैन तँ छप्पर फाड़िकऽ दइ छैथ। यौ बदरी, हरमुनिया बजाबैबलाकेँ हमरा केतेको दिनसँ खोज

रहए, बेसी खगता रहने हम ओकरा हथबत्तीसँ बुझू जे ताकि रहल छेलौं, मुदा आइ अहाँ बगलेमे भेट गेलौं। कहाबत छै 'झोपड़ीमे भाव'। मतलब लोक जे आवश्यक चीज-वौसकेँ दूर-दूरमे खोजैत अछि ओ लगे-पासमे भेट जाइत अछि, तँए लोककेँ मृगतृष्णामे नहि भटकैक चाही। बदरी, आइ हमरा ई भान होइत अछि जे हमर शिक्षा-अभियान आधा सफल भऽ गेल। हम तोहर नाम ब्लॉकमे सेहो पठा दइ छिअह।"

ई सुनि बदरी सुखद अनुभूति करैत बजला- "यौ सर, अहाँक अमृतवचन सुनि आ शिक्षाक महिमा बुझि वेशेष अह्लादित भेलौं हेन। जय हो सर्वशिक्षा अभियान। सर, हमर बुधनी रोज इस्कूल जेबे करत आ संग-संग आर लड़की सभकेँ लाए जाएत, हम विश्वासक संग कहि रहल छी।"

बदरीक ई संकल्प आ प्रण समतुल्य वचन सुनि हेडमास्टर साहब बेसी प्रभावित भेला आ बदरीकेँ आशीर्वाद दैत आर बुधनीकेँ दिलसँ शुभकामना दैत संगे बदरीकेँ अभियानमे जुड़ैक लेल आमंत्रण दैत विदा भऽ गेला।

रमेसर बाबू दोसर दिन बुधनीकेँ स्कूलमे देखि रजिस्टर मंगौलैन आ बुधनी कुमारीक नाम बदैल बुद्धि कुमारी अंकित केलखिन। जे ओइ हेडमास्टरक उदार दिलक आ समानता बोधक विचारक पहिचान छेलैन। आजुक तिथिमे ओ बुधनी कुमारी जेकर नाओं रमेसर हेडमास्टर साहेब बुद्धि कुमारी रखने रहथिन, थानाक दरोगा छथिन आ जे कहियो बकरीकेँ हाँकैत छल ओ आइ चोर, डाकू, गुण्डा आ अपराधी सभकेँ हाँकैत छथिन, ई शिक्षाक महिमा आ तागत छी, सर्व शिक्षा अभियानक जय-जयकार हुअ लगल। ओइ अधेर बेकतीक मनमे गुण्डा-चोरक नाम अबिते अतीतक रील रूकि गेलै आ ओ पुन: अप्पन वास्तविक आ वर्तमानक दुनियाँमे

आबि गेला। अपना संग बौकीकेँ देखि फेर ओ कल्पना करए लगला। समाज बौकीपर होइत अत्याचारकेँ नै देखैत अछि? आ की समाज पंगु बनि गेल अछि आकि बौक बनि गेल अछि जे ऐ जुलुमक खिलाफ आवाज नै उठबैत अछि। आब बुझि गेलौं जे अपर समाजक लड़का सभ आकि राजनेताक बेटा सभ आ दबंग आकि बहुबली सभ एहेन घिनौना काज करैत अछि तँए डराएल समाज पंगु आ बौक अछि, मुदा यौ समाज, हम उपराग नै दइ छी, सिर्फ कहै छी जे बौक रहब तँ आइ अनकाकेँ देखैत छिऐ आ चुप रहै छिऐ, काल्हि अहूँक संग होएत। तँए कहब जे अप्पन आँखि आकि अप्पन कान आकि अप्पन आवाज बन्न नै करू, अवाक नै रहू, बौक-बहिर नै बनु आ नेंगरा-पंगु नै बनि धर्म-रक्षक बनू, समाज आगू बढ़त। हिम्मत करब तँ बलात्कारी, आदमखोर भेड़िया बौकी जकाँ निर्दोष, निर्मल आ असहाय लड़कीकेँ नोचि नइ सकत आ समाजक इज्जत-मर्यादा सेहो सुरक्षित रहत।

ओ अधेर बेकती कल्पनाक उड़नजहाजसँ नीचाँ आबि गेला, ओकरा दिलमे बौकीक प्रति दया आ सिनेहक भाव जागि उठलैन। ओ बेकती आर कियो नहि, वएह रिटायर्ड हेडमास्टर रमेसर गुरुजी छला, जिनका कृपासँ बुधनी कुमारी दरोगा अर्थात् बुद्धि कुमारी भेली। दयालु रमेसर बौकी दिस तकैत बजला-

“बेटी, हमरा ऐठाम चलू, हम अहाँक देख-रेख करब।”

दयाक प्रतिमूर्ति रमेसर गुरुजीक ई सहानुभूति सन वचन बौकी सुनलैन, मगर ओ अतेक डेराएल छल जे हाथसँ इशारा करैत मना कऽ देलकैन। मोछक प्रतीक बनबैत, हाथसँ इशारा करैत, ईऽऽ ईऽऽ ईऽऽ., उऽऽ उऽऽ उऽऽ करैत संकेत केलकैन कि अहूँ तँ मर्दे छी, मोछ रखै छी, तँ अहाँपर की विश्वास? हाथसँ ‘नइ’क संकेत बौकीक दिससँ अपनापर शंका होइत देखि निष्कलंकित आ पाक छविबला

रमेसर गुरुजी तिलमिलाए गेला, मुदा डेराएल बौकीकेँ देखि अबोध मानि कहलखिन- “हम तँ बुढ़ छी, रिटाइर्ड मास्टर छी, पत्नीक संग रहैत छी आ बाल-बच्चेदार छी, अहाँ हमर बेटीक उमेरक छी। अहाँ कोनो शंका नै करू आ हमरा संग चलू।”

ऐ तरहेँ विश्वास दिआ कऽ रमेसर गुरुजी ओइ बौकीकेँ अपना घर लऽ एलैन। बौकी बौक जरूर रहए मुदा ओकर विचार आ बेवहार बौक नइ रहइ, बड़ सुशील छल ओ। तँए बौकी, सभकेँ गोड़ लगैत प्रणाम केलकैन, परंच नमहर आ छरहर लड़की देखि शंकाक तरंग तरंगित हुअ लगैत अछि, आओर तँ आओर रमेसर गुरुजीक पत्नी तँ ओइ लड़कीक देखि अगिया-बताहि भऽ जाइत छथिन आ अपना पतिकेँ खरी-खोटी सुनाबए लगैत छथिन-

“गे मैया, ई छुतहरबा केतएसँ ई छौड़ीकेँ उठा आनलक हेन, जानि नहि। की हम एते बुढ़-पुरान भऽ गेलौं हेन। जे ई मरदबा ऐ छौड़ीकेँ लऽ अनलक हेन। एकरा जे से ने कऽ देबै। हमर सौतिन बनत ई छौड़ी, मारि कऽ देह-हाथ तोड़ि देबै। छौड़बै नहि।”

रमेसर गुरुजी पत्नीकेँ फुफकार छोड़ैत ई नागिन रूप आ गति-विधि देखि लोकक भीड़ लगि गेलै। यौ सुधि पाठकगण आ समाजक लोक, ई नारीक सोभाव होइत अछि जे कि अप्पन पतिकेँ कोनो दोसर महिलासँ बात करब पसिन नइ कऽ सकैए। आ ई कहियौ कि सौतिनकेँ बर्दास्त नइ कऽ सकैत अछि, तँ ओइ बौकीकेँ अपना पतिक संग देखिते मास्टरनीक मनमे सौतिनक लीला आबि गेलै आ देहमे लहैर मारए लगलै। ऐ कारणेँ रमेसर गुरुजीक पत्नी पदमा बिनु पुछनहि अपना पति रमेसर गुरुजी, जे एगो पैघ सम्मानित बेकती छला, एहेन काबिल लोकपर आँगुर उठा देलैन आ भला-बुरा सेहो कहलैन। पति तँ अवाक छला, परन्तु ओ बौकी अप्पन आ गुरुजी जकाँ ओइ भलमानुक्खक अपमान बर्दास्त नै कऽ

सकला। किएक तँ हुनको दिलमे स्वाभिमान छैन कि ने। हुनको अप्पन मान-सम्मान छैन किने। तँए मास्टरनीक नागिन रूप देखि आ गलत भाव-विचार देखि 'ईऽऽ ईऽऽ ईऽऽ उऽऽ उऽऽ उऽऽ अरे पाय रे पायऽऽ करए लगलैन आ हाथक इशारासँ कहैत जे कि हम तँ बौकी छी आ भिखारीन छी, भीख मांगि-मांगि खाएब, मुदा अहाँ ऐ निर्दोष आ इज्जतदार मास्टर साहबपर किएक बजै छिऐ? संकेत प्रतिमानसँ बौकी बाजल- "हम चलि जाएब, शंका उचित नहि।"

दोसर दिस रमेसर गुरुजी अचरजमे डुमल रहैथ आ अवाक रहैथ। हुनका ई पता नइ रहैन जे बौकीक संग एहेन बात हेतइ। जे पत्नी राति-दिन संग-संग रहैत अछि निमन-अधला सभ बात करैत अछि, विश्वास केने जिनगीक गाड़ी चलैत आबि रहल अछि तँ आइ तेहेन विश्वास किएक नइ अछि। यौ सज्जनवृन्द, अहाँ बाहरमे केतबो ताल ठोकि लिअ, शेर किएक ने बनि जाउ, मुदा घर अबिते भिजल बिलाइ बनैये पड़त, किएक तँ घर एहेन जंगल छी जेकर शेर पत्नी होइत अछि। पुराणमे राजा उतानपाद आ हुनकर दुनू पत्नीक बेवहार महारानी सुनीति आ पटरानी सुरुचिक बेवहार पढ़ि बुझि सकैत छी।

रमेसर गुरुजीक पत्नी तँ धधैक रहल छेली, मुदा साफ-स्वच्छ छविबला रमेसर गुरुजी अप्पन पत्नीक धधककेँ शान्त करैक लेल अपना विचार मार्गमे शीतल जल तैयार करैत छला। किएक तँ हुनका ई एहसास भेलैन जे कि घटनाक उपादान हम खूद छी, हमर पत्नी नहि, शंका केनाइ सोभाविक अछि। परंच विषय-स्थितिकेँ बिना बुझने केकरो पर दोषारोपण ई बुद्धिमानी तँ नइ भेल। तँए गुरुजी प्रेमसँ समझाबैत बजला- "यै हमर रजनीगंधा आ कमलक फूल, अहाँसँ भऽ गेल भूल, बिना मतलबे हमरापर करै छी शंका आ किएक बजबैत छी डंका। हम अहाँकेँ दिलमे नुकेने छी आ अहींक नामक माला जपैत रहै छी। जीबै छी अहींक नाम लऽ कऽ आ मरब

तँ अहींक नाम लऽ कऽ। आउ हमर लग हम सभकिछु बुझा दइ छी।”

रमेसर गुरुजी अपना पत्नीकेँ एना कहलखिन जे ई बुझाएल कि हुनका मुहसँ अमृत वाणी निकलैत होनि अथवा शीतल गंगधरा। अप्पन पतिक ई उद्गार प्रेममय आ सुखद-माधूर्य विचार सुनि पदमा पतिसँ चिपैक गेली आ जुआनीक प्रेमपरिरम्भन स्वीकार केलीह। जुआनीक आकर्षण आ रसमे एहेन लस्सा रहैत अछि, जइसँ पति-पत्नीकेँ अपना आगोशमे चिपकेने रहैत अछि, आइ सएह दुनू गोरेकेँ एहसास होइत अछि। अलग तखन भेल, जखन एगो स्त्री बजली-

“दुनूटा केँ कोनो गत्तरमे लाजो ने होइ छै। गे माइ, मास्टरनीकेँ नइ तँ आँखिमे लाज-शरम छै आ ने कोनो हैया छै, बुढ़ाड़ियोमे दू दाँत छइ।”

ओ स्त्री हुनकरे पुतोहु रहैन। आब दुनू सहैम गेला। पदमा अप्पन गलतीकेँ स्वीकार करैत बजली-

“हम अहाँक गलत बुझै छेलौं, माफ कऽ दिअ, मुदा कहू की बात छी?”

रमेसर गुरुजी बुझि गेला कि आब धधकैत आगि पर पानि पड़ि गेल अछि, तँए अनेरो बात किएक बढ़ाबी। आब ओ अपना पत्नीकेँ बौकीक सभ व्यथा-कथा आ करूण कथा सुना देलखिन। पछाइत बजला-

“आब कहू गलती केकर भेल? आ ई बौकी केतए जाएत?”

रमेसर गुरुजीक मुहसँ बौकीक करूण घटना सुनि सभ द्रवित भऽ गेला आ बौकीक प्रति सहानुभूति देखबए लगला। सभकियो निर्दोष बौकी दिस ताकए लगला। ई देखि गुरुजी पुन: बजला-

“ऐ अनाथ बौकीकेँ केतए ठेकान अछि? प्रेम करैबला कम आ

नोचैबला बेसी रहैत अछि। केतौ मानवखोर, मानव-भेड़िया एहेन दरिंदा आ वासनाक भूखल गिदरक चंगुलमे फँसि जाएत तँ की हाल हेतइ? अहीं कहू पदमे?”

पदमा सभ बात धियानसँ सुनैत रहली। आब जे पदमामे शैतान समाएल रहै, इंसान आ इंसानियत समाए लगलै, तँए सोचि-विचारिकऽ पदमा बजली- “हँ, बात तँ ठीक अछि, विचारणीय अछि। ऐठाम मानवक नहि दानवक राज अछि। गुण्डा, आवारा, बलात्कारी आ दरिंदा सभ घुमैत रहैत अछि, गली-गलीमे। जेतए नीक-नीक लड़की सभकेँ अपहरण, रेप आ इज्जत लूटैए, तेतए बौकीकेँ की हाल करत। ई सोचिकऽ हमरा देह सिहैर उठैत अछि।”

अप्पन पत्नीकेँ बौकीक प्रति ई निमन सोच देखि रमेसर गुरुजीकेँ बल भेट गेलैन आ बजला- “पदमे, ऐठाम फरिश्ता मिलनाइ असम्भव अछि। द्रौपदीक चीरहरणमे कृष्ण फरिश्ता बनिकऽ एला, गजराजकेँ बँचबै खातिर विष्णुजी एलखिन। आब के औता? आ फरिश्ता बनता? सुभद्रे बौकी तँ ईऽऽ ईऽऽ ईऽऽ उऽऽ उऽऽ उऽऽ करिते दरिन्दाक विरोध करैत अछि, मुदा समाज तँ क्रिमिनलकेँ देखि आँइखो आ मुहोँ बन्न कऽ लैत अछि, किएक तँ डर पैसि जाइ छइ। एतबे नइ, अपना समाजक भितरीमे कियो अन्धविश्वास आ नव-नव पाबैन पसारैत अछि, तँ आदरणीय वरेण्य साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पोथी ‘त्रिशुलपर लटकल गाम’ जकाँ समाजक रूप बनि जाइत अछि। पूज्य बापूकेँ तीनटा बानर रहैन, जइमे एगो आँखि बन्न केने रहैन, जेकर मतलब भेल, खराब बात नइ देखी। दोसर बानर कान बन्न केने रहैन, जेकर मतलब भेल खराब बात नइ सुनी आ तेसर बानर अप्पन मुँह बन्न केने छेलैन, जेकर मतलब भेल, खराब बात नइ बाजी। आब अहीं कहू जे की हमर समाज केकरा अपनेने अछि आ की करैत अछि?”

अप्पन पतिक ई मानवोचित विचार सुनि पदमा बजली- “हमर ममता की मरि गेल अछि आकि मानवताक गाछ सुखि गेल अछि? यौ इंसान छी हमहूँ। एहेन समाज केना बनि गेल अछि से तँ समाजे जानता। ई बौकी आब ऐठाम रहतै, केतौ नइ जेतइ। एकर देख-रेख आ भरण-पोषण हम करब, तइले आब अहाँ चिन्ता जुनि करू।”

ई कहि मास्टरनी बौकी लग जा कऽ ओकर झहरैत नोर पोछए लगली। रमेसर गुरुजी अप्पन पत्नीक ई उद्धारक विचार सुनि अति खुश भेला आ बजला- “पदमे, जेतए फरिश्ताक कोनो नहि गुंजाइश छल तैठाम अहाँ फरिश्ता बनि देखा देलिऐन, अनाथकेँ सनाथ बनौलिऐ। हम की, अहाँ मानवताक प्रतिमूर्ति छी।”

यौ सज्जनवृन्द, ऐठाम हम किछु कहए चाहै छी। नारी प्रेम आ प्रशंसाक भूखल रहैत अछि, ओकरा कनीए प्रशंसा आ कनीए प्रेम दियौ तँ ओ अहींक भऽ जाएत आर झोपड़ीकेँ महल कऽ देत, मुदा जखन ओकरा कनियोँटा निन्दा आकि शिकाइत आ मनकेँ दुखेबै तँ बेसी दूर भागि जाएत आ महलकेँ झोपड़ी कऽ देत। तँए नारीकेँ बोधि घरे कि महल उठाबी।

पदमा आगू बढ़िकऽ बौकीकेँ स्नान करौलखिन आ नवका वस्त्र पहिरा देलखिन। एहेन भान होइत छल जे कोनो माए अप्पन हेराएल बेटीकेँ पाबि हुलसित भऽ रहली अछि। बौकी जे अनाथ छल, ममताक बान्हसँ बन्हा गेल, किएक तँ पदमा माए जकाँ निर्मल ममता बौकीक प्रति लूटा रहल छेली। बौकीक दिल खुशीसँ भरि गेलै आ मन फेर हलैस उठलै, जे अतिखुशीक आँसू रहइ। वरेण्य साहित्यकार जगदीश प्रसाद मण्डलजी अप्पन पोथी ‘नियति आ पुरुषार्थ’मे अति सुखसँ सेहो आँखिसँ आँसू अबैत अछि, लिखने छथिन। बौकी एक-एककेँ सभकेँ गोड़ लगलकैन, सभकियो ओइ बौकीक प्रति सहानुभूति राखि ओकरा चूप करए लगलखिन। मुदा

बौकीक नोर बन्ने ने हुअए। यौ समाज, बौकी बौक जरूर अछि मुदा सभ किछु सुनितो आ बुझितो अछि, माइक ममतामे सन्हाएल बौकीकेँ अप्पन माए-बाबूक सुरता आबि गेल रहइ।

सम्पन्न परिवारमे रहलासँ ओइ बौकीक चेहराक लावण्यता खिल उठल। देह-गात लौकए लगल, किएक तँ निमन आ मजगूत अन्न आ दाना-पानि देहकेँ भरैत अछि आ सुन्दरो बनबैत अछि, मतलब अल्हुआ खाएब तँ की तागत होएत? आकि देहे चिक्कन होएत? कहाबतो अछि- 'कण-साग खाए कऽ जीबैत छी'। दोसर लोकोक्ति 'जेहने अन्न तेहने तन'। निर्धन आ दलित मजदूरक धिया-पुता चिक्कन आ पौष्टिक अहारक बिना बेमारीसँ ग्रसित रहैए अथवा लक-लक पातर आ सुखल लकड़ी जकाँ भऽ जाइत अछि, जेना कुपोषणसँ अथवा प्रोटीनक खगतासँ 'क्वाशियोरकर' रोग भऽ जाइत अछि। बौकी आब असथिर भऽ गेल रहए। तँए ओकरा दोसर जिनगी दिस धियान गेल। घरक सभ काज करैत आ गिरहतनी वा मास्टरनीक संग-संग सदैत रहए लगल। मतलब बिना मालकिनक बतौल कोनो काज नइ करए, अल्हड़ जकाँ अथवा अशोभनीय काज नै करए, जइ कारण परिवारक सभकियो बौकीक काज-बेवहारक सराहना करैत छला। बौकीक सोभाव ऐठाम चित्रित भेल अछि-

"जेना गाइयक पाछू लेडू चलैए
आ माइयक संग-संग बेटी।
कप्तान पाछू सेना चलैए,
तेना मालकिन संग ओ बौकी।"

जहियासँ रमेसर गुरुजीक ऐठाम ओइ बौकीक प्रवेश भेल तहियासँ घरक चमकी बढ़ि गेल, रंग-ढंग अलगे भऽ गेल, द्वार-दरबज्जा झलकए लगलै, सभ बड़ खुश रहैथ। मुदा गाम आ

समाजक किछु मौगी आर मरदकेँ आकि ई कहियौ जे मुँहपुरुख सभकेँ बड़ बेजा लगैत रहैन। गाममे कनफुसकी हुअ लगल। लोक बजए जे कि ई रमेसर मस्टरबाकेँ बुझि पड़ै छै, हमर रासलीलाकेँ कोइ नै बुझैए, गाममे एहेन-एहेन लोक सभ छैथ जे घरे बैसल पौनी गाछीकेँ देखि लइ छथिन, पानिमे बेंग पदैत अछि तँ सेहो बुझि जाइ छैथ। कोनो भेद छिपल नइ रहैत अछि, सुइयोमे धागा फँसबैत बेर छोरकेँ चौख करैये टा पड़ै छइ। मौगी-स्त्री सभ बजै जे कि गे मइया ई मस्टरबा तँ दू दाँतक लड़की उठाकऽ आनि लेने अछि, ढौरबी छोड़ियो तहिना जे बुढ़बेकेँ पसिन केलक। दोसर बाजि उठल, दाइ नै बुझलखिन, आब मस्टरनी दाय बुढ़ भऽ गेली ने आ मास्टरक सेवा करैमे नै सकै छथिन, तँए ई सभ भेलै हेन। गे मइया छौड़ीकेँ अप्पन सौतीन केना बनौलक मस्टरनी!

ऐ तरहेँ सौंसे गाममे चिनगारीक भाँति ई बात पसैर गेल जे रमेसर गुरुजी एगो जुआन लड़कीकेँ अप्पन रखैल बनाकऽ घरमे रखने छथिन आ रंगरसिया बनल छथिन, परंच सदाचारी कहबैत छथिन। यौ पाठकगण आ मान्यवर, हम सभ बुझिते छी जे सुगन्धक दूरी छोट होइत अछि आ दुर्गन्धक दूरी बढ़िते जाइत अछि, जखन कि दुनूक वाहक हवे होइए। विशुद्ध हवा आ प्रदूषित हवा।

ई चर्चाक आगि एतेक धधकल जे कि सरपंच लग चलि गेल आ पर-पनचैतीक बात उठि गेल, किएक तँ ओ सरपंच अशिक्षित आ गँवार रहए, जइ कारणेँ रमेसर गुरुजीसँ केतेको बेर वाक्-युद्ध भऽ जाइत रहइ, आब बदला लइक मौका सरपंचक हाथ आबि गेल रहइ। ऐ ताकमे सरपंच बहुत दिनसँ धपाएल छल। रमेसर गुरुजीपर पनचैती बैसल, ई हुनकर पाक-साफ आ इमानदार छविपर अविश्वास जकाँ हथौड़ीक चोट छल। ऐ पनचैतीमे हित-मित बेसी मुदा विरोधीक संख्या गिनल-गुथल रहै, किएक तँ रमेसर गुरुजी एगो

आदर्श गुरुजीक रूपमे छैथ आ उपकारी, सहयोगी आ मदैतगार छविधारीक रूपमे चर्चित गाममे छैथ। गाममे बिआह, त्योहार, भोज-भण्डारा आकि अन्य कोनो सार्वजनिक काजमे गुरुजी बढ़ि-चढ़िकऽ भाग लैत आबि रहल छला। तँए कहब, जेतए हुनकर जय-जयकार हेबाक चाही, तैठाम हुनकर तिरस्कार होइत रहइ। असलियतकेँ लोक जानबे ने करए आ झूठे हो-हो करए। ओना, समाजक संग ईहो बात अछि जे निमनकेँ अधलाह बुझैत अछि आ अधलाहकेँ नीक समझैत अछि, गीतमे कहलो गेल अछि 'अच्छाको बुरा साबित करना दुनिया की पुरानी आदत है'। जेना बेटी-धिया भेली फूल, तेकरा बुझैत अछि लोक धूल आ भ्रूणहत्या करि कऽ करैत अछि भूल।

किछु हुअए। रमेसर गुरुजीपर पनचैती बैसल जइमे रमेसर गुरुजीक संग ओइ बौकीकेँ सेहो बजौल गेल, जेकर असर बौकीपर बेसी भेल, ओकरा एना लागल जे पैरक नीचाँक धरती धसि गेल अछि आ ओइमे हम सीता जकाँ तर जा रहल छी। 'ताड़पर सँ गिरलौं तँ बगूरपर आबि लटकलौं'। बौकीकेँ फेर अप्पन काँटबला जिनगी अबैक एहसास भेल आ जमीनपर गिर पड़ल। ओकरा दाँती लागि गेलै। लोक सभ बजला, 'कि बौकी मरि गेल, मुदा समयपर डाक्टर आबि गेला आ पानि चढ़ा देलकैन, जइसँ बौकी बँचि गेल। आब ओ गूंगी बौकी 'ईऽऽ ईऽऽ उऽऽ उऽऽ आ पाऽऽ यऽऽ रे पायऽऽ करैत, कानि-कानि इशारा करै छल, जेकर मतलब रहै जे की हमरा किए बँचेलौं। मरए किए ने देलौं। हम फुटलाहा कौड़ी छी, हमरा मरए दिअ, पछाइत रमेसर गुरुजी दिस इशारा करैत बौकी प्रतिमान बनौलक। जेकर मतलब रहै जे ऐ भलमानसकेँ आ उद्धारक पतित पावन सन गुरजीक की दोष अछि? हमरे कारण हिनकर एतेक बेज्जती भऽ रहल अछि, तँए हमरा जाए दिअ।

बौकीक इशारा आ संकेत कियो बुझने हुअए आकि नइ बुझने हुअए, मुदा मास्टरनी 'पदमा' सभ किछु बुझि गेली आ बौकीक प्रति सहानुभूति रखैत ओकर हाथ पकैड़ अपना देहसँ सटा लेलैन। बौकीक आँखिक नोर पोछैत-पोछैत पदमाक आँखि सेहो नोराए लगलैन। रमेसर गुरुजी तँ लाजे मरैत रहैथ, सभकियो बुझबै आ समझाबैमे लागल रहैथ। दोसर दिस पनचैतीमे ओ दुनू गोटेकेँ नै एलासँ सरपंच साहैब भट्टीक आगि जकाँ धधकैत रहैथ। लोक सभ सरपंचकेँ बौकी आ घरक स्थिति बतौलैन। मुदा सरपंचपर तेकर कोनो असर नै भेलै, किएक तँ सरपंच बदलेक भावनामे जरैत रहैथ आ कठोर भऽ गेल रहैथ। तँए कहलैन कि किछु हुअ मुदा पनचैतीमे आबए पड़तैन आ आइ पनचैती सेहो हेतइ। दुनूटाकेँ नै एलापर पंचक फैसलापर दुनू गोटेकेँ गामसँ निष्कासित कएल जाएत। सरपंचक बात सुनि लोक अचरजमे पड़ि गेल, हे दैव ई की भेल आ नीक लोककेँ तीर किएक लागि गेल।

रमेसर गुरुजीक सदाचारी छवि उत्प्रेरक बनि पंचैती दिस मोड़लक, तहिना बौकीक शीलमणि सोभाव अप्पन पक्ष रखैक दिस उत्साहित केलक, तँए गुरुजी आ बौकी दुनू गोटे पनचैतीमे उपस्थित भेला। पनचैती शुरू भऽ गेल, तर्क-वितर्क, फरियाद आ वयान चलए लगल। सबहक नजैर तँ समस्यापर रहै, मुदा सरपंचक नजैर ओइ बौकीपर रहै, ओकर गोल-कपोल चेहरापर, गोर वदन आ सुड़ाहीदार गरदनिपर, कारी औंठिया केशपर आ देहक इजोतपर। ई अद्भुत छवि देखि सरपंचक आँखि चौन्हरा गेल रहइ। सरपंच दबंग आ हुश्नक दलाल छल तँए बौकीकेँ देखिते ओकरा अपन हवशक शिकार बनबैक फेड़मे पड़ि गेल आ झट-दे बाजल-

"सबहक बात, पक्ष-विपक्ष हम सुनि लेलौं। यौ गुरुजी, अहाँ कहलिऐ जे कि ऐ बौकीक इज्जत बँचाकऽ हम घर अनलिऐ, ई तँ

ठीक केलौं, मुदा एकरा संग केहेन सम्बन्ध अछि, से तँ बता दिअ। हम बुझै छी जे एकरासँ कोनो सम्बन्ध नै अछि, तँ एकरा छोड़ि दियौ। ई गामक राम-जानकी मन्दिरमे रहि अप्पन शेष जिनगी बितौत। ओना, तँ मन्दिरमे कोनो चीजक कमी नै अछि तेकर वाबजूदो हम समाजक लोक एकरा खाइ-पीबैक लेल चीज-वौस भेजैत रहबै।”

सरपंचक ई बात आ सुझाव लोक सभकेँ बेसी उचित बुझेलैन, तँए बेसी लोक हामी भरलखिन, मुदा बौकी ई सुनिकऽ छड़पटाए लगली आ ईऽऽ ईऽऽ ईऽऽ उऽऽ उऽऽ उऽऽ’ बाजए लगल, जेकर संकेत छल जे हम मन्दिरमे नइ रहब। बौकीक नजैरमे जे हुअए मुदा रमेसर गुरुजीक मनमे दोसरे आन्हड़-बिहाड़ि सदृश विचार उठए लगलैन। गुरुजी रहैथ इतिहासक अनुभवी छात्र आ पढ़ने रहैथ ‘देव-दासी’क बात। देव-दासी एगो एहेन प्रथा रहै, जइमे सुन्दर आ जुआन लड़कीसभ केँ मन्दिरमे समर्पित कए देल जाइ छेलै आ कहल ई जाइ छेलै जे कि आब ई ऐ मन्दिरक देवताक सेविका भेल, तँए बड़ भाग्यवती भेली, नियम-निष्ठासँ प्रभुजीक पूजा-अर्चना-भजन-कीर्तन करए आ ब्रह्मचारिनी बनि मन्दिरमे जीवन-यापन करए। भक्तगण हिनका ‘देवी’ कहि अभिवादन करतैन।

ई प्रथा तँ मानवीय जरूर रहै मुदा एकरा सुरा-सुन्दरीक लोभीसभ, हवशक भेड़ियासभ, दुषित आ कलंकित कऽ देलकैन, जइमे यौण-शोषण बेसी हुअ लगलै, देव-दासीक इज्जत कखनो मन्दिरक पुजारी तँ कखनो मंत्री-प्रधान जबरन लुटैत रहै आ देव-दासीक रूपमे ओ जुआन लड़की मन्दिरक धर्म-किलामे घेराएल सभकिछु सहैत रहल। किएक तँ ओ अबोध जखन पण्डित-पुजारीसँ पुछैन तँ पुजारी कहथिन जे कि ‘देव-दासी’क ऐ धर्म आ श्रृंगार छी। तर्क-वितर्कक पछाइत रमेसर गुरुजीक समझमे सरपंचक गलत

नियत आ हवश-नीति आबि गेलैन जे ई सरपंच बाज बनिकऽ आ बौकीकेँ कबूतर समैझ ओकर उगल उरोज आ फुलाएल अंगकेँ नोचए चाहैत अछि। दोसर दिस नारी धन्य पदमाक मनमे 'मन्दिरमे रखैक' बात लऽ कऽ उथल-पुथल अथवा समुद्रक ज्वार-भाँटा जकाँ विचार उठए लगलैन किएक तँ लगमे 'कामाख्या देवी'क मन्दिर सेहो छै, जे योनि-पूजाक लेल प्रसिद्ध अछि, नहि-नहि गे माइ, हम अप्पन बौकीकेँ ओइठाम किए जाए देब। बौकी हमर आब धर्मक बेटी छी।

पनचैतीक सभागारमे सरपंचक फैसलापर किछु देर धरि सन्नाटा पसैर गेल रहइ। चुप्प आ नि:शब्द। मौका पाबि आ अप्पन भांजल गोटी सुतरैत देखि सरपंच पुन: बजला-

"यौ पंच भगवानसभ, चुप्पीक अर्थ भेल सहमत, तँए चलै चलू ऐ गुंगी आ अनाथ लड़कीकेँ सनाथ बनाबैले कामाख्या देवीक मन्दिरमे हम सभ राखि दी।"

सरपंचक बात पूर्ण नै भेल रहै कि तही बीच सुगमलाल पंच उठिकऽ बजला-

"यौ सरपंचजी, गुरुजी रमेसर बाबूसँ आ हिनकर पत्नियोँसँ सहमति लऽ लिअ, तखन बौकीकेँ मन्दिर लाए जाएब। किएक तँ रमेसरबाबू बौकीक उद्धारक छैथ।"

सुगमलाल, ओ तँ गामक अथवा पंचायतक प्रतिनिधि नै छैथ मुदा उचितवक्ताक रूपमे हिनकर पहचान छैन्हे।

सुगमलालक बात सुनि सरपंच अप्पन दावकेँ आरो सुतारैत बजला-

"रमेसरबाबू, ऐ बौकीसँ कोनो सम्बन्ध जोड़थिन? आकि अप्पन पुतोहु बनौथिन? एक तँ गुंगी, दोसर जाति-धरम मालूम नै तँ केना स्वीकार करथिन?"

बौकी तँ हक्को-बिक्को आ हुचैक-हुचैककऽ द्रोपदीजीक चीरहरण जकाँ भऽ गेल रहए, बौकीकेँ एकबेर रमेसर गुरुजी द्रोपदीजीक चीरहरणक कथा आ दुशाशनक भूमिका सुनेने रहथिन जे बौकीकेँ खूब द्रवित केने रहै, तँए बौकीकेँ लागि रहल छेलै जे आइ एगो नै अनेक दुशाशन दहोदिसनसँ हमर वस्त्र खींच रहल अछि आ हमरो कखनो उघार कऽ देत। आ स्त्री सुलभ कोमल अंगकेँ नोचि-नोचि हमर लाज लूटि लेत। ऐठाम देवकीसुत अथवा जशोदाक नंदलाल तँ छैथ नहि जे रानी द्रोपदीजी जकाँ हमरो लाज बँचौता, एहेन फरिश्ता नै जे हमर उद्धार करता। बौकीक देहमे जेना जाने ने रहलै, दुनू कान साँइ-साँइ-साँइ करैत रहइ। रमेसर गुरुजीक खेमामे उदासी पसरल रहै, सभ खामोश रहैथ।

सरपंचक एगो दलाल ठाढ़ भेलै किएक तँ सरपंच आँखिसँ इशारा कऽ देने रहैन। ओ बेकती सरपंचक दारू-शराब, मुर्गा-भातपर जीबैत रहैन। ठाढ़ होइत ओ बाजल- “यौ सरपंच साहैब, अहींक जीत भेल, ऐ गूंगी लड़कीकेँ पकैड़ कऽ मन्दिर लऽ चलै छी। अहाँ पाछूसँ आएब।”

मनुक्खक ई फिदरत छी जे कि समयपर साँच उगैल दैत अछि। सरपंचक हवशी नीतिकेँ बुझि सुगमलाल फेर अप्पन इंसानियत देखबैत बजला- “यौ पंच भगवान, रमेसर गुरुजीकेँ किछु बाजए दियौन जे उचित अछि।”

आब पतितपावन रमेसर गुरुजीक दिलमे बैसल मानवता जोर मारलक आकि बौकीक प्रति पितृवत्सल्य सिनेह जागि उठलैन, जेना हुनकर पत्नियोँक मातृवत्सल्य सिनेह जागल रहैन। आब रमेसर गुरुजी पंचालयमे झट-दे ठाढ़ भेला आ पंचसभसँ करजोड़ि निवेदन करैत बजला- “यौ पंच परमेश्वर आ पंचशालामे उपस्थित सज्जनवृन्द, हम जाति-पाति नइ करै छी, भेद-भाव नै करै छी आ ने

हमरा मनमे छुआ-छूतक भावना बैसल अछि। हम एतबे बुझै छी जे बौकी एगो असहाय, अनाथ आ लाचार लड़कीसँ पहिने एगो इंसान छी। ने ई ब्राह्मणी छी आ ने धानुक छी, ब्राह्मणीयो भऽ सकैत अछि आ धानुकोक अंशजा भऽ सकैत अछि, मुदा एकर जिनगी कटि-पतंग बनि गेल अछि। पंचायतमे आ पंचशालामे ईश्वरक बास होइत अछि। गीतापर हाथ राखि हम सप्पत लइ छी आ ऐ अनाथिनी बौकीकेँ अप्पन पुतोहु बनाबै छी।”

ई सुनि पनचैतीमे ताली बाजल। बौकी लेल फरिश्ता आएल।

ताली शान्त भेला पछाइत सरपंच अप्पन भाँजल गोटीकेँ लिकपर सँ खसैत देखि सकुनी मामा जकाँ फेर पाशा फेकैत बजला-

“यौ गुरुजी, ऐ मे अपनेटाक विचार अछि आकि समस्त परिवारक, कनी हमसभ अहाँक पत्नियोँक विचार सुनए चाहै छी।”

तखने मास्टरनी सेहो बौकीक लाल जोड़ा आ लाल चुनरी ओढ़ाकऽ अप्पन पुतोहु स्वीकार करैत बजली-

“ई बौकी आब हमर पुतोहु छी तँए हमर इज्जत, मर्यादा आ कुलक श्रृंगार भेली।”

मुदा सरपंच रोकैत अप्पन शिकारपर फेर अन्तिम पाशा फेकलैन-

“बड़बढ़ियाँ, समुचित व्यौराक संग ऐ पेपरपर दुनू परानीक साईन अथवा सहमति हेबाक चाही।”

रमेसर गुरुजी आइ बड़ खुश छला किए तँ कहियो अपना पत्नीकेँ एतेक महान दिल आ सोच नै देखने छला। यौ भाव-भावनाक प्रेमी लोकनि, आब कहू जे कि दुनू परानीमे कोन फरिश्ता भेल? अहाँ सभ जे बुझलौं से अहाँ जानब, मुदा हम मास्टरनी ‘पदमा’क पक्षधर छी, किएक तँ पदमाजी बौकीकेँ लाल जोड़ा आ

लाल चुनरी ओढा कऽ जे शादी आ दुल्हिनक प्रतीक छी, ओकर छोट कपड़ा अथवा चीर बढ़ा कऽ कृष्ण जकाँ द्रोपदी-स्वरूपा बौकीक लाज बँचौलखिन आ पुतोहु बनाकऽ उद्धारो केलखिन।

रमेसर गुरुजी ओइ पेपरकेँ पढ़ए लगला। ओइमे बिआह-पंचनामा लिखल रहै, दुल्हा-दुल्हिनक नाम आ पता तथा कन्यापक्षक आ वरपक्षक ब्यौरा आ नीचाँमे दुल्हा-दुल्हिनक हस्ताक्षर अथवा निशान।

सरपंच साहैब फेर चालि चलैत बजला- "यौ मास्टर साहैब, कनी जोरसँ बाजिकऽ सूचना भरू।"

रमेसर गुरुजी तीव्रतर भेला- "दुल्हाक नाम 'लक्ष्य कुमार' दुल्हिनक नाम 'बौकी कुमारी...।"

बात पूर्ण भेलो ने रहै कि बिच्चेमे पदमा देवी बजली-

"बौकी कमारी नै विद्या कुमारी लिखू।"

गुरुजी लिखि लैत छैथ। ऐ तरहेँ सभ सूचना भरैत अछि मुदा जखन दुल्हाक माइक नाम 'पदमा देवी' लिखैत छैथ कि सरपंच तमतमा उठैत अछि, किएक तँ एकबेर सरपंचक अन्यायपर पदमा देवी आवेदिकाक रूपमे सरपंचक विरूद्ध थाना गेल छेली, जइ कारण सरपंचकेँ बड़ बेइज्जती भेल रहइ। सरपंच फेर पेंच लगबैत बजला-

"पेपरपर सबहक साईन हएत, लड़काकेँ बजा लिअ। ओकरोसँ सहमति लेब।"

सरपंचक धियान तँ बौकी आ ओकर जुआन आ तीरकमान दिस रहइ। माने, पकड़ल शिकारकेँ हाथसँ छोड़ए नै चाहैत छल। बौकीकेँ पबैले बुझू छड़पटाइत रहए। तँए सरपंच अपन तरकशसँ बेर-बेर नवका वाण आ दाव निकालैत रहए।

लक्ष्यकेँ सूचना भेटलै तँ मातृवत्सल्य आ पितृवत्सल्य प्रेमक रंगमे रंगल लक्ष्य कुमार दौड़ले आएल आ पंचालयमे उपस्थित सभ पंचकेँ सादर प्रणाम केलक। ओहन बेटा जकाँ नै जे अप्पन माए-बाबूकेँ मान-सम्मान आ इज्जत नहि दैत अछि। सरपंच लड़कासँ कहलैन- “अहाँक नाम की भेल? सभ किछु बता दिअ।”

लक्ष्य बाजल-

“हमर नाम लक्ष्य कुमार पिता- रमेसर लाल, माए- पदमा देवी, हम पटनामे पढ़ै छी।”

तपाकसँ सरपंच पुछि देलैन-

“बौआ, अहाँ पटनामे पढ़ै छिऐ तखन तँ साथीक संग-संग अहूँक नीक-नीक सपना होएत। राजकुमारीक, धन कुबेरक बेटीक आ कोकिल वयनीक तखन कहू, ऐ बौकी आ अनाथनी लड़की संग केना बिआह करबै?”

लक्ष्य सम्हरिकऽ बाजल-

“हँ, बिआह करबै, हम ओइ माए-बाबूक बेटा छी जे सदिखन मानव कल्याणक बात करैत रहला अछि आ पतितपावनक झण्डा लऽ कऽ मानवताक पथपर चलैत रहैलैथ। जे दोसराक कल्याणक बात सोचै रहै छैथ से केना अप्पन संतानक प्रति अधला सोचि सकै छैथ, हमहूँ हिनके सबहक रास्ताक बटोही छी, बौकीकेँ स्वीकार करब तँ बुझब जे माए-बाबूक संग-संग एक कदम हमहूँ चललौं।”

लक्ष्य कुमारक ई विचार सुनि तालीपर-ताली गड़गड़ाए उठल। मुदा पकड़ल शिकारकेँ पंजासँ छुटैत देखि सरपंच भीड़केँ शान्त करैत बजला-

“बौआ लक्ष्य, बड़ सुन्दर बात कहलहक। परंच तोहर उमर केतेक भेल छह जे बिआह करबहक?”

लक्ष्य उत्तर दैत बाजल- “सरपंच साहैब, हम बी.ए.मे पढ़ै छी आ उन्नैस बर्खक भेल छी।”

सरपंच बाजल- “अहाँ झूठ बजै छी, अहाँ नवालिक छी, अहाँक उमेर ब्याह करैक नै भेल अछि।”

सरपंचक ई बात पनचैतीकेँ घोरि-मथि देलक। सरपंच बाँहुबली रहए आ जबर्दस्ती बौकीकेँ लऽ जाइक फेड़मे रहए मुदा अधिकांश पंच ओइ हवशी आ दुष्ट निर्लज्ज सरपंचक गलत नियतकेँ जानि गेल। ओइ सरपंचक घोर विरोध भेल। मुदा सरपंचो टटाएले रहए। तँए दुनू तरफसँ ठनि गेल। ई सभ किछु बौकीकेँ कारणसँ होइत रहै, जेना विश्व सुन्दरी हेलेनकेँ लऽ कऽ ट्रॉय आ ग्रीकमे युद्ध होइत रहै आकि हेलेन अपनाक दोषी मानि शान्ति आ अमन-चैन स्थापित करबाक लेल आत्म हत्या कऽ लेने रहथिन तहिना बौकी सेहो छटपटाइत छल जे कि हमरा मरि जाए दिअ कियो नै रोकू। ने रहत बाँस आ ने बाजत बोसली। मुदा बौकीक सास ओकरा कसिकऽ पकड़ने रहथिन। पनचैती तेतेक सनसना उठल जे सरपंच आ सरपंचक पक्ष कमजोर पड़ि गेल, तखन ओ दोसर पेंच खोजए लगला। यौ कुलिन वर्गक आ अभिजात वर्गक सरपंच साहैब, ई राजतंत्र नै प्रजातंत्र छी। आब एक गोरेक बात नै दस गोरेक बात चलैत अछि अथवा मानल जाइत अछि, मुदा सरपंचकेँ एना लागल जे कि पकड़ल अनारकली हाथसँ छुटल जा रहल अछि तँए एगो पाशा पुन: फेकैत सरपंच बजला- “लड़काक उमेरक हमरा प्रमाण चाही, अन्यथा हम बाल-विवाहक धारा लगाकऽ पूरा परिवारकेँ जहल भेजबा देब।”

ई बात पंच सभकेँ अनरगल लगलैन, मुदा कानून तँ कानून होइत अछि, कानूनक हाथ-पैर आ जीह लम्बा होइते अछि, ऐ कारण प्रमाणक लेल राजी हुअ पड़लैन। सरपंच जी जाँच-टीमकेँ लौलैन।

लड़काक उमेरक जाँच भेलै आ लड़काक उमेर उन्नैस बरख आ उन्नैस दिन भऽ चुकल रहइ। आब सरपंचक हाल 'खिसयानी बिल्ली नंगरी नोचए' जकाँ भऽ गेलैन।

दोसर दिस बौकी, बौकी नहि विद्या कुमारीकेँ एना लागल जे एगो निर्बल बेंग कोनो सबल साँपक मुँह आ जबड़ासँ प्रभुक असीम कृपासँ बाहर निकैल आएल अछि। ऐ तरहेँ सरपंचक अनारकली, लाल कुमारी आ कि-कि न हेरा गेल। दोसर दिस रमेसर गुरुजीक हराएल आ ई कहियौ जे हेराइत इज्जत फेर भेट गेलैन। 'विवाह-पत्र' पर सबहक समुचित स्थानपर हस्ताक्षर भेल, संगे गुरुजी आ गुरुजीक समस्त परिवारक जय-जयकार भेल। यौ प्रिय पाठकगण आ काबिल मित्र लोकनि, कर्म करब नीक तँ नीके ने हएत आ जखन अधलाह करैक विचार मनमे आएत तँ बुधि पतालमे धँसि जाएत। जखन पापक आन्हड़-बिहाड़ि अबैत अछि तँ ज्ञानक गाछ खसि पड़ैत अछि। सएह सरपंचक संग भेल। किएक तँ ओकरा बौकीक उमेरक जाँच करेबाक चाही, जइसँ किछु फायदा होइत, मुदा बौकीक मस्त बदन आ देहमे आएल बसन्तक इजोतमे सरपंचक ज्ञान चौन्हराए गेल रहैन, जइ कारणेँ ओ भरल सभामे बेइज्जतीक संग हारला। ❑

3.

कूऽ कूऽऽ कूऽऽऽ सीटी बजबैत एकटा पैसेंजर ट्रेन मिथिला टिशनपर आबि रूकल तँ पैसेंजर सभमे ट्रेनपर चढ़ैक होड़ लगि गेल आ अफरा-तफरीक माहौल सेहो बनि गेल छल। तैबीच एकटा नमगर-छरगर आ लगधक छह फीटक सुडौल महिला पुलिस इंस्पेक्टर ओइ टिशनपर आबि गेली कि भीड़ अचानक शान्त भऽ गेल, मुदा टिशनक लोक वा यात्रीसभ ओही महिला इंस्पेक्टरकेँ देखए, कियो ओकर तिनटा स्टारकेँ देखए तँ कियो ओकर वर्दीकेँ, कियो ओकर तरूणाइकेँ तँ कियो रूप-लावण्यकेँ देखैत। लोकक नजैर ओकरा वदनपर सँ तखन हटलै जखन ओ ट्रेनमे प्रवेश केलीह आ अपना सीटपर बैस गेली। लाल टरेस आ गेहुमा रंगक ओ इंस्पेक्टर सबहक लेल कौतूहल बनल छेली। ओकरा बैजपर विद्या कुमारी पुलिस इंस्पेक्टर अंकित रहइ। टेनक यात्री तँ ओकरे दिस देखए परंच ओ अपना पाछूक जिनगी दिस देखैत रहली जइमे किछु जानकारीसँ परेक जिनगी रहैन- माता-पिताक अता-पता नइ, गाम आ गामक बात पारभासक शीशा जकाँ धूंधराएल-घँसाएल सेहो रहैन। जहिना तेज रफ्तारसँ ट्रेन दौड़ रहल छल, तहिना हुनकर माने विद्या कुमारीक अप्पन अतीतक रील उघरैत जा रहल छैलैन।

ऐठाम कर्मक खेल, धर्मक खेल आ ऊपरबलाक खेल देखियौ, जइसँ सत्यक जीत भेल आ भिखारीन बौकी दुल्हिन बनि गेली। रमेसर जकाँ आदर्श गुरुजी आ पदमा जकाँ मातृवत्सल्य प्रेमसँ लबालब भरल पदमाजीक पुतोहु बनि गेली। एतबे नइ, रोडपरसँ घर, घर नै कहियौ महलमे आबि गेली। बात हम साँचे कहै छी किएक तँ

सभ पंच आ सभ लोकनिकेँ सादर प्रणाम करैत आसीरवाद लैत अप्पन सासुक संग सासुर दिस विदा भेली। कवि आ कलमकार लिखै छैथ-

"सिया सन धिया चलली
अप्पन सासुर हे
हाथक कंगना खनके
पैरक नुपुर हे...।
सखी-सहेली रोबे
रोबे सर-समाज हे
बाबुल के घर छोड़ि
जाइ छैथ पिया घर... हे...।"

आदरणीय पाठकगण आ पुस्तक प्रेमी लोकनि, अपना ऐठाम माने मिथिलामे बिआहमे एगो एहेन रश्म-रिवाज छै जइमे दुल्हिनकेँ गृह-प्रवेशक काल एकटा बड़ कठिन रश्म निभाबए पड़ै छै। चाउरसँ भरल लोटा-कलशकेँ दुल्हिन अपना पैरसँ औंघराबैत अछि आ तइ संग-संग पैर बढ़ाकऽ सात गो दौड़ामे सम्हैरकऽ पएर रखैत अछि। बौकियोकेँ ई रश्म निमहेबाक रहै मुदा शीलवंती बौकी पएरसँ कोनो चीज-वौसकेँ मारनाइ आ ठेलनाइ अधर्म बुझै छेली तँए ओइ चाउरक कलशकेँ पैरसँ नइ मारि आगू बढ़ि गेली आ चंगेरामे सम्हैरकऽ पएर रखैत बढ़ैत रहली तँ दाइ-माइ आ हुनकर सास सभ रोकैत कहलकैन-

"एना नै करू कनियाँ, दोखी होएब, सभकेँ करए पड़ै छै।"

मुदा बौकी, आब बौकी नहि विद्या कुमारी सिर हिला कऽ नहिक संकेत देलैन आ उलटे दोखक इशारा केलैन। ई मर्यादित आ

आलोकितक ज्ञान रमेसर गुरुजी देने रहथिन किएक तँ गुरुजी बौकीक पढ़बैत-लिखबैत रहथिन। ई सोचि जखन बौकीकेँ शब्दक आ वाक्यक बोध भऽ जेतै तँ बाजिकऽ नइ तँ लिखियोकऽ तँ अप्पन विचार कहि सकत आ संगे भविष्य उज्जवल सेहो हेतइ।

यौ मानवताक पुजारी, गुरुजीक सोचनाइ एकदम उचिते रहैन किने, किएक तँ रतनसेरामे एगो बौका रहै, बड़ तेजस्वी आ सम्पन्न परिवारक। हुनकर बाबू हुनका समझा-बुझाकऽ पढ़ौलैन तँ मैट्रिक पास केलैन तखन कागजपर लिखि लोक सभकेँ अप्पन विचार बताबै छेलखिन। रमेसर गुरुजी तँए बौकीक धियान आ रुचि पढ़ै दिस लऽ जाइ छेलखिन। दोसर बात ओकरा एगो समतुल्य आ संतुलित लड़कीक रूपमे गढ़ए चाहैत रहथिन, सती सावित्रीक, सती सुकन्याक आ भुवनक भारकेँ हटबैक लेल अवतार लेनिहारि माता सीता आदि भारतक मनस्वनी नारीक कथा सुनबैत रहथिन तँए ओइ बौकीमे आदर्श नारी सुलभ गुण आबि गेल रहइ। जेकर यएह कारण रहइ। मुदा बौकीक ऐ बातसँ हुनकर सखी-सहेली आ दाइ-माइ बड़ असंतुष्ट रहैथ। दोसर दिस बौकियो अड़ल रहैन आ इशारासँ कहैत रहैन जे कि पैरसँ कोनो वस्तुकेँ नइ ठेलक चाही, एना केलासँ बड़ दोख लगै छै। पछाइत बौकीक जिद्दपर सभ चुप भऽ गेलखिन। रमेसर गुरुजी-लग जखन ई बात गेलैन तँ ओहो बौकीक पक्षमे समर्थन देलखिन। पहिने बौकीकेँ अनाथ मानि पढ़बैत रहथिन, मुदा आब तँ पुतोहुए बनि गेल छेली तँए बौकी यानी विद्या कुमारी अप्पन ससुरसँ संकेतमे कहलैन-

“ईऽऽ ईऽऽ, उऽऽ उऽऽ उऽऽऽ।” जेकर अर्थ भेलै कि बाबूजी, हम अहाँसँ पढ़िते रहब। कलमक प्रतिमान बनाकऽ सेहो देखा देलकैन। दोसर दिस रमेसर गुरुजी हुनकर विलक्षण बुद्धि आ प्रतिभासँ अति खुश रहै छला। जे टास्क दैत रहथिन, लिखकऽ बौकी

बता दैत रहैन। बौकीमे अलगे तरहक गुण देखै छला गुरुजी, तँए पढ़बैमे हुनका अत्यधिक मन लगैत रहैन। सचमे जे बच्चा मन लगाकऽ आ अप्पन गुरुजीक आज्ञानुसार पढ़ैए तेकरापर गुरुजीक बेसी नजैर रहिते अछि। आइ रश्म निमाहैक बातपर बौकीकेँ सभ स्त्रीगण घेरने रहैन आ रमेसर गुरुजीक पक्षधर बनलापर सभ शान्त भऽ गेल रहैथ। पछाइत असवर पाबि बौकी अप्पन पढ़ाइ जारी रखैक लेल ससुरकेँ कलमक प्रतिमान बनाकऽ देखबै छैन आकि हाथसँ कलम गिर जाइ छै आ टुटि जाइ छै। आर शब्द होइत छै-

"टूनऽऽऽ" संगे बौकीक अतीतक कड़ीक रील सेहो टुटि जाइ छइ। आब बौकीसँ विद्या कुमारी भेल महिला पुलिस इंस्पेक्टर जे मन रेलक संग उड़ैत रहै से असथिर भेलै आ ओ अपना दिस धियान देलैन आ डरसँ उत्पन्न घामकेँ पोछि लेलैन। कूऽऽ कूऽऽ कूऽऽऽ करैत रेलगाड़ी एगो टिशनपर रूकि गेल। टिशनक नाम 'सुन्दर ग्राम' रहै जेतए ओइ महिला इंस्पेक्टरकेँ उतरैक रहै, किएक तँ हुनका अप्पन ट्रेनिंगक सहेली 'आरती कुमारी', महिला दरोगाक ओइठाम जाइक रहै आ ओकर छोटकी बहिनक शादीमे भाग लेबाक रहइ। ओना तँ घर टिशनसँ लगेमे रहै, मुदा पहिल बेर रहने लोकेशनक खगता रहै आ टिशनपर उतैर कऽ निमंत्रण कार्डमे खोजैत रहैन। मुसाफिरखानाक यात्री सभ हुनकर गतिविधि हेरए लगलैन। ड्रेसकेँ बैजपर अंकित रहै- 'विद्या कुमारी, महिला इंस्पेक्टर, थाना कुंजनगर'। हुनका सुन्दर आ नमगर-छड़हर देखिकऽ अथवा एगो अलगे रूप देखिकऽ सभक नजैर हुनकेपर टिकल रहइ। सभक नजैर ओकरे दिस, जय जगदीश वाली बात रहइ। मुदा हुनकर सहेली जल्दी आबि हुनका अपना घर लऽ गेली। ओइ दिन बरातकेँ आगमन रहैन, विद्या कुमारी बढ़ि-चढ़िकऽ स्वागतक तैयारीमे लगल रहए, एक यूनिक ढंगसँ डोकरेट होइत रहइ, डोकरेशन अथवा

सजावट करैबलाकेँ सहयोगी बनल रहैन। मनमे ने तँ इंस्पेक्टरक रोब रहै आ ने कोनो मनमे गरूर रहै तँए सभकियो हुनकर बड़ाइ करैत खुश रहैथ। मुदा हुनकर सहेलीक माए हुनका व्यस्त रहैत देखिकऽ आ मेहमान समैझ मिथिलाक ई गौरव संस्कृति 'अतिथि देवो भव:' केँ बचबैक लेल काज-विरामक लेल कहैत रहैन, शायद हुनका ठीक नै लगैत रहैन परंच विद्या कुमारी बेसी उत्साहमे रहैथ।

समयपर बारात आबि गेला, गाड़ीक पी.पी.पी..., शहनाइक मधुर अलाप, मंगल गीतक बहार आ फुलझड़ीक दिव्य ज्योतिसँ आँगन-दरबज्जा चमकैत रहए। बारातक मन जेतए सुन्दर सुगन्धित फूलसँ अलंकृत आ रचित 'चन्द्रा संग रवि' देखि प्रफुल्लित भेल रहै तइसँ बेसी बिआहक कार्यक्रम देखिकऽ हलसाएल रहइ। सभ लोकनि गद-गद रहैथ आ प्रेम-सिनेहक गंगा-यमुना बहैत रहए, तइपर दुल्हाक नाम 'रवि' आ दुलहिनक नाम 'चन्द्रा' सेहो आकर्षित करैत रहइ। शादीमे शुभम-मंगलम् जरूरी रहैत अछि तँए मिथिलांचलमे शादीमे दुल्हिनकेँ लाल जोड़ा आ लाल चुनरी पहिराएल जाइत अछि। ऐ रश्मक लेल इंस्पेक्टर विद्या कुमारीकेँ भार देल गेलइ। अप्पन काज ठीकसँ निर्वहन करैवाली विद्या कुमारी चन्द्राकेँ लाल जोड़ा आ चुनरीसँ ओकरा श्रृंगारित केलैन आ आर सुन्दरकेँ लेल सरिआबै लगलैन कि हुनकर टुटल अतीतो सेरियाए गेलै अथवा अतीतक कड़ी पुन: जुटि गेलै किएक तँ सरपंचक पंचैतीमे हुनकर सास बड़ सुन्दर ढंगसँ आ बेसी अनुभव राखि हुनका लाल जोड़ा आ चुनरी पहिरेने रहथिन। पंचैतीमे अप्पन हार देखि आ अपमान देखि ओइ सरपंचक देहमे मिरची लागि गेल रहइ। इइ-खीससँ ओकरा राति-दिन नीने ने होइ छेलै। रातिमे बौकीएक सपना देखैत रहए तँए ओकरा हाँसिल करैले चालि-पर-चालि बदलैत रहए आ जाल बुनैत रहए। अप्पन गुण्डा सभकेँ भेजैत रहए आ बौकीकेँ

अपहरण करैले रुपैआ-पैसा, मुर्गा-मसल्लम आ कीमती शराब दैत रहए, मुदा तैयो हाथ नै लगैत रहइ। ओइ सरपंचक नाम शेरा रहै जे शेरा गंजी, शेरा टी-शर्ट आ शेरा जंघिया पहिरैत रहए। जइसँ हीरो जकाँ स्मार्टक शो दैत रहए, मुदा सभ शो ओकर नकली रहै किएक तँ ओ सरपंच भारी क्रिमिनल रहए आ गेंग चलबैत रहए। डकैती, लूट, बलात्कार, गेंग रेप, अपहरणमे संलिप्त छल। ओकर रंगल नढ़िया जकाँ रूपक विष बड़ कम लोक जनैत रहैन, लोकक नजैरमे नेक बनल रहए परंच दबंगतासँ सरपंच बनल रहए। एहि तरहेँ ओ नायक नै खलनायक रहए। शेरा नामो रहै आ दुबर-कमजोर-निर्धन आ लाचार लोककेँ अप्पन शेर गर्जनसँ डरबैत सेहो रहए।

एक बेर ओ शेरा सरपंच अपना दरबज्जापर उदास बैसल रहए। तखने ओकर गेंगक माजल खेलाड़ी आबिकऽ सूचना दैत कहलकै- “यौ सरदार, आइ हाथ लागि जाएत शिकार, बौकी दुनू परानी गेल अछि बाजार, चलू-चलू खेलए शिकार, जुनि होउ उदास।”

अपना गेंगक एगो शातीर बदमाश बारुदक ई सूचना सुनि शेरा बड़ खुश भेल आ एगो आओर बदमाश ‘बादल’केँ संग करि कऽ ओइ बौकीक अपहरण करैले विदा भेल। मुदा रमेसर गुरुजीक एगो दोस्त देखि लेलकैन आ शंका भेलैन, ओकर नाम हितलाल रहइ। हितलाल दौड़कऽ गाममे ई बात बतौलैन कि सरपंचजीक किछु लठैतकेँ संग जाइत देखलौं हेन, बुझना जाइत अछि जे ओ किछु काण्ड करत, तँए हमरा सभकेँ ई घटनाकेँ देखबाक अछि आ सावधान रहबाक अछि। ई सुनि गामक किछु जुआन आ मर्द अन्होनी बुझि विदा भऽ गेला। दोसर दिस गाममे हलचल मचि गेल आ हँसेड़ीक जुटान हुअ लगल। जइमे जवान आ मर्द आगू बढ़लैथ ओकरो देर भऽ गेल छेलै किएक तँ ताबत धरि बौकी दुनू परानीकेँ

शेरा आ शेराक आदमी पकैड़ लेने रहैन आ लक्ष्यकेँ पिटैत रहैन आ बौकीक हरणक जोगारमे रहैन, तखनियेँ लोकसभ आबि गेलैन जइ कारण सरपंच आ सरपंचक गुण्डासँ मुठभेड़ हुअ लगलै, मौका पाबि शेरा बौकीकेँ लऽ कऽ भागए लगलै कि रस्तामे गामसँ अबैत गामक हँसेड़ी ओकरा घेरि लेलकै आ बौकीकेँ छीनि लेलकै, मुदा तैबीच सरपंच साँझक कारी सियाह फैलाएल सम्राज्यसँ मौका उठा कऽ अप्पन लश्कर आ गुण्डाक संग भागि गेल। पछाइत सभकियो लक्ष्य लग पहुँचला, लक्ष्यकेँ पीटि-पीटिकऽ बेहोश कऽ देने रहैन, गनिमत ई रहै जे गोली-बारुदक प्रयोग नै भेल रहै, जेकर मतलब ईहो भइये सकैत अछि जे कि आवाजक आ लोकक डर भेल होइन। खाएर, लक्ष्यकेँ सभ मिलि-जुलिकऽ अस्पतालमे भर्ती केलैन आ बौकीकेँ देख-रेखमे छोड़ि गाम आबि रमेसर गुरुजीकेँ सभ घटना सुना देलकैन। रमेसर गुरुजी ई सुनिते सपरिवार अस्पताल दिस दौड़ पड़ला। रमेसर गुरुजी डॉक्टर साहैबसँ सभ रिपोर्ट लेलखिन।

डॉक्टर साहब बजला- “यौ गुरुजी, चोट बड़ लागल छै आ बेसी घायल छै, परंच खतरासँ बाहर अछि, घबड़ाइक नै अछि। तीन-चारि दिनमे सभ किछु ठीक भऽ जाएत।”

रमेसर गुरुजीक परिवारक सभ लोक कनैत रहैन, खुद रमेसर गुरुजी सेहो, मुदा डॉक्टरक आश्वासनपर सभक संग पदमा चुप भऽ गेली आ अप्पन पुतोहु विद्या कुमारीकेँ सेहो चुप केलैन। ओना तँ ऐ घटनासँ रमेसर गुरुजीक समस्त परिवार दुखी भेल रहैन मुदा बेसी दुखी ओ बौकी अर्थात् विद्या कुमारी भेल रहैन किएक तँ बड़ मुश्किलसँ आ ईश्वरक असीम कृपासँ कहियौ आकि संयोगेसँ ओकरा लक्ष्यक संग बिआह भेल रहै, तँ किएक ने चिन्ता हेतैन, जइ कारणेँ जिनगी जियेक आश-विश्वास आ आधार भेटल छेलै, तँए ओ अपना पतिसँ एना चिपैक गेल छेली जे कि दिलमे रहैन हमहूँ अहींक

संग मरब।

जखन डॉक्टर साहैब ई कहलैन जे कि आब कोनो खतरा नइ छै मुदा लक्ष्यकेँ किछु दिन धरि क्लिनीकमे रहए पड़तै, अखन सुइयाक प्रभावमे अछि आ नीनमे सुतल अछि, तँ सभ चिन्तामुक्त भेला।

विद्या कुमारी अस्पतालमे रहि राति-दिन अपना स्वामीक देख-रेख आ सेवा करैत रहली आ अप्पन पत्नी-धर्मक पालन करैत रहली। हुनकर पति-सेवासँ सभ लोकनि बड़ खुश रहैथ आ बजबो करैथ जे अपना स्वामीकेँ सत्यवान मानैए। ऐ तरहेँ पत्नीक प्राण प्रतिष्ठानक सेवासँ आ राति-दिनक सेवासँ लक्ष्य समयसँ पहिने ठीक भऽ गेला। डॉक्टरकेँ संग-संग सभकियो विद्या कुमारीकेँ मनसँ शुभकामना देलैथ। लक्ष्य कुमारो सभकेँ सादर प्रणाम केलैन। अस्पतालसँ लक्ष्यकेँ घर लऽ अनलैन। लक्ष्यक माइ आइ बेसी खुश छेली किएक तँ बौकी लऽ कऽ लक्ष्य दुनू परानीमे सदैत नोक-झौंक आ नाकुर चलैत देखै छेली, जे आइ किछु फर्ख देखलैन। मतलब बौक बुझि बेटा बौकीकेँ ओतेक पसिन नइ करै छेलैन आ कपिपय ठीको छेलै, ई चलनसारि समाजमे छेलै आ अखैनियो अछिए।

बौकी-बौका कानक बहिरो आ संगे अल्हबटाह सेहो रहैत अछि, परंच ई चलनसारिकेँ अथवा समाजक एहेन गलत मानसिकता बौकी अथवा विद्या कुमारी सिरेसँ खारिज कऽ देलखिन। तेकर वावजूदो विद्या कुमारीकेँ ओइ सुहाग-रातिक डर मनमे पैसल रहै, जे अपना कनियाँकेँ बौकी समैझ लक्ष्य कोनो गप-सप्प नइ केलैन आ अलगे सुति रहला, तहिना आनो दिन करैत रहला, मुदा शीलवंती आ सुशीला बौकी जिनगीकेँ ऐ जहरकेँ घोंटि-घोंटि पिबैत रहली। पछाइत लक्ष्य कौलेज चलि गेल रहैथ। ई सभ बात आ भावना लक्ष्यक माइ पदमा जनैत रहथि, तँए बेटामे किछु

फरख आइ देखि अथवा बौकीक प्रति प्रेममय देखि बेसी हरखित छेली।

साँझक बेलाक आगमन भेल कमलक फूल अप्पन फलकल मुँहकेँ चपूत लेलक, दुपहरिया फूलो डारिमे मोलाए गेल आ लोक सभ अपना-अपना घर चलि गेला। किछु देरक पछाइत आसमानमे तारा उगए लगल। विद्या कुमारी भनसा करैक लेल किचेनमे एली मुदा सासु माँ ई कहि रोकि देलखिन जे कि बौआकेँ अहाँक जरूरत छै तँए कनियाँ अहाँ बौए लग रहू। खाना बनल आ ड्राइंग टेबल सजाओल गेल। घरक मुख्य मालिक रमेसर गुरुजीकेँ बैसिते आरो सदस्य सभ बैस गेला, तही बीच मास्टरनियो आबि गेली आ बौकी पुतोहुकेँ बैसल नइ देखि बजली- "आजुक दिन हमर विद्या कुमारी पुतोहुक छी, किएक तँ हिनके सेवाक बले हमर बौआ जल्दी ठीक भेल हेन, तँए विद्या कुमारीकेँ बेसी मान भेटक चाही।"

भोजनोपरान्त परिवारक सदस्य अपना-अपना रूममे चलि गेला। रातिचर चिड़ै ची-ची-ची- करए लगल जे एक पहर बीतल रातिक सूचना रहइ। घरक सभ लोक अपना-अपना कोठरीमे चलि गेल रहैथ आ विद्या कुमारी दुनू परानियो अपना कोठरीमे रहैथ। आइयो बौकीकेँ मतलब विद्या कुमारीकेँ पति द्वारा अपमानित होइक वेदना सता रहल छेलै जे अलगे सुतैत रहए, मुदा विद्या कुमारी हिम्मत बान्हि पत्नी-धर्मक पालन लेल, हुनक देख-रेखमे आ सेवामे जुटि गेली कि लक्ष्य बाजि उठल- "हटि जाउ, हमरा देहमे नइ भिरू।"

ई सुनि विद्या कुमारीक मनमे टिस भेलै, परंच पुन: अपनाकेँ सम्हारैत आ इशारा करैत ईऽऽ ईऽऽ उऽऽ उऽऽ उऽऽऽ बजली, जेकर मतलब ई रहै जे अहाँक सेवाकेँ जरूरत अछि आ हम अहाँक पत्नी

छी, हमरा सेवा करैक छुट दिअ। जखन दुबारा विद्या कुमारी हिम्मत करिकऽ लग गेली कि लक्ष्य ओकरा पकैड़ कऽ आलिंगन-चुम्बन बरसाबए लगलैन, देह आ अंगमे पतिक हाथक स्पर्शसँ विद्या कुमारी छुइ-मुई बनि गेल छेली, प्रेमक बरसा थमैक नामे नइ लैत रहै किएक तँ लक्ष्य अप्पन सुहागरातिक बदला सूद सहित लिअ चाहैत रहैथ। दोसर दिस विद्या कुमारी दाम्पत्य जीवनक आ प्रेमक जलधिमे उग-डुम करै छेली। आइ बियाहोपरान्त केतेक दिनपर पति-प्रेमक आनन्द भेट रहल छैलैन, होठक रसाकर्षण अथवा मुख-चुम्बन तँ दिव्य रहैन, जे ओकर कानक दुनू बलिया नाचि-नाचि कहैत रहै, ओकर कुशियार जकाँ पोर-पोर भरल आ रसाएल बदनकेँ लक्ष्य जेना आइये चुसि लिअ चाहैत रहैथ, मुदा विद्या कुमारी पतिसँ छुटकारा पबैक लेल जेतेक प्रयास करै छेली ओतेक जोरसँ ओकर हाथक कंगना खन-खन बजैत रहै, जे ओइ प्रेम-मिलनकेँ तालकेँ आरो सुरमय करैत रहइ। किछु हुअ, आइ विद्या कुमारियोकेँ सुहाग रातिक सुखद आनन्द भेटैत रहइ। पछाइत विद्या कुमारीक जीत भेलै आ अपना पतिक बाहुँपाशसँ मुक्त भेली। पति कहलकैन- “अहाँ तँ सुन्दर छीहे मुदा अहूँसँ सुन्दर अहाँक मन अछि, तँए सबहक नयनतारा बनल छी। मुदा बोलीक खगतामे अहाँक सभ सुन्दरता कपूर जकाँ उड़ि जाइत अछि आ देहक कांति सेहो निस्तेज भऽ जाइत अछि, तँ कहू हम केना पसिन करब?”

ई सुनिते बौकीक आँखि डब-डबाए लगल आ कानए लगल।

यौ प्रिय पाठकगण, बौकीक कानैक मतलब की भेल? ऐपर विचार करक चाही। लक्ष्यक उद्देश्य कनाबैक नइ रहै बल्कि किछु कहैक रहै, तँए अपना रूमालसँ ओकर नोर पोछैत पुन: बजला- “अहाँकेँ हम पसिन करै छी किएक तँ हमर कनियाँ छी, परंच बेसी पसिन तखन करब जखन अहाँ पढ़ब-लिखब आ समाचारक लेल

अखबार पढ़ए लागब, किएक तँ शिक्षे अहाँक बोली बनत आ सुन्दर बनाएत। अहाँ बाबूजीक स्कूलमे मन लगाकऽ पढ़ै छीहे, आर बेसी धियान दऽ कऽ पढ़ैत रहू, बुझलौं किने?”

अपना पतिक ई सहानुभूति आ अमृतवाणी सुनि डेराएल विद्या कुमारीक गाल लाल भऽ गेल, जेना बगुरक बनमे गुलाब खिल जाइत अछि, तँए सिर हिलाकऽ मानि लइ छथिन। लक्ष्य अप्पन बात पूरा करैत पुन: बजला-

“बाहरक सुन्दरता क्षणिक होइत अछि, परंच भीतरी सुन्दरता-सुन्दर मन, सुन्दर शिक्षा आ सुन्दर बेवहार सदिखन संग दइ बला सुन्दरता छी, जे केकरो हृदयक कपाटकेँ खोलि सकैत अछि। बुझलौं आकि नइ बुझलौं?”

विद्या कुमारी अप्पन पतिक ई मर्यादित आ मार्मिक विचारसँ बहुत प्रभवित भेली आ हुनकर विद्वताक कायल, प्रशंसक भेली। तँए पुन: अप्पन सिर हिलाकऽ स्वीकार केलैन। पतिक ई बात जेना विद्या कुमारीकेँ भीतरी धरि खुशी भरि देने रहैन आकि विद्या कुमारी अचानक हँसि उठलखिन तखनहि पुन: लक्ष्य हुनका बाहुँपाशमे जकैड़ लैत छथिन आ आलिंगन तथा चुम्मा लैत बजैत गाबए लगै छैथ- “कनी हँसियो ने सजनी चमेली लगै छी

दिलक भाट्ठीसँ हम धक-धक करै छी।”

यौ विद्वतजन प्रिय पाठकगण, दुनू परानीक संग एहेन समा बन्हाएल जे कहैए-

“राति सुहानी, चली हवा मस्तानी

हँसिते-खेलिते बीततै जिनगानी।”

आ सुग्गा-सुग्गनीक लाल चोंच मिलि गेल होइन। ऐठाम कहल जाइत अछि- “जे कहियो नइ से आइ।”

यौ समाजक लोक, कहू की बुझलौं? की बौक लड़कीकेँ मन आ दिल नइ होइ छै? आकि दिलमे इंसानियत, विचार आ प्रेम-अनुराग नइ होइ छै? सभ किछु होइ छइ। कनी प्यार करि कए तँ देखियौ, सभ किछु देत। तँ कहू ओकरा अर्थात् बौकी सभकेँ अप्पन समाज केना भिखमंगनी बना दइ छिऐ आ भुखाएल हवशी लोककेँ आगाँ परोसि दइ छिऐ? एतबे नइ, जखन कोनो दरिन्दा ओकरा नोचए लगैत अछि, तखन अहाँ चूप रहै छिऐ, आँखि मुइन लइ छिऐ, तँ कहू के बौक भेल? आकि के आन्हर भेल? यएह ने दलील देबै जे ओ दरिन्दा तँ दबंग अछि, नेता अछि तँ हम केना किछु कए सकब। यौ भाय, जखन मानवताक गाछ हिल जाएत आ इंसानियतक पत्ता गिर जाएत तँ की धर्मक स्वरूप रहि पाएत? मानवीय चमने ने उजैड़ जाएत। ई विचारणीय प्रश्न छी।

भुरुकबा तारा, जेकरा खगोल साइन्सक विद्यार्थी शुक्र ग्रह मानैत अछि आ जे भोरमे बेसी इजोत दइ छै, पूबमे चमकैत रहैए। विद्या कुमारीक सासु अप्पन पुतोहुक भविष्यक रचना करै छेली। हुनका नीन नइ होइ छेलैन, किएक तँ लक्ष्य अप्पन पत्नीसँ प्रेम नइ करै छला, सदैत दूर रहै छला, तँए सासु अप्पन बेटा-पुतोहुक कोठरी लग आबि सदैत मंगल दिनक अर्थात मधुर मिलन दिनक प्रतीक्षा करैत रहै छेली। आइ पलंगकेँ चू-चू-चू आ तइ संग चुड़ीक खन-खन, नुपूरक रुण-झुण करैत सुनि सास बेस आह्लादित भेल छेली, किएक तँ ई सभ मधुर मिलन आ प्रेम-प्रीतिक संकैत दइ छेलइ। पछाइत भोरमे विद्या कुमारी अप्पन शयन कोठरीसँ बाहर झटपट निकैल अप्पन साड़ी सेरियाबए लगली कि तखनहि हुनक सासु आबि गेली। आब तँ विद्या कुमारी लजा गेली आ झट-दे माथपर साड़ीक पल्लू लऽ लेलीह आ सासुकेँ गोड़ लागि आशीर्वाद सेहो लेली, मुदा अप्पन बिगड़ल केश आ सिनूर देखबे ने केलीह जे सासु देखलखिन। सासु

पदमा पुछलखिन- “यै कनियाँ, अहाँक नाकक ठुमका नइ देखै छी?”

सासु तँ सभ किछु बुझि चुकल छेली तैयो अंठाकऽ पुछै छेली जे कि ठुमका प्रेम-प्रसंगक आनन्दक क्षणमे बाधा उत्पन्न करैत अछि। ‘ठुमका’ शब्द सुनिते, जे नाकसँ छुटल रहए, हुनकर अतीतक कड़ी सेहो छुटि गेलैन, अर्थात् आब विद्या कुमारी अप्पन वर्तमानक दर्शन करए लगली, किएक तँ सहेलीक बहिनक बिआहमे विद्या कुमारी स्वयं अपना हाथसँ ‘ठुमका’ पहिरेने रहथिन। ई बात अहीठाम रहए दियौ।

सोमन पण्डित आ ओकर पत्नीकेँ जखन ई पता लगलै जे कि हमर बेटी बौकी ममहरमे नइ अछि, टिशनपर सँ हेरा गेल अछि जे खबर ओकर सार विनाश पण्डित आबिकऽ देने रहैन, ई खबर सुनि दुनू परानीकेँ ‘काटू तँ खून नहि’ सन हाल भऽ गेल रहइ, जेना बकजर लगैत अछि। बौकी रहैन आ जे रहैन मुदा बेटी तँ रहबे करैन, अहूमे एकलौती सन्तान। सोमन पण्डित तँ खोजैमे अप्पन ऐड़ी-चोटीक पसेना एक कऽ देलैन- कर-कुटुममे आ टिशन-टिशन जा कऽ सौंसे ताक-हेर केलाह, मुदा कोनो सुराग नइ भेटलै। दुखित एतेक भेलाह जे खेनाइ-पीनाइ किछु ने सोहाइ छेलैन। आब हराएल बेटीक आशमे ओझा-धाइम, पूजा-पाठ आ तीरथ-धाम करए लगला। परंच किछु सफलता नै भेटलैन। आखिरमे गली-कुची, पानि-थालमे सेहो खोजए लगलाह, जेतउ ने रस्ता रहै, तेतउ रस्ताक खोज, जेना वास्कोडिगामा 1494 इस्वीमे भारत आबिकऽ जल-मार्गक खोज केने रहैथ तहिना कोलम्बस 1492 इस्वीमे अमेरिकाक खोज केने रहथिन। सोमन पण्डितो तँ केतेको रास्ता खोजि लेलैन अथवा बनौलैन, मुदा बेटी नइ भेटलैन। पत्नीक हालत तँ आरो खराब भेल जा रहल छेलैन, चिन्तामे घुलाएल आ सोगमे सोगाएल रहैथ। बेटीकेँ

नइ देखि रहि-रहिकऽ हुदक्का उठैत रहैन आ आँखिसँ गंगा-यमुना बहैत रहइ। देह सुखिकऽ लकड़ी आ पएर सुखिकऽ टिटहीक टांग सन बनि गेल रहैन। जखन-तखन कानए लगैत रहैथ आ बजबो करैथ- "हमर भैया, हमर दुश्मन छी, हमरा बेटीकेँ बेचि लेलक।"

जेना-जेना ममताक बाढ़ि बढ़ै तेना-तेना हृदयक धौकनी सेहो बढ़ैत जाइ, जइ कारणेँ मानसिक संतुलन सेहो बिगड़ैत जाइ। छाँहकेँ देखि ओकरा पकड़ए लगैत रहैथ आ- 'हमर बेटी आबि गेल' कहैन। सर-समाज आ गामक दाइ-माइ आबिकऽ दुनू परानीकेँ समझा-बुझा दैत रहैन। यौ काबिल मित्र, बौकीक माइ नइ ममता कानैत रहै, जेकर महिमा हम सभ जानै छी। जे छातीसँ अमृत पीयौने रहैन, से सुखि गेल रहै आ जे अँचरामे झाँपि स्तन-पान करबैत रहै छेली, से नोरसँ भीज गेल रहैन। पछाइत दुनू परानी बेमार रहए लगला। गाममे किछु एहनो लोक रहैथ जे कहैन कि धुर, बौकीक लेल किएक अनेरे एते कानै छी, गामक भार हल्लुक भेल।

दोसर दिस बौकीसँ विद्या कुमारी भेल आ माए-बाबूक देल नाम रूपा कुमारीकेँ बेसी घृणा आ दुख भेल रहै किएक तँ हुनका नजैरमे ई रहै जे कि माए-बाबूजी तँ खोज-पुछारि नहियेँ करैत छैथ तँए संग सर-समाजो नइ खोजैत अछि। सर-समाज किए खोजत, बौकीकेँसमाजक अभिशाप जे बुझैत अछि तँ नजैरसँ दूर रखैक फेड़मे जे रहैत अछि। की ई सोच उचित छी? बौका-बौकी अन्हरा-अन्हरी, नेंगरा-नेंगरी आदि विकलांगक कोनो मोजरे ने अछि। गलाक घेघ बुझै अछि, माटिक ढेपा समझैत ओकरा फेंक दैत अछि, मुदा माटियोकेँ अपना स्थानपर महत्व छै, ई किसानेटा बुझत तँ भेल। महान कवि 'सुरदासजी' विरचित 'भ्रमर गीत' आ आन-आन कविता हमरा सबहक सामने अछि जे हमर बी.ए. हिन्दी ऑनर्सक विद्यार्थी आ स्नात्कोत्तरक विद्यार्थी पढ़ैत अछि, जइमे श्रृंगार रसक,

विरह पक्षीय गीत अछि आ बेस प्रसिद्ध आ मनोहर अछि। ऐ 'भ्रमर गीत'मे कृष्ण आ राधाजीक विरह वेदना लिखल गेल अछि जे बेस मर्मज्ञ अछि। आब कहू, हुनकर नामेटा सुरदास बुझै छिऐ आकि ओ आँखिसँ आन्हर रहैथ, सेहो बुझैत छिऐ, तँए की एहेन हीराकेँ फेंक सकै छी? महाभारतमे हस्तिनापुरक राजा धृतराष्ट्र आन्हर रहैथ आ मामा शकुनी नाँगर रहैथ। एतबे नइ द्रोपदीक चीरहरण बेर समस्त सभासद भेल रहैथ, कियो नइ किछु बजै छला। सभ चुप्प। भीष्म पितामह जकाँ शूरवीर अजय योद्धा सेहो ओइ जूलुम आ अधर्मक समय चुप रहला। आब कहू, मूक के?

हम ओइ बौकीकेँ पुन: सामने लाबै छी, जे उज्ज्वल प्रतिभाक धनी छेली, पतिपरायणा आ मनस्वनी नारी छैली। तँए अप्पन पतिक आज्ञाक पालन लेल ससुरक प्राइवेट पाठशालामे मन लगाकऽ पढ़ए लगली, जेकरा समाज पसिन नइ करैए आ कहैए, पुतोहु ससुर सँ नइ बाजि सकैत अछि आ ने पढ़ि सकैत अछि। ई मर्यादाक खिलाप भेल। परंच समाजकेँ बुझक चाही आ ऐ रीति-रिवाजमे ढील देबाक चाही, किएक तँ ससुर पिता-तुल्य होइ छै, पतिक जे पिता भेल सएह ने पत्नीक ससुर भेला, तँ पिता आ ससुरमे की अन्तर? ससुर जँ बेसी काबिल योग्य, जज आ विद्वान शिक्षक रहता, तँ पुतोहु किए ने हुनकासँ ज्ञान सीखती आ पढ़ती लिखती? जे बेसी कारगर हेतैन। आजुक मोडर्न युगमे समैधो-समधिनकेँ शिक्षा आ मार्गदर्शन दऽ कऽ शिक्षिका आ अफसर बनबैत छथिन। फिल्मोमे हमसभ देखै छी जे कि समैध आ समधिन आपसमे बातो करै छैथ आ संग-संग गीतो गाबै छैथ। तँ कहब जे एहेन मानसिकताकेँ पाछू छोड़ू आ उन्नतिक लेल आगू सोचू। खाएर जे करब से करू, स्वतंत्र छी, मुदा बौकी अपना ससुरसँ शिक्षा ग्रहण करैत रहली। ओना तँ बच्चाकेँ पहिल शिक्षक माए-बाबूजी होइ छैथ मुदा ऐठाम बौकीक पहिल शिक्षक

हुनकर ससुर भेला। आब कहू, ई केना भेल? जे भेल आ जेना भेल, मुदा अप्पन पुतोहुक कुशाग्र बुद्धि आ प्रतिभासँ ससुर 'रमेसर गुरुजी'कैँ बेस खुशी आ अचरज भेलैन। जेना चान अविराम अप्पन स्वरुप बदलैत रहैए आ बदलैत-बदलैत पूनमक चान बनि जाइए, तहिना विद्या कुमारी शिक्षा-गगनमे चान बनि शैक्षणिक संस्कारकैँ आ फलककैँ विस्तार करैत रहली, पाछू घुमिकऽ नइ देखली सदैत आगू बढ़ैत रहली। अखबार पढ़नाइ जल्दीए सीखि गेली, जे मात्र लक्ष्य कुमारक लेल नइ सबहक लेल बड़ अचरजक बात रहैन, एकरे कहल जाइ छै 'चारि चान लगेनाइ' से विद्या कुमारी अप्पन विलक्षण प्रतिभासँ करिकऽ देखौलैन आ अप्पन पतिक प्रतिष्ठा बढ़ौलैन। रमेसर गुरुजीकैँ अपना पुतोहुकैँ पढ़बैत बड़ नीक लगै छेलैन किएक तँ जेना बेवहारमे तेज रहैन तहिना पढ़ैमे तेज- कुशाग्र दिमागवाली आ तहिना सुन्दर विचारमे तेज सेहो रहैन। लोक तँ 'सुमति'क लेल भगवानसँ प्रार्थना करैत अछि, मुदा सुमतिसँ अलंकृत आ अभिषिक्त विद्या कुमारी सुमतिक धारे बहबैत रहैन जे नयका पीढ़ीक लड़की सभक लेल कल्याणकारी आ सुधाक समान रहइ। रमेसर गुरुजी हुनकर हाँ-जवाबी उत्तरसँ जे शब्दाचारसँ दैत रहैन बड़ प्रभावित छेलखिन, तँए विद्याक प्रति आ शिक्षाक प्रति हुनक विशेष ललक देखि रमेसर गुरुजी मैट्रिकमे फार्म भरा देलखिन। कदाचार मुक्त परीक्षा होइत रहै, तेकर वावजूदो बौकी यानि विद्या कुमारी सेकेंड डिवीजनसँ मैट्रिक पास भेल रहैन। ई अविश्वसनीय खबर सुनि घर आ बाहरक लोक सभ बड़ खुश भेल रहैथ। बौकी असम्भवकैँ सम्भव करिकऽ देखा देने रहैन। सभसँ बेसी खुशी लक्ष्य कुमारकैँ भेल रहैन। किएक तँ आब हुनको ई शानसँ कहैक अधिकार भेट गेल रहैन जे कि आब हमरो कनियाँ मैट्रिक अछि। ऐ खुशीक अवसरिपर आ उपलक्ष्यमे घरवारीक दिससँ जे पुरस्कार आ उपहार बौकीकैँ भेटल

होनि मुदा लक्ष्य कुमार अपना कनियाँक ओकरे देहक रंगक एगो चमचमाइत सोनाक घड़ी देने रहैन जे हुनकर लावण्यकेँ आर निखारैत रहैन।

सहेली आरतीक बहिन चन्द्रा कुमारी, जे दुल्हिन बनल छेली, तिनकासँ विद्या कुमारी पुछलखिन- "चन्द्रा, अहाँ सुन्दर तँ छीहे आ आओर चान जकाँ चमकैत रहू, दुनू कुलकेँ अपन पवित्र सिनेहक डोरसँ बान्हि अप्पन रिश्ताकेँ मजगूत करैत रहू, ई हमर आशीर्वाद आ शुभकामना अछि। अहाँक जीवनक लक्ष्य की छी, हम जानए चाहै छी?"

ई प्रश्न एहेन रहै जे अपनापनकेँ बेसी बोध करबैत रहै, किएक तँ विद्या कुमारी ओकरा आरतीसँ बढ़ि अप्पन छोट बहिन समझैत रहैन, दोसर दिस चन्द्रा कुमारी सेहो हुनका अप्पन बड़ बहिन आ जेठ बहिन जकाँ आदर करैत रहैन तँ सम्हैरकऽ चन्द्रा बजली-

"दीदी, अप्पन देशक सेवा करए चाहै छी आ राष्ट्र भक्त बनए चाहै छी जे परम कर्तव्य अछि, धर्म अछि, तँए हमहूँ दरोगा बनब आ समाजसँ लऽ कऽ देशक रक्षा करब।"

विद्या कुमारी-

"बड़ बढ़ियाँ विचार, मुदा सिर्फ दरोगा आ एस.पी. बनिकऽ देशक सेवा नइ होइ छै, जइ पदपर रही आ जेतए रही, अप्पन ड्यूटी इमानदारीसँ करैत रही, जवाबदेहीकेँ समझैत रही, सएह देशक सेवा आ भक्ति भेल।"

चन्द्रा-

"दीदी बुझि गेलौं, मुदा हमरो अहीं जकाँ स्टार पसिन अछि, केतेक लौकैत अछि।"

चन्द्राक विचार सुनि विद्या कुमारी बहुत बेसी हरखित भेली

आ बजली- “स्टार जेते चमकैत अछि, तेते जवाबदेहियो ने बढ़ि जाइत अछि।”

चन्द्रा- “अहाँसँ सभ किछु सिख रहल छी दीदी, जे कि अहाँ केतेक कर्मठ आ इमानदार पुलिस इंस्पेक्टर छी।”

विद्या कुमारी- “चन्द्रा, अहाँ तीन नइ चारि स्टारक अधिकारी बनू, अर्थात् एस.पी. बनू, एगो अशोक स्तम्भ लगाबू, एक स्टार आ आई.पी.एस.क बैज लगाबू, अपेक्षा करै छी।”

तखनहि हुनकर सखी आरती आबि जाइत छथिन आ उपहारक कार्यक्रम शुरू करैत छथिन। आरती अप्पन बहिन चन्द्रा कुमारीकेँ सोनाक चमकैत कुंडल वा वाली देलखिन। दोसर दिस विद्या कुमारियो ‘सेवा परम धर्म:’ लिखल सोनाक सिकड़ी आ ‘तिरंगा’ छापल सोना-औंठी चन्द्राकेँ देलखिन आ पछाइत ‘चन्द्राक संग रवि’ लिखल सोनाक औंठी दुलहा ‘रवि कुमार’केँ समर्पित केलखिन। अखन धरि आरती दुल्हाकेँ किछु नइ देने रहैन तँ आबिकऽ दुल्हाकेँ सोनाक लौकेट, चेनबला घड़ी देलखिन, दुलहा अपना हाथमे घड़ीक दुनू छोरकेँ सटाकऽ घड़ी बान्हि लेलखिन कि तहीसंग अथवा घड़ी देखिते विद्या कुमारीक पृथक भेल अतीत जुड़ि गेल आ रील चालू भऽ गेल।

विद्या कुमारी भोरे-भोर अप्पन शयन कक्षसँ बाहर आबि साफ-सफाइ करै छेली, ओढ़नीसँ देह झाँपल रहैन, हवा तेज बहैत रहै कि तखने हुनकर सासु आबि गेली आ निर्लज हवा ओकरा देहपरसँ ओढ़नीकेँ हटौलक कि हाथक घड़ी चमैक उठलै। ओना तँ विद्या कुमारीक देहो सुनहला आ गोर रहै तइ कारण इजोतगर रहै मुदा धातुक चमक आ चकड़ीक चमकमे तँ फर्क होइते अछि, तँए सासु देखि लेलखिन आ बजली- “कनियाँ, हाथमे की चमकल?”

कनियाँ तँ लजा कऽ अवाक् भऽ गेली।

सासु पुन: बजली- “कनियाँ, लजाइ छी किए, हमर लक्ष्य अहाँक उपहार घड़ी देलैन हेन, हम बुझि गेलौं।”

विद्या कुमारी अप्पन मुड़ी डोलाकऽ स्वीकार केलैन आ सासुकेँ गोड़ लागि लेलैन। पति-प्रीतिमे सन्हाएल आ दाम्पत्य सुखसँ खिलल अप्पन कनियाँक ई दिव्य रूप देखि सासु पदमा स्वयं खिल उठली, हुनकर मन चमनमे पुमंगक गन्धसँ आकुल तितलीक गुन-गुन गुंजए लगलैन आ बेटा-पुतोहु दुनूक बीच प्रेमक डोरमे खींचाव आ आकर्षण देखि हलसाएल मनसँ पुतोहुकेँ आशीष आ बेटाकेँ शुभकामना दैत ओतएसँ चलि एली, किएक तँ यएह दिनक आ यएह मिलनक हुनका खगता रहै छेलैन जे भेट गेलैन।

दिन बितैत गेलइ। जेना-जेना समय आगू बढ़ैत रहै तहिना-तहिना विद्या कुमारियोक शिक्षा-संस्कार आ बेवहार बढ़ैत गेलैन। विद्या कुमारीमे जेना विद्याक देवी ‘सरस्वती’ समाएल होनि तहिना हुनकर क्रिया-कलाप सेहो रहैन। ससुर रमेसर गुरुजी आई.ए.क परीक्षाक लेल ओहिना फार्म भरा देलखिन, मुदा सेकेण्ड डिवीजनसँ आई.ए. पास कऽ लेलखिन। ऐ उपलब्धिसँ सर-समाज, स्वजन-परिजन सभ खुश। खुशीसँ जेना आँगनमे बधैया बाजए लगलैन। दोसर दिस रमेसर गुरुजी पुतोहुक कुशाग्र बुधि-विलक्षणतासँ बड़ उत्साहित भेला, हुनकामे ईश्वरीय कृपा देखि बी.ए. करबैक निर्णय लऽ लेलखिनजे सम्भव नइ रहै, बड़ कठिन रहइ। तँए अप्पन पुतोहुसँ ई विचार कहैक लेल कागजपर लिखलखिन- “कनियाँ, अहाँ बी.ए. सेहो करू, हम मदैत करि देब, हँ लिखू या नइ लिखू।”

विद्या कुमारी अप्पन ससुरजीक मान रखैत कागजपर लिखलखिन- “संकल्प लइ छी, हम बी.ए. जरूर करब, बाबूजी आशीर्वाद दिअ।”

रमेसर बाबू ई पढ़ि बड़ खुश भेला आ मनसँ शुभकामना दैत कोर्सक बात पढ़ेनाइ शुरू केलखिन। सी.एम.आर्ट्स कौलेज, दरभंगामे नामांकन सेहो करौलखिन। रमेसर गुरुजीकेँ अप्पन पत्नीकेँ देल नाम 'विद्या कुमारी'केँ साबित करैक रहै तँए बेसी धियान दइ छेलखिन। दोसर दिस विद्या कुमारी अप्पन सासुक संग घरक काज करैत मौका पाबि पढ़ियो लइ छेलखिन। एक दिन विद्या कुमारीकेँ हुनकर सासु बालकोनीमे पढ़ैत देखि लेलखिन, ओना तँ अप्पन पुतोहुक नूतन चालि-चलन आ सुन्दर बेवहारसँ खुश रहिते छेली, मुदा ज्यादे मेहनत ने करए दइक पक्षमे रहै छेलखिन, पढ़ाइ-लिखाइमे तँ समय दिऐये पड़ैत अछि, तँए कामचोर नइ बेजोड़ मानलखिन आ बजली-

"कनियाँ, बेजोड़ काज, कोनो बेजाए नहि, मुदा अतेक मेहनत नइ करू।"

जे कनियाँ किछु देर पहिने सासुकेँ देखि डरि गेल रहैथ, सासुक मुहसँ अपना प्रति सहानुभूति देखि हँसि उठली आ बजैक प्रयास केलीह-

"अयऽऽ ईऽऽ उऽऽ उऽऽऽ, अरे पाइऽऽ यऽऽऽ।"

जेकर तात्पर्य ई रहै, जँ मेहनत नइ करब तँ बी.ए. जकाँ भारी कोर्स केना पास करब।

विद्या कुमारीपर बी.ए.क रंग चढ़ैत गेलैन आ ओ फाइनलमे पहुँच गेली। परीक्षाक समैयो आबि गेल, रमेसर गुरुजी शुभकामना दैत कहलखिन-

"बेटी, परीक्षाकेँ मुसीबत नइ समझब, खेल-खेलमे आ आनन्द लैत परीक्षा देबाक अछि। और समय छै, घबड़ाएब नहि।"

अप्पन ससुरक अमृतवाणी सुनि विद्या कुमारी सिर हिला कऽ

अभिवादन केलखिन। जेना ससुर अप्पन पत्नीक देल नामे विद्या कुमारीकेँ साबित करए चाहै छला तहिना विद्या कुमारियो अप्पन सासुक देल नामकेँ साबित करए चाहैत रहैथ आ सएह भेबो केलइ। विद्या कुमारी अप्पन पतिक समर्थन पाबि अप्पन ससुरक मार्गदर्शन पाबि आ परिवारक सहानुभूति वा मदैतसँ सेकेण्ड डिवीजनसँ बी.ए. पास कऽ अप्पन प्रतिभा आ कामयावीक डंका बजा कऽ देखा देलखिन, जे ओइ समाजक गालपर थप्पड़ छेलै जे बौका-बौकीकेँ बदकिस्मतक पहाड़ कहैत अछि अथवा गंदानलीक कीड़ी-मकौड़ी समझैत अछि। अष्टावक्र मुनिकेँ हमसभ जानिते छी जे आठ जगहसँ अथवा आठ अंगसँ टेँढ़ छला तँए हुनका अष्टावक्र, सन्धि-विच्छेदसँ अष्ट- आठ वा वक्र- टेँढ-मेढ़, कहल जाइ छेलैन। आब कहू हुनका की कहबै? विकलांग कहबै आकि अविकलांग कहबै वा सांग (स+अंग) कहबै? विकलांगे ने कहबै, मुदा जे राजा जनक जकाँ महा पण्डितक अथवा विदेहक दरबारमे जा कऽ पण्डितसभकेँ छक्का छोड़ौने छला, ललकारने छला तिनका की कहबैन? बदकिस्मतबला आकि मूर्ख?

आजुक समयमे लुल्हा, नेंगरा, कन्हा, बौका-बौकी अथवा विकलांगो सभ नीक-नीक सरकारी पदपर आसीन भऽ कऽ देशक सेवा कऽ रहला अछि। यौ बुद्धिजीवी लोकनिसभ, ऐ बातकेँ बुझू, किएक तँ पौरुषता बाहरक चीज नहि छी, अन्तर्निहित गुण छी, जे चमत्कार जकाँ कखनौं चमैक उठैत अछि। विकलांगपर अहाँ दया आ सहानुभूति रखियौ आकि नइ रखियौ, मुदा ओहो सभ ईश्वरेक संतान छी तँए एकरा सभपर ईश्वरीय कृपा रहै छै।

बौकी यानी विद्या कुमारी बी.ए. पास कऽ गेली ई खबर क्षेत्रमे सन-सनी जकाँ पसैर गेल। अखन धरि ओइ गाममे एकोटा लड़की बी.ए. पास नइ छल, तैठाम विद्या कुमारी गूंगी रहितो बी.ए. पास

कऽ ओइठामक ई खालीपनकेँ भरि देलखिन। ऐठाम कहलो जाइते अछि- 'जे कहियो ने से आइ'। रमेसर गुरुजी ऐठाम तँ मेला लागि गेलैन। जखन हुनकासँ पुछल गेलैन तँ बजला-

"ओना तँ विकलांग आ आशक्त बच्चा लेल विशेष शिक्षाक प्रबन्ध अछि आ अलगोसँ सम्बन्धित स्कूल आ संस्था सेहो अछि, तँए ई सम्भवो भेल, तेकर वावजूदो हमर मार्गदर्शन रहै जे रंग लाबलक।"

आ विद्या कुमारीकेँ दिलसँ शुभकामना सेहो देलखिन।

एकबेर रमेसर गुरुजी अप्पन संगी शिक्षकक ओइठाम कोनो उत्सवमे गेला। गप-सप्पक सिलसिलामे ई पता लगलैन जे कि धर्मपुर शहरमे एगो एहेन विदेशी डॉक्टर आएल छैथ जे गूंगा-गूंगीकेँ अप्पन इलाजक तजुर्बासँ ठीक कऽ दइ छथिन। बहुत लोकसभ लाभ उठौलैन हेन, प्रचार जोर-शोरसँ सेहो भऽ रहल हेन।

रमेसर गुरुजीक संगी शिक्षक सेहो सलाह दैत बजला-

"यौ मित्र, अहूँ अपना बौकी पुतोहुकेँ एकबेर ओइठाम लऽ जा कऽ इलाज करबाउ, किएक तँ हमरा गामक दूटा बौकीकेँ हुनकर इलाजसँ बोली आबि गेल अछि। ओइ वैद्यक इलाज ठोस लगैत अछि, एकबेर चलू, हमरो सहयोग रहत।"

रमेसर गुरुजी चुप-चाप अप्पन मित्रक बात सुनै छला आ मने-मन निर्णयो लइ छला, किएक तँ अप्पन पुतोहुक लेल अथवा सुन्दर आ विद्यावती सन पुतोहुक सुन्दर बोली सुनैक लेल अप्पन सर्वस्व समर्पित करए चाहै छला, तँए 'हँ, मित्र चलू' कहलखिन।

ईश्वरक कृपासँ आ परिवारक दुआसँ बौकीक बोल लेल सफल इलाज भेल।

बौकी यानी विद्या कुमारीकेँ बोली आबि गेल रहइ। बोली एलापर स्वत: नोर आबि गेलै। हबो-ढकार भऽ कऽ विद्या कुमारी

कानए लगली आ सासु, ससुर, गोंतनी आ उपस्थित सभ लोककेँ पैरपर खसि पड़ली, जेकर तात्पर्य ई भेल जे अहीं सबहक कृपा आ दुआसँ हमर उद्धार भेल हेन, हमरा दोसर जिनगी भेटल हेन तँए अहाँसभ पूजनीय छी।

बौकी, मुँहमे शब्द एलापर पहिने अप्पन ससुर आ आदर्श गुरुजी रमेसर गुरुजीक चरण स्पर्श केलैन आ हाथ जोड़िकऽ आगूमे ठाढ़ भऽ गेली आ सुबकैत बजली-

“बाबूजी, हमर ब्रह्मा अहीं छी, हमरा लेल परिवारक सभ लोक देवी-देवता छी, गोसाँइ आ तीर्थ-धाम छी, अहीं सभ ब्रह्मा, विष्णु आ महेश छी।”

अप्पन पुतोहुक पहिल शब्द ‘बाबू’ सुनि रमेसर गुरुजी अति आह्लादित भेला जइ कारणेँ हुनको आँखिमे नोर आबि गेलैन। पछाइत विद्या कुमारी अपना सासुसँ एना चिपैक गेली जे कि फेबी कुईक सदृश बुझना गेल। विद्या कुमारीकेँ सासुसँ चिपैकिते हुनकर अप्पन अतीतक रील सेहो चिपैक गेल अर्थात रील रूकि गेल आ पुन: वर्तमानक दर्शन भेल किएक तँ विदाइक घड़ीमे चन्द्रा नोरसँ कानैत विद्या कुमारीसँ चिपैक गेल रहैन, तखनहि बिआहक गीत बाजए लगलै-

“आ रे बड़ रे जतनसँ हम सीया-धीया हे पोसलौं से कोन...।”

ओना तँ विद्या कुमारियोक आँखिमे नोर आबि गेलै, परंच चन्द्राकेँ समझाबैत कहलखनि-

“बहिन, ई सामाजिक रीति छिऐ जे दुल्हिनकेँ अपना सासुर जाए पड़ै छै, मुदा सभसँ पैघ बात ई होइ छै जे ओ दुल्हिन नैहर आ सासुर- ऐ दुनू कुलकेँ केना निभाबैत अछि, अथवा केना लाज बँचबैत अछि। समाजमे केना अप्पन आ अप्पन परिवारक मान

बढ़बैत अछि, केना दाम्पत्य जीवनकेँ मधुरगर बनबैत अछि। बुच्ची, जाउ ठीकसँ रहब।”

चन्द्रा कुमारी विद्या कुमारीकेँ छोड़ि दइ छैन आ अप्पन माएसँ चिपैक जाइ छैथ, माए- ‘तारा’क हाल तँ लेखनीसँ बाहरक चीज-वौस। किएक तँ माइक आँखिसँ गंगा-यमुना बहए लगलैन। कवि लिखै छैथ ‘माइक कानबसँ गंगा-यमुना बहलइ, सखी-सहेलीसँ सागरक धार’ केना ने बहितैन, जे माए अपना अँचरासँ झाँपि जेकरा दूध पियौने रहैन आ पालि-पोसिकऽ जुआन बनौने छैन, वएह बेटी आइ छोड़िकऽ जा रहल छैन। समाजक स्त्रीगण सेहो डबडबाएल आँखिसँ विदाइ करैत रहैन। मलार-दुलार आ सिनेह-अनुरागसँ भरल बाबूक हालत तँ राजा जनक जकाँ भेल रहैन जे कि आशीर्वाद दैत बेटीकेँ की कहता, आकि तखनहि एगो गीत उभरल- “बाबुल की दुआएँ लेती जा...।

जा तुझको सुखी संसार मिले...।”

माए तँ अपना सती अनुसूइया सन बनि गेली आ बेटीकेँ वैदेही सीता बना कऽसुखमय जीवनक संस्कार आ ज्ञान सिखौलैन। ऐ तरहेँ चन्द्राकेँ विदाइ करिकऽ दुनू सहेली- आरती आ विद्या कुमारी वापस आबि गेली, दुनू गोरेक आँखिमे नोर रहबे करए आ रूमालसँ पोछिते रहै आकि तखनहि एस.पी. साहेबक फोन आबि गेलै जइमे एस.पी. साहैब कहलकैन आ आदेश देलैन जे कि बीरखा गेंग पाँचटा जुआन लड़कीकेँ उठाकऽ लए गेल हेन, जेकरा मुक्त करैक लेल ऑपरेशन फाइब स्टार शुरू भेल हेन, जे पाँच थानाक सम्मिलित ऑपरेशन छी, तँए जल्दी आबिकऽ कमान समहारू। ई खबर सुनिते विद्या कुमारी जइ आँखिकेँ किछु देर पहिने रूमालसँ पोछि रहल छेली से क्रोधसँ लाल भऽ गेलैन। क्रोधमे ताप होइत अछि, मुदा आगि जकाँ नहि, तँए

ओइ तापसँ नोर तँ सुखा गेलैन, परंच विद्या कुमारी अप्पन असली रूपमे आबि गेली, जे पुलिस इंस्पेक्टरक रूप रहैन आ ज्वालामुखी जकाँ धधकए लगली, तँए अप्पन सहेली आरतीसँ कहलखिन-

“आब हम ऐठाम एक्को मिनट नइ रूकि सकै छी, सखी, हम जल्दिसँ जल्दि ‘ऑपरेशन फाइव स्टार’मे जोगदान लए कऽ अप्पन कर्तव्यक निर्वहन करए चाहै छी।”

आरती बजली- “सखी, हमरो देहमे आगि लगि गेल अछि, कनीकाल रूकि जाउ, हमहूँ अहींक संग जाएब, माए-बाबूक कहनाइ तँ बनैत अछि।”

विद्या कुमारी- “से तँ ठीक, मुदा आब हमरा ड्यूटी धिक्कारि रहल अछि, तँए अहाँ रूकि जाउ आ हमरा जाए दिअ।”

आरती कुमारी- “सखी, किछु अन्नजल ग्रहण कऽ लिअ।”

विद्या कुमारी-

“ई कोन बात, सखी, जेकर समाज तबाह आ देश तबाह संगे इज्जत-आबरू सेहो कैद, से भला केना अन्नजल ग्रहण कऽ सकैत अछि। हम प्रण करै छी जे कि जाधैर ऐ ऑपरेशनकेँ पूरा नइ करब, निर्जल रहब, किएक तँ पाँच लड़की आ पाँच लाजक सवाल अछि।”

आरती कुमारी अप्पन सहेली विद्या कुमारीकेँ जनै छेली जे कि केतेक, कर्मठ, कर्मवीर इंस्पेक्टर छथिन, तँए हुनका कारसँ टिशन भेज देलखिन आ कहलखिन- “सखी, अहाँ जाउ, हमहूँ पाछूसँ आबि जाएब।”

ई कहि दरोगा आरती कुमारी आ इंस्पेक्टर विद्या कुमारी परस्पर आलिंगनवद्ध भेली आ फौजी स्टाइलमे जय हिन्द! जय भारत!! कहि पृथक भेली। विद्या कुमारीकेँ देहपर जेना ओ ‘फाइव स्टार ऑपरेशन’ सवार भऽ गेल रहैन तहिना ट्रेनोमे बैसलाक बादो

सोचमे डुमल छेली जेना ओइ ऑपरेशनकेँ सफल बनबैक तरकीब सोचि रहल छेली। हुनक मनक समुद्रमे विचारक ज्वार-भाटा उठए लगल, जइमे ज्वार सफलताक आ भाटा असफलताक प्रतीक छल। कतेको रंग हवो-बिहाड़ि मनमे आबए आ जाए आ शान्तो भऽ जाए। पछाइत मनमे कर्मठ आ इमानदारक बात अबिते अतीतक रील पुन: नाचए लगल- अतीतक दर्शन।

एकबेर गाममे एगो अपराधीक पकड़ैक लेल एगो दरोगा आएल। विद्या कुमारी ऐ परिदृश्यकेँ विहंगम दृष्टिसँ देखैत रहथिन। पुलिस अपराधीक घरकेँ घेर लेने रहैन, तेकर वावजूदो ओ अपराधी औरतक भेषमे साड़ी पहिर धोखा दैत भागल जाइत रहए, जेकरा दौड़कऽ पुलिस पकैड़ लेलक। आब ओ बदमाश मंत्री-संतरीक नाओं लिअ लगल किएक तँ हम सभ जानै छी जे अपराधी आ अपराधक बढ़ावा के दइ छैथ। अन्तमे घूस लऽ कऽ दरोगा ओइ क्रिमिनलकेँ छोड़ि देलकै। ई खेला आ दृश्य देखि ग्रेजुएट पुतोहु विद्या कुमारी अप्पन ससुर रमेसर गुरुजीसँ प्रश्न केलखिन-

“बाबूजी, दरोगा ओइ क्रिमिनलकेँ किएक छोड़ि देलखिन?”

रमेसर गुरुजी जे इमानदार आ कर्मठ छैथ, बजला-

“बेटा, आइक दिनमे घुसखोरी बढ़ि गेल अछि, टक्के पर सभ खेला होइत अछि, कोनो ऑफिस जाइयौ, संस्थान जाइयौ, विभाग जाइयौ, मंत्री-संतरी लग जाइयौ, जेतए-तेतए सभठाम पैसाकेँ दौड़ैत देखबै। एतबे नहि, नोकरी पैसेपर आ डिग्री सेहो पैसेपर भेट जाइए।”

बिच्चेमे रोकैत विद्या कुमारी बजली-

“यौ बाबूजी, क्रिमिनलकेँ छोड़नाइ तँ क्राइमक बढ़ावा भेल ने। ऐसँ समाज आ देश बँचि सकैत अछि की? लोकक इज्जत बँचि

सकैत अछि की? आ नारीक लाज बँचि सकैत अछि की? नहि बँचत। कर्म-धर्म आ फर्ज केतए गेल?”

अप्पन पुतोहुक ई मानवीय विचार आ ऊँचस्तरीय सोच देखि गुरुजी अति प्रफुल्लित भेला आ पुन: रुपैआक खेला देखैत बजला-

“बेटा, जेतए रुपैआ चाल मारैत अछि तेतए विवेक मरि जाइत अछि। कहू, जेतए इजोत नहि बरत तँ की देखब, विवेक इजोत छी तखन कहू कर्म-धर्म आ फर्ज की टीक सकैत अछि? तँए ने लोकसभ बजैए- ‘टका कर्म: टाका धर्म: टकैव सर्वस्व पिण्डनम अस्तु टकायै नम:’।”

अप्पन ससुरक बात सुनि विद्या कुमारी देशक समस्यापर गम्भीरतासँ सोचए लगली आ बजली-

“यौ बाबूजी, ई तँ सोचनीय प्रश्न छी, ऐ लेल किछु करए पड़त। हम दरोगा बनए चाहै छी, हमरा फार्म भरा दिअ आ गाइडो कए दिअ, किएक तँ हम समाज आ देशक सेवा करए चाहै छी।”

अप्पन ग्रेजुएट पुतोहुक दिलक बात आ भावना सुनि पहिने तँ ससुरक मन हरसेलैन आ पछाइत मुस्केला, ऐ हेतु जे एहेन विचार हिनका मनमे केना आएल, ई तँ बड़ मुश्किल अछि, असम्भव नहि तँ सम्भवो नहियेँ अछि। ऐ प्रतियोगितामे शारीरिक ओ बौद्धिक दू प्रकारक टेस्ट होइत अछि, जइमे शारीरिक टेस्ट बड़ कठिन होइ छै, तहूमे लड़कीक लेल तँ बेसी कठिन तँए असम्भव। मुदा पुतोहुक इच्छा आ साहसपर तँ ख्याल रखनाइ अछि, तँए गुरुजी बजला-

“कहलौं तँ बड़ बढ़ियाँ बेटा, मुदा जखन हम महिला दरोगाकेँ देखै छी तँ हुनकर ड्यूटीमे खोंट बुझना जाइत अछि, किएक तँ संख्यामे कम, अधिकारीक संग ड्यूटी मलिन आ अधिकारी अधीन।”

ससुरक ई बात आ ओछ सोच देखि विद्या कुमारी उत्तर देलखिन-

“बाबूजी, सभ नारी एक्केरंग नइ रहैत अछि, हम दुर्गाकेँ पढ़लौं, कालीकेँ पढ़लौं, लक्ष्मी आ माता सरस्वतियो केँ पढ़लौं। सावित्रकेँ पढ़लौं, सीता मैयाकेँ सेहो पढ़लौं आ वीर शिवाजीक माए जीजाबाई केँ सेहो पढ़लौं। तँए कहै छी जे हम वीर लक्ष्मीबाई जकाँ बनि देशक रक्षा करब आ क्रिमिनल आ क्राइमकेँ खत्म करब।”

रमेसर गुरुजी बजला-

“बेटी, अहाँ हमरा गौरवान्वित कऽ देलौं, मुदा कर्मठ आ इमानदार नहि रहि सकब, जमाना बड़ खराब छै, अहाँ अखन दुनियाँकेँ ने पहचानलिऐ हेन...।”

विद्या कुमारी ससुरकेँ रोकैत बजली-

“बाबूजी, हम कर्मठ, इमानदार आ कर्तव्यनिष्ठ दरोगा बनब, ई सप्पत लइ छी, एकबेर सावित करैक मौका तँ दिअ।”

पछाइत परिवारक सहमति पेब आ ससुरक निर्देशन पेब विद्या कुमारी भगिरथी परिश्रम करि कऽ दरोगा बनि अप्पन कामयावीकेँ सावित केलखिन। विद्या कुमारी दरोगा तँ बनि गेली मुदा हुनकर परिवारक लोक जोगदानसँ रोकैत रहैन, बेसी हुनकर सासु रोकैत रहैन। दोसर दिस विद्या कुमारीक हाथमे ज्वानिंग लेटर रहै आ बड़ खुश छेली। सासु माँ झपैट कऽ चिट्ठी छीनि लेलखिन। ई स्मरण आबिते विद्या कुमारीक अतीत जेना छीना गेल होइन। अतीतक रील टुटि गेल होनि आ विद्या कुमारी पुलिस इस्पेक्टरक रूपमे अप्पन यथार्थ दुनियाँमे पुन: आबि गेली।

थाना पहुँच कऽ इंस्पेक्टर विद्या कुमारी ऑपरेशन फाइव स्टारसँ जुड़ैले एस.पी. साहैबसँ मिल कऽ बहुत खुश भेली। हुनका

जुड़लासँ उक्त ऑपरेशनमे सेहो जान आबि गेल, बल भेटल आ तागत भेटल।

फाइव स्टार ऑपरेशन टीम सम्मिलित रूपेँ बीरखा गेंगक अड्डाकेँ घेरैक प्रयास केलक मुदा डकैतो सतर्क रहै, तँए चक्रव्यूही घेरा बनाकऽ अप्पन सरदारकेँ रखने रहए। पहाड़ी आ जंगली इलाका सेहो रहै जइ कारणेँ क्षेत्र बेसी अंजान रहै, बिरान रहइ। दुनू दिससँ मुठभेड़ भेलै, गोली-बन्दूक चलए लगलै, आवाज हुअ लगलै- धाँइ, धाँइ...। ओना तँ पुलिसक संख्या बेसी रहबे करै मुदा डकैतोक संख्या कम नइ रहइ। गोली लगलासँ केतेको डकैत औंघरा-पोंघरा गेल आ मरियो गेल। तैबीच इंस्पेक्टर विद्या कुमारी चीता जकाँ भीड़केँ चीरैत वीर अभिमन्यु जकाँ अड्डाक बीचमे घुसि गेली आ अन्धाधुन फायरिंग करए लगली। आकि तखनहि अचानक ढक्कनबला बीलसँ गेंगक मास्टर बीरखा निकैल विद्या कुमारीक उपहास केलक- “आओ-आओ इंस्पेक्टर, तुम्हारा आना जरूरी था, तुमने पुलिसी डंटा चमका-चमकाकर मेरे आदमियों का बुरा हाल किया था। आज मैं तुम्हें समतोला बनाकर चूसूँगा।”

ई कहि विद्या कुमारीकेँ पकैड़ लैत अछि, किएक तँ विद्या कुमारी डकैतक बिहड़केँ नइ जानै छेली तँए पकड़ा गेली। ई बात ऑपरेशन टीम नहि बुझि सकल, मुठभेड़ जारी जे रहइ। खाएर, विद्या कुमारीकेँ पकैड़ ओइठाम लऽ गेलै जेतए अगुआ कएल पाँचो लड़की बान्हल रहए, तेकरा सभकेँ देखबैत ओ सरदार बाजल- “गिनतीमे आब छह भेल, चारिटा आर बाँकीए अछि किएक तँ दसटा लड़कीक मांग विदेशमे अछि, जइसँ हम मालोमाल होएब। (भाव बदैल कऽ) ऐ इंस्पेक्टर, विदेश में तुमलोगों को ईंख जैसे पेरेगा और इस सुन्दर तन-वदन को चुस-चुसकर सीठी बना देगा समझी।”

ई कहि विद्या कुमारीकेँ सेहो ओइ अपहृत लड़की सबहक कतारमे बान्हि देलक आ एगो नमहर कदक डकैतकेँ पहरामे लगा देलक। दोसर दिस इंस्पेक्टर विद्या कुमारीक डकैत द्वारा अपहरणक खबर सुनि पुलिस आर डकैतक बीच लड़ाइ बेसी तेज भऽ गेलै, पुलिसो मरै आ कटैले तैयार भऽ गेलइ। बान्हल लड़की सबहक हालत कानैत-कानैत बेसी खराप भऽ गेल रहै जेना कि पानि नइ रहलापर धार सुखि जाइत अछि तहिना ओकरा सबहक आँखिक हाल भऽ गेल रहै, आब आँखिमे नोर नइ बँचल रहइ। विद्या कुमारी नोरसँ भिजल लड़की सबहक कपड़ा देखि खूद नोराए गेली। हुनको अन्दरुनी डर सता रहल छेलैन कि आगाँ की होएत, मुदा विद्या कुमारी माटिसँ नइ लोहासँ बनल छेली। हुनकर हर्ट आ विल पावर बड़ मजगूत रहैन, तँए लड़की सभकेँ एहेन हालत देखि भरोसा दैत बजली-

“बुच्ची, अहाँ सभ नइ कानू, जाधैर हम जीबैत रहब, अहाँ सबहक इज्जत नइ लूटए देब।”

महिला पुलिस इंस्पेक्टरक ई सहानुभूतिसँ भरल आ सिनेहक फुहारासँ अभिषिक्त वचन सुनि सभ लड़की असथिर भेली। कहैक लेल तँ विद्या कुमारी कहि देलखिन मुदा वचनक निमरजना केना हएत अथवा संकल्प केना संकल्पित होएत से बुझबे नइ केलखिन। बड़ पेशोपेशमे रहैथ। पुरुषक कमजोरीकेँ नीक जकाँ जानै छेलखिन जे कि तँए सेक्सक इच्छा पुरुषक कमजोर पक्ष छी आ सेक्सक पाछू दीवाना बनल रहैत अछि। कबीर बाबा सेहो कहने छथिन- ‘कहत कबीर सुनो हो संतो, बौह बिना केकरो नइ बनतो।’ जे हुए मुदा एहेन बात तँ अछिए। गालीब जकाँ मशहूर शायर सेहो कहने छथिन- ‘इश्क ने हमे बर्बाद कर दिया वर्ना हम भी आदमी थे काम का।’ एहने तरंगे तरंगित भऽ कऽ लोक बजैत अछि- “इश्क पर जोर

चलता नहीं किसी का

सुर-नर-मुनि को भी हमने फँसते सुना है।"

आगूओ अही लाइमे देखू- "इश्क की आँधी से बचकर रहना

वर्ना सैंकड़ो बल्व क्या ज्ञान का बल्व भी बुझ जायगा।"

सएह भेबो कएल। विद्या कुमारी ओइ नमगर डकैत यानी बन्दूकधारी डकैतकेँ, जे पहरामे रहै इशारा केलखिन- "यौ बन्दूकधारी, अहाँ आम खाएब?"

ई मिठगर बोली सुनिकऽ ओ डकैत बाजल-

"आम, की आम? एतए केना आम भेटत?"

विद्या कुमारी-

"ओ आम नइ, आम चूसब तँ लग आउ आ हमरासँ लऽ कऽ ऐ पाँचो लड़की सबहक सभ मिलाकऽ बारह आम भेल। सरदारसँ पहिने अहीं चूसू। बासी नइ ताजा चूसू, हम सभ तैयार छी।"

ई पियरगर बात सुनि डकैतक मनमे वासना जगल आ संगे सरदारक प्रति विरोधो जगल जे कि माल अथवा लड़की लाबिकऽ हम दइ छी, मुदा भोगैत अछि सरदार, तँए आइ नीक मौका अछि, अड्डासँ दूरो छीहे। ओ डकैत बाजल-

"मन तँ हमरो होइत अछि, मुदा से केना होएत?"

विद्या कुमारी- "बोन-झाड़ छै तँए सभ किछु सम्भव अछि, पहिने हमरेसँ शुरू करू।"

डकैत वासनाक रंगमे सन्हाकऽ बाजल-

"अहाँ तँ सर्वसुन्दरी छी, हमर तँ नसीब खुजि जाएत।"

विद्या कुमारीक ऐ बेवहारसँ अपहृत लड़की सभ बड़ हक्का-बक्का भेल रहए। डकैत आगू बढ़िकऽ विद्या कुमारी लग गेल। विद्या

कुमारी बजली-

“यौ बन्दूकधारी बान्हलमे मजा केना देब आ केना लेब? हाथ खोलि मजा लिअ, जल्दी करू।”

विद्वज्जनक ई मत अछि जे नारी मोहनी होइत अछि, चितचोरनी होइत अछि आ अप्पन एक मुस्कानसँ ब्रह्मा आ ब्रह्माण्डोकेँ वशीभूत कऽ लैत अछि। पढ़ने होएब जे विष्णु भगवान विश्वमोहनी बनि केना असुरगणकेँ अमृत नहि पियाकऽ देवगणकेँ पियौने छला, केना भस्मासुर भस्म भेल छेलैथ। ई सभ बातक जानकारी विद्या कुमारी जकाँ तेज-तरार इंस्पेक्टरकेँ रहैन। ओ डकैत विद्या कुमारी जकाँ अति सुन्दरी आ मनमोहनीक सम्मोहन डोरिसँ खिंचाइत हुनका लग जाइत अछि आ बान्हल हाथकेँ खोलए लगैत अछि। विद्या कुमारीक जखन हाथ खुजैत अछि आकि शातीर जकाँ अचुक प्रहार ओइ डकैतक अण्डकोषपर करैत छैथ जइ कारण डकैत आह-ऊह, ओह करैत बेहोश भऽ जमीनपर खसि पड़ैत अछि, डकैतकेँ खसिते विद्या कुमारी पुलिसी अन्दाज अथवा प्रशिक्षणमे सिखाएल अन्दाजसँ ओकर बन्दूक छीनि लइ छथिन आओर बन्दूकक हूठसँ मारि ओकरा स्वर्गलोक पहुँचा दैत छथिन। यौ पुस्तक प्रेमी सभ, पढ़ने हएब जे पहिनुका राजा-महाराजा सभ विष-कन्या सेहो रखै छला जे नारीक अलग आ विषैला नाग जकाँ सोभाव रहैन। इतिहासो गवाह अछि जे कि बघनखासँ वीर शिवाजी अफजल खाँ केर हत्या केने रहथिन। ई सभ सेहो सैन्य संचालनक उपादान छी। डकैत मराए गेल, ओइ लड़की सभकेँ विद्या कुमारी इंस्पेक्टरक सेक्स नाटकक बात आब बुझैमे आबि गेल रहैन आ निर्मल भावसँ देखए लगली। विद्या कुमारी सबहक बन्धन खोलि दैत छथिन आ सभकेँ जंगले-जंगले भागि जाइक निर्देश सेहो देलखिन आ तहिना सभ भागि गेल। पछाइत विद्या कुमारी ओइ डकैतक कपड़ा बन्दूक

आ ड्रेस पहिर डकैतक भेषमे आबि गेली आ डकैतक बीच घुसि अन्धाधूँध गोली बरसाबए लगली आ डकैत सबहक जानक पिपासा बनि गेली। एना लगैत छल जे ओइ मुठभेड़क रणक्षेत्रमे विद्या कुमारी रणचण्डी दुर्गा आ माता काली बनिकऽ असुर-रूपी डकैतक रक्तपान कऽ रहली अछि। विद्या कुमारी डकैतक भेषमे छली तँए डकैत हुनका चिन्ह नहि सकल, दोसर दिस अपना खेमाकेँ संकेतमे बतौने छेली जे हम डकैत नहि विद्या कुमारी छी, इंस्पेक्टर विद्या कुमारी। ऐ रणनीतिसँ बेसी डकैतकेँ अपना जानसँ हाथ धुअ पड़ल। पछाइत अप्पन डकैतक संहार होइत देखि डकैतक सरदार सोचमे पड़ि गेल आ शीघ्र डकैत भेषमे इंस्पेक्टर विद्या कुमारीकेँ पहचानि गेल, मुदा पहचानैमे देरी भऽ गेल रहै तँए अप्पन जान बँचबैक लेल विद्या कुमारीकेँ गोली मारैत भागि गेल। गोली लगिते विद्या कुमारी जमीनपर खसि पड़ली आकि पुलिस खेमामे मायूसी आबि गेल, सभ हड़बड़ा गेला आ ओमहर गोट-पंगरा बँचल डकैतो जान बँचाकऽ भागि गेल। विद्या कुमारीक हालत देखि एस.पी. साहैब 'अरुण' सभकेँ सावधान केलैन आ विद्या कुमारीक नाड़ी आ धड़कनक परीक्षण केलैन, विद्या कुमारी जीवित पएल गेली तँए हुनका अस्पतालमे भर्ती करौल गेल।

अस्पतालक डॉक्टर डॉ. उमाधर बाबू बड़ पैघ कुशल, चर्चित आ प्रसिद्ध चिकित्सक। इंस्पेक्टर विद्या कुमारीक बाँहिमे लागल गोली, जे भीतरे रहि गेल छल, तेकरा सावधानीसँ चीरकऽ निकालि देलखिन। ऐ तरहेँ इलाज शुरू भऽ गेलइ। अरुण एस.पी. साहबकेँ पुछलापर डॉ. उमाधर बाबू कहलखिन जे इंस्पेक्टर विद्या कुमारी बाल-बाल बँचि गेली, किएक तँ कनियोँ असावधानीसँ गोली गरदैनमे लगि जाइत आ प्राण-पखेरू उड़ि जाइत, दोसर नमगर-छड़गर रहलासँ डकैतक निशानमे चूक भऽ गेल तँए बँच गेली। आब

बिल्कुल खतरासँ बाहर छैथ। अस्तु घबड़ाइक आ चिन्ता करैक कोनो बात नहि अछि, एस.पी. साहैब।

पुन: एस.पी. साहैब डॉक्टरसँ अनुग्रह केलैन- “ठीकसँ इलाज कऽ दियौ, डॉक्टर साहब।”

डॉ. उमाधर- “एस.पी. साहैब इंस्पेक्टर विद्या कुमारी हमरा देशक शान छी, गुमान छी आ अरमान छी, तँए हम अप्पन जी-जान लगाकऽ इलाज करब आ अपनाकेँ धन्य समझब। हम जनै छी जे ई हमरा देशक एगो तागत छैथ आ नारी सशक्तिकरणक मजगूत कड़ी सेहो छैथ। देखैत रहबै ई आओर ज्वालामुखी बनि जेती।”

तहिना भेबो कएल। दोसरे दिनसँ बाजए लगली आ सभ किछु बुझए लगी। अपना सामने एस.पी. साहैब डॉक्टर साहैब, अप्पन सहेली दरोगा आरती कुमारी आ अन्य पुलिसकर्मीकेँ देखि विद्या कुमारी बाजि उठली- “हम ओइ डकैतकेँ नइ छोड़ब, हमरा बाँहिकेँ नपाक कऽ देलक। यौ डॉक्टर साहब, ई गोली लगल हमरा बाँहिकेँ काटि किएक ने फेंकलौं।”

डॉक्टर साहैब बजला- “इंस्पेक्टर साहिबा, धीरज रखू, सभकिछुक समाधान होइत अछि आ ईहो कहल जाइत अछि जे सभ दुखक दवाइ सेहो होइ छै, मुदा आब वीर कुंवर सिंहक जमाना नइ ने रहि गेल अछि जे फिरंगीक गोली लगिते अप्पन बाँहि काटि गंगा माइकेँ चढ़ा देने रहैथ, जेना-

”स्वीकारि लिअ हे गंगा माइ
हम भेँट चढ़बै छी
कियो तँ लड़ू-पान चढ़बैत अछि
हम अप्पन बाँहि चढ़बै छी।”

आब हमर देश स्वतंत्र अछि, जमाना हमर अछि, शासन हमर

अछि, तँए देशक सेवा लेल गुण्डा-डकैतकेँ मारू आ बलात्कारी-अपराधीसँ समाज आ देशकेँ बँचाबू, देशकेँ अमन-चैनक लेल जीबू आ मरू।”

विद्या कुमारी तमतमाइत बजली-

“हम सप्पत खाइ छी जे आब ओ डकैत हमरासँ बँचि नइ सकत, हम अप्पन जानो दऽ कऽ ओकरा अबस्स मारब। एस.पी. साहब, हम बौकी छेलौं, हमर इतिहास खोजू, मुदा आब हम बौकी नइ छी। हम कुख्यातसँ कुख्यात आ इनामी डकैतकेँ पकैड़ सरकारकेँ सौंपि देब।”

ई सुनिते डॉक्टर साहब झट-दे बाजि उठै छथिन-

“जँ अपराधी आ बलात्कारी सरकारे द्वारा पोषित हुअए तखन की करब?”

विद्या कुमारी-

“दबंग, बहुबली आकि नेतासँ पोषित आकि स्वयं नेता किएक ने हुअए, ओकरा छठिहार रातिक दूधक यादि जरूर दियाएब, छोड़ब नहि। हम झाँसी रानीक सन्तान छी।”

डॉक्टर साहैब पछाइत मना करैत बजला-

“इलाजमे छी एतेक बेसी नइ बाजू, अखन आराम करू। अहाँकेँ आराम जरूरी अछि।” ❑

4.

इलाजक तेसर दिन जे अपहृत पाँच जुआन लड़की छल, जेकरासभक विद्या कुमारी इंस्पेक्टर अप्पन चालाकीसँ डकैतक जालसँ बँचौने रहथिन, पाँचो लड़की आबि गेलै आ अबिते 'मम्मीजी, मम्मीजी' कहैत विद्या कुमारीक पैरपर खसि पड़लै। ई दृश्य देखि सभकेँ अचरज लगलै आ विद्या कुमारीकेँ तँ आरो बेसी अद्भुत लगलैन, किएक तँ आइसँ पहिने अपना लेल 'मैडमजी' सुनैत रहथिन मुदा आइ 'मम्मीजी' सुनि बेसी आह्लादित भेली आ सभ लड़कीकेँ अपना छातीसँ लगा पुछलखिन-

"अहाँसभ के छी? की बात अछि? बाजू।"

सभ लड़की (एकसाथ): "अहीं हमर माए छी, दोसर जनम देलौं, वर्ना डकैत दरिन्दा हमरासभकेँ... (कनैत अछि) बेचि नरकमे धकेल दैत। हमरासभकेँ बँचबैक लेल अहाँ गोली खेलौं, माए जकाँ बँचेलौं तँए 'मम्मी' भेलौं।"

विद्या कुमारी बुझि गेली जे कि मम्मीक अर्थ 'माए' भेल। 'माए'क हिन्दीमे 'माता', संस्कृतमे 'जननी' आ अंग्रेजीमे 'मदर' कहल जाइत अछि। 'माए' शब्द सुनि विद्या कुमारी एतेक खुशी भेली कि आँखि डबडबाए गेलैन जे सुखक अनुभूतिक आँसू रहैन। परमप्रिय पाठकगण जे विद्या कुमारी 'माए' कहैक लेल स्वयं तड़पैत रहै छेलखिन तिनका 'माए' कहैवाली पाँच-पाँच लड़की भेटल रहैन। कहू, कलम ऐठाम की लिखत?

बन्धुवर, जे विद्या कुमारी अखनधरि नि:सन्तान छैथ से

केनाकऽ ‘माए’ भेली? जिनकर माए हेराएल रहैन से केनाकऽ माए बनब स्वीकार केलखिन?

विद्या कुमारी बजली-

“सभ घटना बुझैमे आबि गेल हेन, बेटी। ई हमर धर्म आ कर्तव्यसँ बेसी ऐ बर्दीक शान आ गुमान छी।”

बर्दी शब्दक उच्चारण करिते पुन: अतीतक कड़ी जुड़ि जाइत अछि आ सिनेमाक रील जकाँ चलए लगै अछि।

एकबेर लक्ष्य कुमार अप्पन दरोगा कनियाँकेँ देखि व्यंग्य करैत बाजल छला- “यै विद्याजी, अहाँ बर्दीमे बड़ स्मार्ट आ सुन्दर लगै छी, मुदा हमर कनियाँ जकाँ नै लगै छी।”

ई सुनि विद्या कुमारी झट-दे जवाब देलखिन-

“ई कोन बात यौ? तखन हम केकर कनियाँ जकाँ लगै छी?”

लक्ष्य कुमार-

“एगो एस.पी.क कनियाँ जकाँ पुलिसवाली कनियाँ।”

दुनू गोरे हँसए लगल। पछाइत ओजस्वी विद्या कुमारी जवाब देलखिन-

“अहाँ ठीक कहलौं हेन। अहाँ इंजीनियरिंगक तैयारी छोड़ि यू.पी.एस.सी.क तैयारी करू आ एस.पी. बनू, तखन हम एस.पी.क कनियाँ बनि जाएब वा कहाबए लगलब, किएक तँ अहाँ नमगर-चौड़गर जुआन सेहो छीहे।”

लक्ष्य कुमार बजला-

“यै सुग्रीवा, ई सभ हमरासँ केना सम्भव हेतै। मानसिक तँ मानसिक शारीरिक जाँचमे पास केनाइ?”

विद्या कुमारीक गरदैन सुड़ाही जकाँ नमगर रहै तँए लक्ष्य

कुमार 'सुग्रीवा' कहैन। विद्या कुमारी सम्हारैत बजली- "यै, अहाँक नाम लक्ष्य कुमार 'तेजस्वी छी तँ किएक ने तेजस्वीक अर्थात् तेजक प्रयोग करैत छिऐ? अहाँ एक-ने-एक दिन एस.पी. जरूर बनि जाएब, हमरा अशेटा नहि, बिसवास सेहो अछि।"

ओना, लक्ष्य कुमार अप्पन पत्नीक ई बात सुनि गुन-धुनमे पड़ि गेल छला, मुदा पत्नीक ई इच्छा हुनका उसकाबैत रहैन आ लक्ष्य कुमार दोसरे साल यू.पी.एस.सी.क पी.टी. परीक्षा पास करिकऽ एस.पी. बनैक संकेत देने रहैन। ई खबर सुनि विद्या कुमारी ह्वाट.सएपपर भेजने रहथिन- "आब हम एस.पी.क कनियाँ कहा गेलौं हेन।"

लक्ष्य कुमारोकेँ जेना एस.पी. बनैक नशा लागि गेल हुअए, तैयारी लेल भारतक राजधानी नई दिल्ली चलि गेला आ ओइठाम रहि ऐतिहासिक स्थान कुतुम्बमिनार, इण्डिया गेट, राष्ट्रपति-भवन, लालकिला आ संसद भवन आदि साक्ष्य देखि जी.के.क तैयारी करए लगला। अप्पन जी.के. मजगूत करैले अगरामे यमुना नदीक तटपर अवस्थित ताजमहल, जे शाहजहाँ द्वारा बेगम मुमताज महलक यादिमे बनौल गेल अछि, सेहो देखि एला। ओना तँ विद्या कुमारी कुंजनगर थानाक दरोगा बनिते अप्पन दाम्पत्य जीवनक सुखक त्याग कऽ बर्दीक अप्पन जीवन पहिने समर्पित केने छेलखिन, तैसंग लक्ष्य कुमारो दाम्पत्य जीवनक आनन्द अथवा पत्नी प्रीतिक सुख त्याग कऽ तैयारीक रण-क्षेत्रमे कूदि गेला। आब कहू जे एतेक त्यागी बनता, से किएक ने उपलब्धि हाँसिल करता। तेजस्वी नई दिल्लीसँ ह्वाट्सएप अप्पन कनियाँक केलैन-

"धनी सुग्रीवा, हम अप्पन लक्ष्य दिस बढ़ि रहल छी। आब एस.पी. बनियेँकऽ घर आएब। तँए अहाँ माए-बाबूक संग-संग समस्त

परिवारक धियान रखब।”

ई पढ़ि विद्या कुमारी सेहो प्रत्युत्तर दैत ह्वाट्सएप केलखिन-

“यौ हमर एस.पी. साहैब।”

एस.पी. साहैबक खियाल अबिते अतीतक रील टुटि गेलैन आ विद्या कुमारी अपना लगमे असली एस.पी.कैँ बैसल देखलिखन आ बजली- “यौ श्रीमान् एस.पी. साहैब, आब अहाँ हमरा नइ देखू अप्पन ड्यूटीकैँ देखू, हम ठीक छी।”

एस.पी. अरुण बजला- “अहाँक देखनाइयो ड्यूटी बुझै छी, धर्म बुझै छी किएक तँ अहाँकैँ रहनाइ समाज आ देशक लेल अनिवार्य अछि। अहाँक बौकी जीवन आ संघर्षक कथा सेहो पढ़लौं जे कि अहाँ केतेक कर्मठ आ जिनियस छी। अहाँ तँ आइरन लेडी छी। अहाँ जल्दी ठीक होउ, दुआ आ विनय अछि।”

एस.पी. साहैबक ई गौरवान्वित करैबला उद्गार सुनि विद्या कुमारीक घाव जेना भरि गेल हुअए तहिना बजली- “एस.पी. साहब, अहाँ चिन्ता नै करू। हम संकल्प लेने छी जे बिरखा गैंगक सरदारकैँ अबस्स पकड़ब, चाहे किएक ने ओ जयद्रथ जकाँ अर्जुनक डरसँ नुकाएल हुअए आकि कौरवक वीर योद्धा सन बनाएल सुरक्षा-कवचमे छिपल हुअए, हम अर्जुन तँ नइ मुदा हुनकर प्रतिच्छाया बनि जरूर ओकर संहार करब।”

विद्या कुमारीक एहेन हिम्मत, देशक प्रति सेवा आ जीवनक तनिको परवाह नइ करैबला समर्पित कर्तव्य देखि सभ खुशीसँ झूमि उठला। नारा लगौल गेल-

1. ‘इंस्पेक्टर विद्या कुमारी जिन्दावाद!’

2. आइरन लेडी जिन्दावाद!

पछाइत विद्या कुमारी जल्दिये ठीक भऽ गेली आ पुन: ड्यूटीसँ

जुड़ि गेली।

समयक रथ गतिमान होइत रहल। 15 अगस्त सेहो आबि गेल। 15 अगस्त 1947 इस्वीक मध्य रातिमे भारत आजाद भेल छल आ रिमझिम फुहार दासताक उष्णतासँ व्याप्त भारतीय वातावरणकेँ शीतलता प्रदान करि कऽ आजादीक सुआद बरसेने छल तँए भारतमे 15 अगस्तकेँ स्वतंत्रता दिवस राष्ट्रीय पर्वक रूपमे हर साल मनौल जाइत अछि। ऐ पुनीत अवसरिपर सरकार अप्पन नागरिक, पुलिस, सेना, पदाधिकारी, खेलाड़ी आदि सभकेँ हुनकर विशिष्ट अवदानक आधारपर भिन्न-भिन्न पुरस्कारसँ अलंकृत करैत अछि।

विद्या कुमारी इंस्पेक्टरकेँ सेहो हुनकर विशिष्ट शौर्य वीरता कार्यक लेल राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति पुलिस पदकसँ अलंकृत कएल गेलीह। लोक केकरो भागीरथी परिश्रम देखि उत्तरोत्तर सफलताक लेल अथवा उन्नतिक लेल हार्दिक कामना करैत रहैत छैन, सएह विद्या कुमारीक संग होइत गेलइ। पहिने दरोगासँ इंस्पेक्टरमे पदोन्नतिसँ थानाध्यक्ष बनली। हुनकर अद्भुत कारनामा आ साहसिक कार्यपर विभाग आ सरकार डी.एस.पी. पदपर प्रोन्नति सेहो केलकैन। एमहर विद्या कुमारीकेँ डी.एस.पी.मे प्रोन्नति भेलैन आ ओमहर लक्ष्य कुमार 'तेजस्वी'क रिजल्ट सेहो भेलै आ हुनकर चयन एस.पी. पदपर भऽ गेलैन। ई मनसापूरित खबर सुनि विद्या कुमारी झूमि उठली आ ह्वाट्सएप पर लिखलखिन- "अहाँक बर्दीपर अशोक स्तंभक संग-संग एगो स्टार आ IPSक बैज लगत, हम परम खुश छी।"

दोसर दिस रमेसर गुरुजी आ पदमाजीक अँगनामे ऐ दोहरी खुशीसँ उत्साहक माहौल बनल छल। समूचा गाम नाचि रहल छल।

ऐ खुशीकेँ आर खुशबूदार बनबैले रमेसर गुरुजी एगो उत्सवे ठानि देलखिन आ सौंसे गामकेँ नतिकऽ खुआबैक प्रबन्ध सेहो केलखिन। गुरुजी अपना बेटा-पुतोहुकेँ सेहो बजा लेलखिन आ चारि दिन धरि अनघोल भेल, गदकिच्चन भेल। लोक भोजसँ अकच्छा गेल। यौ समाज रूपी बागक बगवार लोकनि, ई केतेक उचित भेल? रामकिसुन बड़ गरीब रहए। ओकरा दूगो बेटा रहै आ कहुना-कहुनाकऽ चारि कट्ठा जमीन कमा-खटा कऽ किनलक। पछाइत बेमार पड़ि गेल। दू कट्ठा जमीन बेचि दुनू बेटा बाबूक इलाज करौलक, मुदा तेकर वावजूदो रामकिसुन नइ बँच सकल आ मरि गेल। गाममे सराधी भोजक प्रथा रहै तँए गामक मैनजन राम किसुनक दुनू बेटाकेँ- धनिया आ मनियाकेँ लगमे बजा कहलखिन-

"रौ धनिया आ मनिया, कथीक भोज करबीही? पुड़ी-जिलेबी आ रसगुल्लाक कऽ देही, बापकेँ स्वर्ग भेट जेतौ, बुझलिही?"

जेठ भाय- धनिया असमर्थता बतबैत मैनजनकेँ कहलकैन-

"यौ मैनजन साहब, केनाकऽ भोज करब, बाबूजी चलि गेला आ तैसंग जमीनो चलिये गेल। आब रहिये की गेल जे भोज करब।"

बजैत-बजैत धनिया कानए लगल। नोर पोछैत पुन: बाजल-

"भोज तँ खुशीक उपादान ने छी, खुशीसँ ने भोज खुआओल जाइत अछि। हमरापर तँ दुखक पहाड़े खसि पड़ल अछि।"

दुनू भाँइ कानि रहल छल। मैनजन पुन: बजला-

"रौ धनिया आ मनिया, भोज तँ दिऐयेटा पड़तौ। दू कट्ठा जमीन जे बँचि गेल छौ से बेच ले, नइ तँ हमरे दाए दे, भोज भऽ जेतौ।"

मनिया बाजल- "यौ मैनजन साहब, हम सभ केतए रहब आ केना जीयब?"

यौ समाजक करतार, ई उपराग नइ समझैक अछि। सराधी भोज केतेक उचित अछि? की मैनजन मानि गेल हेथिन? नइ। एकटा आर गामक बात सोझामे रखै छी। ओइ गाममे जन्मदिन अर्थात् बर्ड-डे मनबैक चलनसारि रहै, तँए धूमधामसँ मनौल जाइत रहइ। एहेन अवसरिपर लाखो रुपैआ तक सजावटेमे खर्च कऽ दइ छल आ भोज-भात अलगसँ। ओइ गाममे एगो धानुक परिवारमे एकटा लड़का इण्टर साईंसमे पढ़ैत रहए, जेकर बर्थ-डे लगिचा गेल रहइ। मध्यम वर्गीय परिवार अछि आ दिक्कते-सिक्कते परिवार चलैत आबि रहल छै। तेकर वावजूदो बेटाक 'बर्थ-डे' मनबैक लेल पचास हजार रुपैआक इस्टीमेट बनौलैन जइ खातिर किछु जीमन बेचवाक खगता पड़लै। बेटा जखन ई बात बुझलक तँ बाबूजीसँ कहलक-

"यौ बाबूजी, ई कोन खेला-मेला होइत अछि? बर्थ-डे'क नामपर पैसा बहौने जा रहल छी आ हमरा पढ़ाबै-लिखाबैसँ कतराइत रहै छी। हम पढ़ि लेब तँ वएह जन्म-दिनक सुगन्ध आ मिठगर फल होएत। जन्म-दिन मना कऽ कहू की हएत?"

मान्येवर, की बेटाक कहब अनुचित भेल? हमसभ जनै छी जे हर परिवारमे औसतन चारि-पाँच लड़का-लड़की अथवा बेटा-बेटी रहिते अछि तँ सबहक बर्थ-डे'पर साल भरिक खर्चाक हिसाब लगा लिअ। कमोक आकलन करब अर्थात् तीस हजार प्रति बेकती तँ पाँचक लेल एक लाख पच्चास हजार रुपैआ होइत अछि। ई केना सम्भव हएत? सभसँ तँ नहियेँ, आर्थिक विपन्नतासँ घेराएल निर्धन आ गरीब परिवारक लेल कोनो तरहेँ सम्भव नइ अछि। एना देखा-देखी कएलासँ जुटल परिवार टुटत आ टुटल परिवार आरो टुटत। सक्षम लोक वा बेकती अपना बेटीक बिआहमे दुल्हा पक्षकेँ कहने रहैन जे ऐ बटुआमे जेते सैरसो अछि, ओते बारात लेने आएब आ

चीज-वौस रखैले पाँचटा घर खाली सेहो राखि लेब। यौ आदरणीय पाठकगण, झोपड़ी महलक ऊँचाइ पकैड़ सकैत अछि, की सरिता समुद्रक मुकाबला कऽ सकैत अछि? 'देख विरानी चोपरी मत ललचावे जीभ' आ 'तेते पाँव पसारिये जेते लंबी सौर' एना किएक कहल गेल अछि? तँए कहब जे

"खुशीक घड़ीमे उत्सव मनाबू
दुखक घड़ीमे मातम मनाबू
धन-सेर अछि तँ पूजा-कर्म करू
नहि अछि तँ हाथो ने पसारू।"

किछु हुअ ई सभ विचारणीय प्रश्न छी।

रमेसर गुरुजी बड़ पैघ बेकती छला, सभ किछुसँ सम्पन्न छला आ खुशीक घड़ी सेहो रहैन तँ खूब खुओलखिन। जय-जयकार आ बेटा-पुतोहुकेँ हार्दिक शुभकामना लोक भरि मन देलैन।

समय-पक्षी पाँखि लगाकऽ उड़ैत गेल। रतनपुर जिलामे लक्ष्य कुमार 'तेजस्वी'क एस.पी. पदपर योगदान सेहो भऽ गेल। ओही जिलामे हुनकर पत्नी डी.एस.पी. सेहो छेली। दुनू परानीकेँ एक्के जिलामे एलासँ कभी-कभार मिलन भेनाइ तँ सोभाविके छल। ओना, तँ एस.पी. लक्ष्य कुमार 'तेजस्वी' रैंकमे सिनियर छला, मुदा सर्विसक दौड़मे विद्या कुमारी बेसी सिनियर आ अनुभवी छेली तँए लक्ष्य कुमार 'तेजस्वी'केँ अपना पत्नीसँ कार्य-प्रणालीमे सलाह लिअ पड़ै छेलैन।

आब सोमन पण्डित आ हुनकर पत्नी मंजुला लग चलू। बेटीक वियोगमे दुनू परानीमे बुझू मरैयेपर उतारू भेल पड़ल रहैथ। हाथ-पैर चलेनाइ छोड़ि देने रहैथ, तात्पर्य खेनाइ-पिनाइ खाना बनेनाइ- न बनाएब आ ने खाएब' सन बात भेल रहइ। दुनू परानीक हाल देखि

अड़ोसी-पड़ोसी सदिखन समझाबैत-बुझाबैत रहै छेलैन आ खाना सेहो खुआबैत रहैन। पड़ोसी तँ पडोसी होइत अछि जे अहाँक आगू-पाछू आ बगलमे रहैत अछि, झगड़ो करैत देरी नेइ आ मेलो करैत देरी नहि, बच्चे जकाँ सोभाव- “झगड़ा जिसके साथ करें, अगले ही पल फिर बात करें।”

पड़ोसी अहाँक छी आ अहाँ पड़ोसीक छिऐ, तँए पड़ोसी बना कऽ राखब उचित होएत।

सोमन पण्डित तँ कमोसम मुदा पत्नी मंजुला कखनो-कखनो हुदैक उठै छेली-

“गे रूपा, केतए गेलह।”

किछु लोक आ पड़ोसी सोमन पण्डितकेँ समझौलक जे अहाँ एना नइ करू, घर-परिवार लिए सोचू, वर्ना बरबाद भऽ जाएब, किछु-किछु करू। तैपर सोमन पण्डित कहै छेलखिन जे कि यौ सरकार, केकरा ले करब, परिवारे नइ, ने बेटा आ ने बेटी। पड़ोसी कहलैन जे कि पत्नी छहे, ओकरो समझाबह, खाह आ पीबह, हेराएल चीज भेट जाइ छै, ओइ शुभ दिनक इंतजार करह, जेना भिलनी सबरी रामक इंतजार केने रहथिन। आगू पड़ोसी रुपैआ दैत बाजल-

“सोमन ई टाका लएह आ एगो ठेला बनाबह आ फल-फलहरीक रोजगार करह, दुनू परानी फलो खाह, तुरंत देह आबि जेतह।”

सएह सोमन पण्डित केलखिन आ शनै:-शनै: दुनू परानी सामान्य भऽ गेला।

किछु बर्खक पछाइत बिरखा गैंग पुन: सक्रिय भऽ गेल आ इलाका भरिमे तबाही मचबए लगल। अपहरण, लूट, बलात्कार,

हत्या आदि दिन-दहारे हुअ लगल आ गेंग-रेपक वरदातक संख्या बढ़ि गेल। तैबीच एगो एहेन घटनो घटना रहै जे बिरखा गैंग जइ जुआन लड़कीकेँ रोडपरसँ उठाकऽ लऽ गेल रहै ओ लड़की टिशन पढ़िकऽ अबैत रहए, से एगो मंत्रीक क्वाटरक पाछू मृत भेटलैन आ जखन पोस्ट-मार्टम करौल गेल तँ गैंगरेप साबित भेल रहइ। ऐ घटनासँ पुलिस महकामा बेसी चिन्तित परन्तु चौकन्ना भेल रहए। डी.एस.पी. विद्या कुमारीक स्थानान्तर ओइ इलाकामे कएल गेल। तेकर वावजूदो बिरखा गैंग इलाकासँ दस जुआन लड़कीकेँ अपहरण करि लेलकै आ पुलिस महकामाकेँ चाइलेंज देलकै, मुदा बिरखा गैंगकेँ ई पता नइ रहै जे वएह विद्या कुमारी पुलिस अफसर आबि गेली हेन जे एकबेर बिरखा गैंगक डकैत आ अड्डाकेँ तहस-नहस केने रहथिन।

ऐ बेर एस.पी. अरुण लाल क स्थानपर लक्ष्य कुमार तेजस्वी रहथिन जे शनै:-शनै: कर्मठ आ तेज बनि गेल रहैन। एगो बैसार केलैन आ ऐ अभियानक नाम 'बौकी ऑपरेशन' राखि कमान डी.एस.पी. विद्या कुमारीकेँ सौंपि देलैन। 'बौकी ऑपरेशन' नामक सार्थकता ई रहै जे अपहृत लड़कीमे पाँचटा बौकीयो रहए। खाएर विद्या कुमारीक गुप्तचर आबि ई खबर देलक जे झंझारपुर रेलवेक कमलापुल होइत सुबह चारि बजे अन्हरगरे केशरिया आ भगवा रंगक गाड़ीसँ बदमाश लड़की सभकेँ लऽ जाएत।

ई खबर सुनि बौकी ऑपरेशनक टीम अर्थात् पाँच थानाक सक्रिय पुलिस बेसी सजग, सतर्क आ सक्रिय भऽ गेल। डी.एस.पी. विद्या कुमारीक निर्देशानुसार चिन्हित गाड़ी आ बदमाशकेँ कमला पुलेपर घेरबाक रहै, तँए चारि बजे भिनसरबासँ पहिनहि पुलक नकाबंदी कऽ लेलैन। निर्देश ई रहै जे जखन बदमाशक गाड़ी पुलपर औत आकि तखने हमला करि घेर लेब। सएह भेबो कएल।

बदमाशक ओ चिन्हित गाड़ी पुलपर घेरा गेल। कशगर मुठभेड़ हुअ लगल। नुकाएल आ छिपाएल डकैत सेहो आबि गेल। पुलिस अधिक संख्यामे रहए तँ डकैतो कम नइ रहए। घमाशान लड़ाइ हुअ लगलै। दुनू दिससँ आगिक गोली बरसए लगलै। पुलिसक गोली खाए-खाए केतेको डकैत कमला धारमे खसि मरि-मरि गेल आ बहियो गेल, मुदा पुलिस एकोटा नइ मरलै से केना कहि सकब, पुलिसो मरलै। ऐ तरहेँ भिड़न्त तगड़ा भेल रहइ। विद्या कुमारीक पिस्तौल तँ आगि नइ ज्वालामुखी जकाँ बरसैत रहल। विद्या कुमारी अप्पन जान हथेलीमे राखि डकैतक चक्रव्यूहमे फँसि गेल छल आ गैंगक सरदारकेँ खोजैत रहल। दोसर दिस बिरखा गैंगक सरदार बिरखा धन्नू सेहो डी.एस.पी. विद्या कुमारीक पाछू पड़ल रहै आकि जखन एगो डकैत बजलै-

“यौ सरदार, ओमहर नइ जाउ।”

ई सुनिते विद्या कुमारीक देह धधैक उठलै, जी लपलपाए लगलै आ काली जकाँ खून पीबैक लेल जेना मचलए लगलैन। मनमे घृणाक भाव अबिते गोली ठोकए लगलखिन-

“ठाँइऽऽ ठाँइऽऽ ठाँइऽऽऽ”

एगो गोली हाथमे, दोसर पैरमे आ तेसर कानक जड़िमे अर्थात् कनपट्टीमे लगल रहै, जइ कारणसँ सरदार पुलपर खसि पड़लै। विद्या कुमारी डकैतक चक्रव्यूहसँ बाहर अबैक प्रयास केलैन कि एगो डकैत हुनका बाँहिमे विषैला गोली मारि देलकैन। गोली लगिते विद्या कुमारीक मुहसँ निकललैन-

“हे भारत!”

‘हे भारत!’ बाजि उठली जेना बापूजी गोली लगिते ‘हे राम!’ बाजल छला। विद्या कुमारी दर्दकेँ नइ बर्दाश्त कऽ सकली आ पुलपर खसि पड़ली। तइ बखत गोट-पंगरा डकैत बँचि गेल रहइ। जे डकैत

विद्या कुमारीकेँ गाली मारने रहए, तेकरा इंस्पेक्टर आरती कुमारी गोली मारि धारमे खसौलक।

आरती कुमारी सेहो विद्या कुमारी जकाँ साहसिक आ कर्मठ छैथ, तँए हुनको प्रोन्नति होइत रहलैन। पछाइत शेष डकैत जे गोली विहीन भेल रहए, पकड़ा गेल गेल। गैंगक सरदार बिरखा धन्नू सेहो एस.पी. तेजस्वी इंस्पेक्टर आरती कुमारी आदि अन्य पुलिसकर्मीक साहसिक प्रयाससँ पकड़ा गेल। विद्या कुमारी पहिनहि ओइ सरदारक हाथ-पैरकेँ गोलीसँ चिथरा कऽ ओकरा पंगु बना देने रहैन तँए सरदार पकड़ा गेल। आब एस.पी.क नजैर विद्या कुमारी दिस गेलैन, जे पुलपर मरनासन्न हालतमे पड़ल छेली आ एना लागि रहल छल जेना कोनो शेरनी खून पीब आराममे हुअए। उठा-पुठाकऽ हुनका पहिने गंगपुर थाना आ पछाइत इलाजक लेल हॉस्पिटल लऽ गेल रहैन। ❑

5.

डी.एस.पी. विद्या कुमारी जिनगी आ मौतक बीच लटकल छेली। रतनपुर जिलाक समस्त जनता, प्रतिनिधि, अधिकारी आदि सभ लोकनि हुनक जानक लेल दुआ करै छेलखिन जे जल्दी ठीक होथि। चीता जकाँ छलांग लगबैवाली, गुण्डा-बदमाश आ डकैतक अड्डा उजाड़ैवाली 'हम छोड़ब नइ' कहि ठनका गिराबैवाली विद्या कुमारी मौतक डरसँ जंगमसँ स्थावर बनल छेली। समाजे कि सम्पूर्ण भारतमे मातम जेना दुख पसैर गेल रहै आ यज्ञ-जाप शुरू भऽ गेल रहइ। ओइ हॉस्पिटलक महिला डॉक्टर डॉ. पूनम बेसी खियाल राखि रहल छेली, ओ बोल-भरोसक बात बजली- "हम सुपर इलाजमे लागल छी।" ई कहि एस.पी. तेजस्वीकेँ बेसी बिसवास देलैन मुदा ओइ एस.पी.क मन खसल रहैन।

हॉस्पिटलक लगधक सभ डॉक्टर इलाजक ले पसेना बहबैत रहैथ। आशाक कोनो किरण नइ देखाइत रहैन। सभ लोक उदास रहैथ। पुन: डॉ. पूनम आबि आश्वासन दैत बजली-

"साए प्रतिशत बँचि जेती। हिनका ब्लड चढ़ौल जाए।"

डॉ. पूनमजीक ई तरीका सुनि सभ लोक चौंक उठला आ ब्लडक जोगारमे लागि गेलाह। डॉ. पूनमक अनुसार विद्या कुमारीक ब्लड ग्रुप ओ-पॉजिटिव रहइ, जेकरा दाता ब्लड कहल जाइत अछि, किएक तँ ई सभ ग्रुपबलाकेँ देल जाइत अछि, मुदा ओकरा तँ मात्र ओ पॉजिटिवे ब्लड चाही।

आब ब्लड ग्रुपक जाँच आ मिलान शुरू भेल। के एहेन हेता जे

एहेन देश-सेवी डी.एस.पी. विद्या कुमारीकेँ अप्पन खून नइ देता। तँए सभ तैयार रहैथ आ अप्पन-अप्पन वारीक इंतजार कऽ रहल छला। ओइ हॉस्पिटलमे उपस्थित सभकियो अप्पन-अप्पन खूनक जाँच करौलैन। जाँप रिर्पोट सेहो अबि गेल, मुदाब्लड ग्रुपक मिलान नेइ भेल। सभकियो पुन: चिन्तामे पड़ि गेला।

ई खबर सुनि आदर्श शिक्षक रमेसर गुरुजी सेहो अपना पत्नीक संग आबि गेला आ अप्पन पुतोहुक हालत देखि अप्पन-अप्पन ब्लड जाँच करौलैन मुदा मिलान नइ भेल। पेसेन्टक हात बेसी खराप होइत देखि डॉ. पूनम ब्लड बैंक दिस दौड़लैन। तइ बीच सोमन पण्डित सेहो अपना ससुरारिसँ पत्नीक संग ओही हॉस्पिटल एला। भीड़-भाड़ देखि हुनकर पत्नी मंजुला जिज्ञासा केलैन कि भीड़क कारण की छी। एगो नर्स सभ किछु बता देलकैन। ओकरा खूनमे जेना माइक ममता दौड़ए लगलैन, तहिना खून दइक लेल तैयार भऽ गेली। किएक तँ हर माइक हृदयमे माए बसैत अछि आ माइक संग ममता, छाँह जकाँ सेहो रहैत अछि, तँए कहलखिन-

“हमरो ब्लड चेक करू हमहूँ एहेन घटनाक साक्षी बनब आ अपनाक धन्य समझब।”

ओना तँ हॉस्पिटलक लोक आ स्टाफ ओकरा रोकैत रहैन, कम जे आंकैत रहैन मुदा ज्ञानी शिक्षक रमेसर गुरुजीकेँ अप्पन पुतोहुक लेल चिन्ता रहैन आ पढ़नौं रहैथ जे कि समयपर झुटकोसँ धैल फुटैत अछि। तँए जाँचक लेल ओकरा अर्थात् मंजुला देवीकेँ पठा देलकैन। जाँच भेल आ ब्लड ग्रुपक मिलान सेहो भऽ गेल। मिलानक खबरसँ आ ब्लड भेट गेल’क नारासँ हॉस्पिटल सुरमय भऽ गेल। डॉ. पूनम ओइ महिलाक ब्लड लऽ कऽ विद्या कुमारीकेँ ब्लड चढ़बए लगली। चमत्कारक खुश्बू आबए लगल। कुशल तेज आ

विशेष जानकार डॉ. पूनम अन्य डॉक्टरक सहयोगसँ सुपर इलाजकेँ आरो तेज केलैन। पछाइत खुशखबरी देलैन-

“डी.एस.पी. साहिबा आब खतरासँ बाहर आबि गेल छैथ। चिन्ताक कोनो बात नइ अछि।”

ई दिल-ए-खुश सूचना सुनि सबहक उदासी मनक चमनमे आनन्दक वयार बहए लगल आ एना महसूस भेल जेना मुरझाएल गाछ समुचित पानि पीबि पुन: हरियर भऽ गेल हुअए। निराशाक बगूर जकाँ बोनमे आशाक गुलाब खिल उठल हुअए। किछुकाल धरि पहिने जे आँखि नोर डबडबाएल, झहरए चाहैत रहए ओ जेना एकाएक थम्हि गेल। “पोछए गेलै तँ जेना चमैक उठलै तहिना मुरझाएल चेहरा दमैक उठलै।”

समुचित ब्लडकेँ शरीरक भीतर जाइते विद्या कुमारीक मुहसँ ‘हे भारत माँ’ निकललैन। पूरा हॉस्पिटलमे ‘हे भारत माँ’क नारा गूंजि उठल किएक तँ डॉ. पूनम आबि सभ बात बतौलक आ स्वयं नारा देने रहैन। मुदा हॉस्पटलक किछु लोक डॉ. पूनमसँ जिज्ञासा केलैन जे एहेन चमत्कार केना भेल। ई चमत्कार लाबैबला के भेला, केतएसँ एहेन फरिश्ता आएल? डॉ. पूनम सुन्दर उत्तर देलखिन-

“धरती फाड़ि फरिश्ता आएल।

जान बँचा धरतीमे समाएल।”

लोक अनुरोध केलैन जे कि हम सभ ओइ फरिश्ताकेँ देखब। डॉ. पूनम कहलखिन-

“धीरज राखै जाउ, समयपर देखि लेब। हमसभ डॉक्टर डी.एस.पी.क सुपर इलाजमे लगल छी।”

ई सुनि सभकियो शान्त भेला। ओइ हॉस्पिटलमे आ भीड़मे सोमन पण्डित हेराएले रहल। ओमहर अप्पन ब्लड देलासँ सोमन

पण्डितक पत्नी मंजुलाक हालत ठीक नइ रहैन, तँए हुनका एगो अलग बेडपर सुतौने रहैन। डॉ. पूनम आबि पुछलैन-

“आब केहेन मन लगैत अछि, बहिन? ठीक छी ने?”

मंजुला देवी बजली-

“हँ, डॉक्टर, हम तँ पूरा ठीक छी मुदा हुनका की भेलैन?”

डॉ. पूनम-

“डी.एस.पी. साहिब सेहो ठीक छथिन, अहाँक आशीर्वाद ने लगि गेलैन आकि दुआ आ ममता ने लगि गेलैन। बहिन, अहाँ डी.एस.पी.क माएसँ बढ़िकऽ हुनक माए ने भेलिऐ, नव जनम देलिऐ।”

ई सुनि मंजुलाक अप्पन हेराएल बेटी रूपाक यादि आबि गेलैन आ ओ अतीत दिस बढ़ि गेली आ अप्पन रूपाक बाल मनुहारी लीलाक दर्शन करए लगली। एकबेर रूपाक माए अँगनामे नइ रहैन, पाँच बर्खक रूपा अँगनामे असगरे रहए। रूपा माइक एगो पुरान आ फाटल साड़ी देखलक, ओकरा आर फाड़िकऽ छोट बनौलक आ राधा सन चुनरी बनाकऽ स्वयं राधा बनि ठुमकए लगल आकि तखैनिये ओकर माए आबि गेली। रूपाकेँ नाचैत देखि आ राधाक मनुहारी छवि देखि, अति सुखद अनुभूतिसँ आँखिमे नोर आबि गेल, तखैनिये सोझहामे आबि अप्पन नमहर बेटीकेँ प्यारसँ कोरामे उठा लेलक आ चुम्मासँ दुनू गाल आर लाल कऽ देलक। पछाइत गोदीसँ निच्चाँ रखलक तँ रूपा खिलखिला उठल...।

डॉ. पूनमकेँ पुन: पुछलापर ‘की बहिन की सोचै छी’ सुनिते अतीतक कड़ी टुटि जाइत अछि। डॉ. पूनमसँ मनमे अप्पन आएल बात साझा केलैन। साँचे, ओकरा आँखिमे आँसू आबि गेल रहैन जेकरा डॉ. पूनम पोछैत कहलैन- “बहिन, चिन्ता जुनि करू। जँ

हिनकर रूपा ऐ बसुन्धरापर जीवित हएत तँ भेट जाएत, हम जी-जानसँ मदैत करब। अहाँ धन्य छी।”

मंजुला देवी डॉ. पूनमक बात जेते जे किछु बुझने हुअए मुदा हॉस्पिटलमे खुशीक माहौल देखि कहलखिन- “सबहक बेटीकेँ अहिना हमर उमेर लागि जाउ।”

हॉस्पिटलक भीतर जे किछु होइत हुअए, परंच बाहरमे सोमन पण्डित अप्पन सुधंगता सोभावसँ चुप-चाप आ शान्त छला, जेना एहेन स्थिति देखि बौक भऽ गेल हुअए। यौ समाजक कर्णधार, अहूँ आ हमहूँ बेर-बेर बौका-बौकी बनि जाइत छी, जखन उचित बात कहल नइ होइए, बुझितो नइ बाजै छी, हम-अधिकारोक बेर संविधानक धारा बिसैर जाइ छी, जेना कोनो ऑफिसमे आ नेताक क्वाटरमे जाइ छी मुदा अप्पन समस्या नइ कहि पबै छी, तँ लोक कहबे ने करत- “बाहरमे चरफर आ भीतरमे बौक।” कहैबला तँ ‘बौकनाथ’ सेहो कहि दैत अछि। आब कहू, एहेन स्थितिमे बौक या बौकीक परिभाषा की भेल? बाघ बड़ भयानक जानवर होइत अछि जे मांसाहारी छी, जेकर पँजा चर्चित अछि तँए बाघ देखिते कोनो बेकतीक बोली बन्न भऽ जाइत अछि आ बग्जर लगि जाइ छै, तहिना विषधर साँपकेँ देखि केतेको लोकक बोली डरसँ मुहसँ नइ निकैल पबैत अछि किएक तँ ओकरा सप्जर लगि जाइत अछि।

गाममे जँ भयंकर आगि लगि जाइत अछि आ ओकरा पहिने-पहिने एहेन बेकती देखैत अछि जे देखिकऽ अबाक भऽ जाइत अछि, ओकरा मुहसँ बोली ने फुटैत अछि, जइ कारणसँ आगि समूचे गाममे पसैर जाइ अछि। आब कहू एहेन मौसमी बौका-बौकीकेँ समाज गामसँ भगा देत, आकि ढाठि देत, नइ ने? तेहने सोमन पण्डितक सोभाव छैन- सुगन्ध-सौम्य। डी.एस.पी. विद्या कुमारी

ठीक भऽ गेली। ई सुखद आ सुधासम खबर सुनि हॉस्पिटलक लोक जेना हुनका देखैले उताहुल भेला तहिना विद्या कुमारी सेहो अप्पन ओइ माएकेँ देखैले उत्सुक भेल छेली। डॉ. पूनम तँ बीच मिलनक पुल बनि स्थितिकेँ सम्हारने छेली, विद्या कुमारीकेँ लऽ कऽ ओइ चमत्कारी महिला लग जाइ छैथ। हुनका देखिते विद्या कुमारीक आँखि अनैच्छिक क्रियाक प्रभावमे आबि नोरा गेलैन। आ हुनकर पैरपर खसि नतमस्तक भेल छेली, दुनू करजोड़ि सोझहामे एना ठाढ़ छेली जे कोनो देवीक छवि बिम्बित हुअए आ कोनो भक्त-भक्तिनी भाव भक्तिसँ वन्दना करैत होइथ। बातो तँ सएह ने रहइ। जेना मान्य अछि जे देवी-देवताक कृपासँ लोकक जान बँचैत अछि, तहिना मंजुला देवीक कृपासँ विद्या कुमारीक जान बँचल रहैन जे विद्या कुमारीक जानि गेल छेली। तखैनिये बगलसँ गीत बाजि उठल-

“तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं जीवन दाता, जननी तुम्हीं हो...।” ऐ गीतक मर्म मंजुला देवी जे बुझने होइथ। एक दिस विद्या कुमारी ओइ साक्षात् देवीक वन्दना करै छथिन दोसर दिस ओ मानस देवी अचरजमे डुमि कल्पना करै छथिन जे आइ हमरा लोक किएक एतेक इज्जत करैत अछि। कनी हम अप्पन खूनेटा ने देलिऐ, आर तँ किछु ने देलिऐ। ई तँ हमर कर्तव्य रहै आ मनुक्खक फर्ज छी। कल्पनाक दुनियाँसँ बाहर निकैल डी.एस.पी. विद्या कुमारीकेँ आशीर्वाद दैत कहै छथिन-

“भगवान अहाँक भला करथिन, बेटी। हम तँ उपादान भेलौं आ भगवान तँ महान छैथ।”

ई अमृतवाणी आ नि:स्वार्थी हितकारी वचन कहि मंजुला देवी अपना अँचरासँ विद्या कुमारीक नोर पोछए लगलखिन। सभकियो ई मार्मिक लीला देखि रहल छला, जेना ममतासँ सन्हाएल एगो माए

होथि आ मातृवत्सल्य प्रेमक डोरिसँ बन्हाएल एगो बेटी होथि। एहेन सिनेहासिक्त छवि देखि दर्शकगण जे सोचैत होथि से तँ हुनकर काज भेलैन, मुदा ऐठाम एगो माए अप्पन हेराएल बेटीक लेल आ तहिना एगो बेटी अप्पन बिछुड़ल माइक लेल अबस्स सोचि रहल छेली। खाएर जे हुअए। ओइ हॉस्पिटलमे चमत्कार आ धमाका सन भेल जखन ओ देवी अर्थात् मंजुला देवी विद्या कुमारीक आँखि पोछिते-पोछिते अचानक कसिकऽ पकैड़ लेलखिन आ अपना छातीसँ सटा जोरसँ चिल्लाए लगली-

"गे बेटी, तूहीं हमर रूपा बेटी छँह। रूपा बेटी...।"

ई कहि हुचैक-हुचैक कऽ दुनू गोरे कानए लगली। ई दृश्य देखि लोक जेना अचरजक जलधिमे उगए आ डुमए लगला तहिना विद्या कुमारीकेँ सेहो भेल। ओइ चमत्कारी देवीक मानसिक संतुलन बिगड़ैक अन्देसा मानि लोक अलग करैक प्रयास करए लगल, मुदा सफलता नइ भेटैत रहैन। विद्या कुमारी सेहो तहिना चिपैक गेल रहथिन जेना ओकर माइये होइथ।

हॉस्पिटलमे ऐ कारणेँ भीड़ बढ़ैत गेलइ। चहुबगली हल्ला सेहो भेलै। रमेसर गुरुजी आ हुनकर पत्नियो ओइठाम अबै छैथ। रमेसर गुरुजी देवीतुल्य ओइ महिलासँ अनुरोध करै छैन-

"देवी, अहाँ शान्त भऽ जाउ, गोहारि तँ कऽ देलिऐ, छोड़ि दियौ ऐ डी.एस.पी.केँ। अप्पन बात बाजू।"

ई अनुरोध सुनि महिला शान्त भऽ गेली आ तैसंग सभ लोक शान्त तँ भऽ गेला मुदा मनक हलचल नइ शान्त भेल। महिलामे हिम्मत आबि गेल रहै तँए बजली- "ई डी.एस.पी. हमरे बेटी छी, रूपा जे हेराए गेल छेली।"

ई सुनि ओइ हॉस्पिटलमे किछु देर धरि सन्नाटा पसैर गेल।

डी.एस.पी. विद्या कुमारीकेँ किछु ने फुरैत रहैन, जे बजन्ता लोक, से मूक भेल रहैथ आ जे गुण्डा-बदमाश देखि हनहनाइत रहै छेली से नि:शब्द भेल रहैथ।

तैबीच गुरुजी बजला- “डी.एस.पी.क नाम विद्या कुमारी छिऐ, रूपा नइ, अहाँ झूठ बजै छी। मनकेँ असथिर करू।”

महिला झट-दे बाजि उठली-

“नइ यौ सरकार, ई हमरे रूपा बेटी छी।”

बेर-बेर ‘रूपा’ आ ‘बेटी’ बजलासँ ओइठामक वातावरण किछु खास भऽ गेल जइ कारणेँ डी.एम. जगदीश लाल सेहो आबि गेलखिन। कलक्टर साहेबकेँ देखिते करजोड़ि मंजुलादेवी बजली-

“यौ कलक्टर साहेब, ई हमरे रूपा छी, जे बालेपनमे हेरा गेल रहए। आइ हमरा अँचरामे अमृतधारक सम्वेदना आबि गेल।”

भीड़क लोक सभ बाजल-

“यौ कलक्टर साहेब, ई तँ कोनो माइक ममताक निशानी छी। सबूतक ऐठाम जरूरत अछि।”

ई सुनि कतिपय देवी महिला बजली- “हम सबूतो दइ छी।”

तही बखत हुनक पति- सोमन पण्डित भीड़केँ चिरैत बढ़ि कलक्टर साहेब लग आबि बजला-

“यौ कलक्टर साहेब, जेना हमरा पत्नीक गरदैनपर लहसनक चेन्ह अछि तहिना हमरा बेटीक गरदैनपर सेहो रहै, जे सबूत हएत। देखल जाउ।”

ऐठाम हम स्पष्ट करए चाहै छी जे मंजुला देवी ओहिना नहि ने सबूतक बात बाजल छेली किएक तँ विद्या कुमारीक नोर पोछैतकाल हुनका गरदैनपर नमगर लहसन देखि लेने रहैथ। पछाइत कलक्टर

जगदीश लाल दुनू गोरेक गरदैनपर लहसनक मिलान केलखिन तँ गणितक भाषामे सर्वांगसम जकाँ मिलान भऽ गेल। एहेन दिव्य सबूत देखि सभकेँ चकबिदौर लागि गेलैन। आब कहू धमाका भेल आकि नइ? यौ दिव्य सबूतसँ दिव्य मिलनो तँ भइये गेल। जेना एगो माइकेँ हेराएल बेटी भेट गेल, तहिना एगो बेटीकेँ बिछुरल माए सेहो भेट गेल। कहू ऐठाम ऐ दृश्यक बिम्ब केना खींचब?

"गाए देखए लेड़ू केँ
लेड़ू देखए माए।
खुट्टासँ लेड़ू खुजि गेल
से भेटल आइ।
गाए होकरए लेड़ू ले
लेड़ू बजए माएऽ माएऽऽ
पाँचे डेग लेड़ू चलल
दस डेग ओकर माए।"

श्री मान कलक्टर साहेब सभ किछु जानि डी.एस.पी. विद्या कुमारीसँ पुछलखिन-

"आब अहाँ केनए जाएब? निर्णय लिअ।"

प्रत्युत्पन्नमती-सम्पन्ना विद्या कुमारी सुन्नर विचार बजली-

"सर, दुख आ सुखक संयोगसँ जीवन बनैत अछि। लड़कीक जीवन एकटा सरिता जकाँ होइत अछि जेकरा दूटा तट होइ छै- प्रथम नैहरा आ दोसर ससुरा, तैबीच ओकर जिनगी पानि जकाँ हिलकोर मारैत रहैत अछि, बड़ कठिन जिनगी आ कठिन परीक्षा। बेटीकेँ दुनू कुलक मर्यादा निमाहए पड़ैत अछि, लेकिन ईहो तँ कहले जाइ छै जे बेटी परक सम्पैत छी, किएक तँ एकदिन ओकरा अप्पन

बाबुलक घर छोड़ि अपना पियाक घर जाए पड़ैत अछि। जे ओकर अनुपम जीवन-अनुपम घर आ अनुपम संसार होइत अछि।”

तैबीच सभ किछु बुझि-सुझि कऽ एस.पी. लक्ष्य कुमार ‘तेजस्वी’ बजला- “सर, डी.एस.पी. विद्या कुमारी हमर धर्म पत्नी छी तैसंग हिनकर माए-बाबू हमर सासु-ससुर भेला, हम हिनका सभकेँ गोड़ लगै छिऐन आ संग-संग उपस्थित जनकेँ सेहो सादर नमन करै छिऐन। हम हिनका सभकेँ अपने ओइठाम राखब आ अप्पन माए-बाबू जकाँ सेवा-सुश्रुषा करैत रहब। ऐसँ हमरा पत्नी लेल दुनू कुलक दूरी छोट भऽ जाएत। आ दुनू कुलक मर्यादाकेँ निमाहैमे आसान सेहो भऽ जाएत।”

एस.पी. तेजस्वीक ई विचार सभकेँ हरखित कऽ देलक आ ताली ताशा जकाँ तड़तड़ाए गेल। पछाइत विद्या कुमारी मर्यादित ढंगसँ बजली-

“आब हम देशक ने बेटी भेलौं। भारत ने हमर माए भेली, तँए बेसी वतनकेँ ने सेवा करब। भारत माता की जय!”

विद्या कुमारीक मुहसँ ‘भारत माता की जय’ निकैलिते ‘भारत माता की जय’ गूंजि उठल। जय-जयकार मचि गेल, किछु कलाकार तँ थिरकए लगला।

कलक्टर साहेब, सोमन पण्डित दुनू परानीसँ सेहो सहमति मांगलैन-

“आब अहाँ सभ अप्पन-अप्पन विचार कहू, की उचित होएत?”

ई सुनि सोमन पण्डित करजोड़ि कहलैन जे कि हमर बेटी तँ भेट गेल आ तैसंग सुन्दर जमाइयो भेट गेला, यएह ने सभसँ बढ़िकऽ सहमति भेल। तहिना सोमनक पत्नी अप्पन सहमति दैत बजली-

“सर, बेटी तँ भेटिये गेल तैसंग की-की ने भेटल, जइसँ हम पछुलका दुख-बेथा बिसैर गेलू हेन, हमर बेटी बौकी छल जे आइ बजितो अछि, पहिने बजितो ने छल, बौक छल आ आइ डी.एस.पी. बनि भारतक सेवा करैत अछि। दानव सन दहेज-प्रथाक जुगमे लोक सुन्दर घर आ बर मुश्किलसँ खोजैत अछि, दहेजक बाजारमे लोक बिक जाइत अछि, तैठाम हमरा घर-बर बिना दहेजक भेट गेल हेन। हम केतेक भाग्यशाली छी से अपने बुझि गेल हएब। हमरा तँ आब आनन्दे-आनन्द अछि।”

सोमन पण्डित पुन: बजला-

“कलक्टर साहैब, एगो छोट निवेदन अछि जे हमरा बेटीक बोली दिआकऽ एहेन स्वरूप गढ़ैबला इंसानकेँ हम दर्शन करए चाहै छी।”

ई सुनिते आदर्श शिक्षक रमेसर गुरुजी एला आ सभटा बेथा-कथा सुना देलकैन। पछाइत सबहक सोझामे समधी-मिलन भेल, दोसर दिस समधीन-समधीनमे सेहो मिथिलाक संस्कृति अथवा रीति-रिवाज जकाँ मर्यादित हँसी-मजाक चलल। विद्या कुमारी आ लक्ष्य कुमार आदर्श बेटी आ आदर्श बेटाक भूमिकामे आबि सभकेँ सादर प्रणाम आ गोड़ लागि आसिरवाद लेलैन। तखन रमेसर गुरुजी दिससँ एगो हँसी-चौल भेल। गुरुजी हँसिकऽ बजला-

“आब हमर समधीन हमरे लग रहथिन..।”

बात समाप्तो ने भेल रहै कि तखनिये गीत बाजि उठलै- ‘समधिनिया सरऽ रऽऽऽ।’ ऐ तरहेँ हॉस्पिटलक वातावरण खुशीसँ भरि गेल।

जखन ‘बौकी ऑपरेशनमे’ पकड़ाएल बिरखा गैंगक सरदारक पहिचान शेरा शूटरक रूपमे भेल जे ‘बिरखा धन्नू’ नामसँ नुकाकऽ

गैंग चलबैत रहए आ जे कहियो गामक सरपंच सेहो छेलए, वएह ने विद्या कुमारीपर जुलूम बरसाबैत रहए। बिरखा गैंगक दहशत एतेक बढ़ि गेल रहै जे कि आम जनताक नीन हमराम कऽ देने रहै, तँए सरकार ओकरा पकड़ैक वास्ते पाँच लाखक इनाम घोषित केने छल। 'बौकी ऑपरेशन' द्वारा गैंगक डकैत आ सरदारो पकड़ाए गेल छेलए, जइसँ आश जगल जे फेनसँ अमन-चैन कायम रहत। ऐ 'बौकी ऑपरेशन'क मादे विजयश्री हाँसिल केनिहारि डी.एस.पी. विद्या कुमारीकेँ हुनकर जिबटपनपर डी.एस.पी.सँ एस.पी.मे प्रोन्नति कएल गेलैन। किछु मासक बाद जखन पनरह अगस्त यानी स्वतंत्रता दिवसक शुभ दिन आएल तँ महामहिम राष्ट्रपति द्वारा विद्या कुमारी 'भारत रत्न' सम्मानसँ सम्मानित भेली।

की बुझिलेए, श्रीमान्? जे विद्या कुमारी गामक लेल ढेपो नइ मानल जाइत रहए से आइ 'भारत-रत्न' बनि गेली। कर्मेव पूज्यते।❑

इति शुभम्।

❑❑❑
❑❑
❑

Notes